। ॐ शान्ति । **। ॐ शान्ति ।** **। ॐ शान्ति ।**

श्रीमत से सद्गति: मनुष्य-मत से दुर्गति

"नगाड़ा" नं. 1, ता. 1.1.79

श्रीमत क्या है:- आबू पर्वत पर ब्रह्मा मुख से चलाई गई शिवबाबा की प्रमाणित मुरलियों को ही श्रीमत कहा जावेगा। इस मुरली की भेंट में किसी दीदी, दादी, दादा आदि मनुष्यमात्र की वाणी को मनमत और मनुष्य-मत ही कहा जावेगा, क्योंकि कोई भी छाती ठोक कर नहीं कह सकता कि मैं पावन, श्रेष्ठाचारी देवता या भगवान-भगवती बन चुका हूँ। अतः स्पष्ट है कि सबके सब नम्बरवार पतित और भ्रष्ट हैं। भ्रष्ट मनुष्यों की मत अर्थात् डायरैक्शन पर चलने वाले भ्रष्ट ही बनेंगे। इसलिए शिवबाबा ने सावधान किया है "कोई भी देहधारी को गुरू न बनाओ।" (मु.ता.3.4.75 पृ.2) "क्योंकि परमपिता की ही श्रेष्ठ मत है, और सबकी है आसुरी मत। बाप है अकेला सत्य" (मु.ता.3.5.70) "और कोई की मत ली तो धोखा खाया। और सभी की है कुमत उनसे कुमत ही बनेंगे।" (मु.ता.2.4.73) "श्रीमत है ही एक परमपिता परमात्मा की। बाकी सभी की है आसुरी मत, जिससे असुर ही बनते हैं।" (मु.ता.2.6.73 पृ.3) "शूद्रकुल में है मनुष्य मत ब्राह्मण कुल में है ईश्वरीय मत" (मु.ता.25.6.74) अव्यक्त बाबा ने कहा है :–"कहीं-2 श्रीमत शब्द कॉमन रीति प्रयोग करते हैं। वास्तव में बापदादा द्वारा बच्चों प्रति डायरैक्ट उच्चारे हुए महावाक्य ही श्रीमत हैं, जो बापदादा की डायरैक्ट मुरलियों द्वारा अब भी रोज़ मिलते रहते हैं। बाकी आत्माओं की आत्माओं के प्रति शुभ राय कहेंगे, न कि श्रीमत? इसलिए छोटे-बड़े भाई-बहनों द्वारा मिली हुई राय को श्रीमत कहना श्रीमत के महत्व को कम करना है।"

उन शूद्रकुमार-कुमारियों का बड़ा भारी दुर्भाग्य है, जो संगमयुगी लास्ट जन्म के अल्पकालीन पद मान-मर्तबा और सुख-साधन-सामग्री के मोहान्धकार में फँसने के कारण, ईश्वरीय वाणी की भी अवहेलना करके देहधारियों के डायरेक्शन्स पर चलने के लिए मजबूर हैं। यहाँ तक कि कैदियों की तरह उन बेचारों को किसी व्यक्ति विशेष से मिलने पर, बातचीत करने, या पत्र-व्यवहार करने की इज़ाज़त नहीं। (संगमयुगी ब्राह्मणों की दुनियाँ में) महाभारत-प्रसिद्ध जरासिधी, अर्थात् पुराने सिधियों की जेल का साक्षात् पार्ट चल रहा है। यह उसी कल्पपूर्व की यादगार है, जबकि आज से ठीक ठीक 5000 वर्ष पहले भी 16000 राजेरानियाँ इन्हीं जरा-जीर्ण-पुराने सिधियों के आधीन बन पड़े थे। कल्प पूर्व भी (आधीन) बने थे, कोई नई बात नहीं। कल्प-2 आधीन बनते रहेंगे, और जरासिधियों के पार्ट भी इसी तरह खुलते रहेंगे, क्योंकि बाबा ने कहा है "अंत में सबके पार्ट खुल जावेंगे। मेरे सूर्यवंशी वरसे के अधिकारी श्रीमत के अलावा और किसी के आधीन नहीं।" (अ.वा.ता. 24.1.70 अ.) "किसी व्यक्ति (अर्थात् दीदी-दादी-दादा आदि) या वैभव के आधीन रहने वाली आत्मा सर्वाधिकारी नहीं बन सकती। (5.3.73 अ.) "आधीन न होना-अर्थात् शेर व शेरनी की चाल चलना।" (अ.वा.ता. 23.4.73 पृ.2)

ध्यान रहे कि बाबा ने कभी किसी बहन-भाई को डायरैक्शन देने के लिए निमित्त नहीं बनाया, क्योंकि इस सृष्टि रूपी रंगमंच का एकमात्र डायरैक्टर शिवबाबा ही है। हम सब बच्चों को उसी डायरैक्टर के डायरैक्शन पर चलना है। किसी देहधारी के इशारों पर नहीं। कोई देहधारी डायरैक्टर वा सद्+गुरू बनने की जुर्रत भी न करे। बाबा ने

दीदी-दादियों या दादाओं को यज्ञ और यज्ञवत्सों के प्रति सेवाधारी बनने के लिए निमित्त बनाया था। संगमयुग में राजाई चलाने या शासक या शासिका बनकर बैठने के लिए निमित्त नहीं बनाया था। बाबा ने कहा है:- "कई बच्चों में तो बड़ा ही देहअभिमान है। उन्हों को तो जैसे यहाँ ही राजाई चाहिए। बाप तो कहते हम सर्वेंट हूँ, परन्तु बच्चों में देहअभिमान आने से गिर पड़ते हैं।" (ता.5.5.73) "सेंटर पर किसको भी राजाई पर नहीं बैठना है।" (4.10.73)

मालूम रहे कि "मुख्य प्रशासिका" या "सह प्रशासिका" जैसे टाइटिल भी बापदादा के दिए हुए नहीं हैं; बल्कि बापदादा की अवहेलना करने वाले किसी अविचारवान व्यक्ति द्वारा देहधारियों की गई चापलूसी मात्र हैं; क्योंकि अ.बापदादा ने पहली अ.वाणी 21.1.69 के पृष्ठ 3 की 3-4 पंक्तियों में दीदी (मनमोहिनी) को यज्ञ-सेवा की देख-रेख के लिए प्रमुख बनाया था जबकि कुमारका दादी को हेड ऑफिस में होने वाली लिखापढ़ी में सहयोगी मात्र। (अर्थात् सहायक क्लर्क की तरह) नियुक्त किया था।

प्रश्न उठता है कि साकार बाबा की अनुपस्थिति में हम ब्रह्माकुमार-कुमारियों को किसके डायरैक्शन पर चलना चाहिए? इसका सीधा जवाब है-- मुरली के डायरैक्शन पर। क्योंकि (प्रमाणित) मुरली ही हमारी लाठी है, जिसके आधार से हमें चलना है। तभी तो 20.5.77 पृ.1 की वाणी में बाबा ने कहा है- "**मुरली द्वारा सर्व समस्याओं का हल मिल सकता है।**" साफ है कि व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिए भी किसी देहधारी गुरू के पास धक्के खाने की दरकार नहीं। अतः बाबा ने 2.6.73 की वाणी में कहा था " जो (देहधारी गुरुओं के) धक्के खाते हैं वे मुझे नहीं जानते। --उनको पता नहीं है कि बाप (मुरली की पढ़ाई) पढ़ाकर वर्सा दे रहे हैं।"

बाबा ने 19.9.73 पृ.3 की मुरली में कहा था- "इन (देहधारी) गुरुओं ने तो सत्यानाश कर दी है। एक गुरु (ब्रह्मा) मर गया, फिर जो गुरु गद्दी पर बैठा है : उसी को गुरु कर लेते हैं। (अर्थात् उन्हीं की मत पर चल पड़ते हैं); यहाँ (ज्ञानमार्ग) में तो एक (शिव भगवान) ही सद्गुरू हैं।" "यहाँ कोई साधु-संत आदि नहीं, जिनकी गद्दी चली आई है। यहाँ तो शिवबाबा की गद्दी है। ऐसे नहीं यह (ब्रह्मा) जाएगा, तो दूसरा कोई गद्दी पर बैठेगा।" (20.5.77 पृ.3)

बाबा ने 24.8.74 की वाणी में कहा है-"दुर्गति कौन करता है? ज़रूर यह गुरू लोग ही।" अतः इन देहधारी गद्दीनशीन गुरुओं से भी सावधान। इनकी सुनाई हुई बातों अथवा डायरैक्शन्स पर बिना विचारे, अंधश्रद्धा-अंधविश्वासपूर्वक अमल करने की भूल कभी नहीं करना। क्योंकि बाबा ने हमें खुद सावधान किया है- "ब्रह्माकुमारी की भी जो मत मिले, उसे भी (मुरली से) जज करना है कि राइट हैं या राँग।" (मु.ता.31.1.70) "तुम बच्चों को भी सुनी-सुनाई बातों पर कभी विश्वास न करना है। धूतियाँ ऐसे खराब काम करती हैं, कि झूठी बातें सुनाकर औरों की दिल ही खराब कर देती हैं।" (मु.ता.18.4.74) "भारतवासियों ने सुनी-सुनाई बातों से ही दुर्गति पाई है।" (मु.ता.30.1.71)

अब संगमयुग में होने वाली दुर्गति अर्थात् नीचा पद पाने की गंदी शूटिंग से हमें अपने को बचाना है। नहीं तो ध्यान रहे, कि "अहो प्रभु तेरी लीला" का पश्चाताप करने वालों की लाइन का श्रीगणेश बाप की वाणी पर अमल न

करने वाले शूद्रकुमारी-कुमारियों से ही होगा। क्योंकि (ब्रह्मा) मुखवंशावली (ब्राहमण) है तो जो (शिव) बाबा (ब्रह्मा-) मुख से कहें वह मानना पड़े। (मु.ता.8.10.73)

ओमक्रान्तिः। ओमशान्तिः

नगाड़ा नं. 2 **परम+आत्मा-प्रत्यक्षता बॉम्ब ॥ ट्रा. ॥** **ता. 18.1.79**

[दिल्ली में सन् 76 से]

बापदादा का वण्डरफुल नया पार्ट - धर्मराज शंकर प्रलयंकर

(1) दिल्ली में शिवबाबा का वण्डरफुल नया पार्ट :-

अव्यक्त बाप दादा ने अभी पिछले वर्ष ही 18 जन.78 की अ.वाणी में स्पष्ट घोषणा की थी • "बापदादा कब प्रत्यक्ष दिखाई देते, कब पर्दे के अंदर छिपा हुआ दिखाई देते। लेकिन बापदादा सदा (ज्ञानी तू आत्मा) बच्चों के आगे प्रत्यक्ष हैं- बाबा चला गया- ऐसे कहकर अविनाशी सम्बन्ध को विनाशी क्यों बनाते हो? सिर्फ (ब्रह्मा से शंकर आदि ना. रूप में) पार्ट परिवर्तन हुआ है। जैसे आप लोग भी सेवा-स्थान चेन्ज करते हो ना। तो ब्रह्मा+बाप ने भी सेवा-स्थान (माउंट आबू मधुबन से दिल्ली राजधानी बनाने लिए) चेन्ज किया है।" 16.12.71 की मुरली में कहा था : • (दिल्ली के) "बिरला मन्दिर में भी लिखा हुआ है- भारत कब्रस्तान (अर्थात् अज्ञानी) था। फिर परिस्तान (ज्ञानपरियों का स्थान)-धर्मराज ने बनाया।" • " (धर्मराज ने) दिल्ली को परिस्तान बनाया।" (मु.ता.27.7.73) वास्तव में यह कल्पपूर्व के वर्तमानकालीन धर्मराज के पार्ट की यादगार है।

जिस राजधानी की स्थापना के साथ सन् 76 में विनाश की 10 वर्षीय घोषणा बाबा ने ब्रह्माकु. कु. से 1966 में कराई थी, वह कोई स्थूल रूप से सारी दुनिया की स्थापना और विनाश की बात नहीं थी, क्योंकि **बेहद का बाप बेहद के (ब्रह्मावत्स) बच्चों से बेहद की बातें करते हैं। उन बातों को हद की दुनिया में बुद्धि लगाने वाले बच्चे नहीं समझ सकते। वैसे भी दुनिया का हर कार्य सूक्ष्म में पूरा होने के बाद ही स्थूल में पूरा होता है।** जैसे मकान बनाने या बिगाड़ने की सूक्ष्म रूप रेखा पहले बुद्धि और फिर काग़ज़ में बनाते हैं, फिर बाद में स्थूल में बनाते हैं। तो यह सन् 76 से सम्पन्न होने वाली घोषणा भी ब्राह्मणों की ही सूक्ष्म संगमयुगी दुनिया की स्थापना और विनाश की घोषणा थी-जो अब प्रैक्टिकल में (आध्यात्मिक विद्यालय द्वारा) पूरी हो रही है अर्थात् दिल्ली में यमुना के कण्ठे पर, यानी यमुना किनारे के (शाहदरा-कृष्णानगर-चांदनी चौक-नावेल्टी-साउथ-ग्रीनपार्क-महरौली आदि) सेवाकेंद्रों के (ब्रह्माकुमार-कुमारी) भाई-बहनों के बुद्धि रूपी क्षेत्र में सत्यज्ञान अर्थात् सच्चखण्ड की स्थापना हो रही है, तो उनकी बुद्धि जय-जयकार के नारे भी लगा रही थी; जबकि दूसरी ओर विनाशकाले विपरीत बुद्धि (पांडव भवन M.आबू के) यादव-कौरव सम्प्रदाय में हा-हाकार भी हो रहा है। ब्राह्मणों की दुनियाँ में ही यह सब हो रहा है।

हम ब्राह्मणों ने जाने-अनजाने इसी धर्मराज बाप की प्रत्यक्षता की घोषणा के साथ बड़ी धूमधाम से सन्1976 में प्रत्यक्षता वर्ष भी मनाया था। क्या सन् 76 से पहले और बाद में कभी भी (बेहद के सदाशिव) बाप को प्रत्यक्ष करने की सर्विस नहीं हुई थी? सन् 76 में दिल्ली में जो विशेष बात हुई, उसका थोड़ा-बहुत आभास सब ब्राह्मणों को होना ही चाहिए; क्योंकि दिल्ली को दिल कहते हैं। हालांकि, दिल्ली के अन्दर प्रैक्टिकल में गुप्त पार्ट बजाने

वाले उस वंडरफुल बाप को हम दिल्ली निवासी ब्राह्मण भी ठीक रीति पहचान नहीं सके हैं। बाबा ने ता. 14.5.67 और 15.5.75 की मुरलियों में कहा भी है : • "शंकर का पार्ट वण्डरफुल है, जो तुम विश्वास कर न सको।"

ता. 11.10.75 की "अव्यक्त वाणी" पृष्ठ 170 में बाप को प्रैक्टिकल में गुप्त पार्ट बजाने वाला कहा गया है। ता. 9.9.75 की "अ.वाणी" पृ.99 में यहाँ तक कहा है : • "संगमयुग पर तक़दीर की रेखा परिवर्तित करने वाला बाप **सम्**+मुख पार्ट बजा रहे हैं।" इसीलिए 18.1.78 की अ.वाणी में बापदादा ने कहा था • (नं.वार एक-2 करके बाप की प्रैक्टिकल सहयोगी बनने वाली) "हज़ार भुजा वाले ब्रह्मा के रूप का वर्तमान समय पार्ट चल रहा है। तब तो साकार सृष्टि में इस (प्रैक्टिकल) रूप का गायन और यादगार है। भुजाएँ (रूपी बच्चे) बाप के बिना यह कर्तव्य नहीं कर सकतीं। भुजाएँ बाप को प्रत्यक्ष करा रही हैं। (साकार एडवांस पार्टी में) कराने वाला (साकार बाप) है, तब तो कर रहे हैं-(दूसरे) बच्चे जुदाई का पर्दा डाल देखते रहते हैं। फिर ढूँढ़ने में टाइम गँवाते हैं। हाजरा-हुजूर को भी छिपा देते। बहलाने की बातें नहीं सुना रहे हैं। और ही (बेसिक ज्ञान और एडवांस) सेवा की गति को तीव्र गति देने के लिए सिर्फ स्थान परिवर्तन किया है।" (कहाँ? M.आबू से दिल्ली में)।

अभी-अभी 26 दिसम्बर 78 को अ. बापदादा ने कहा था : • "देहली पर (यादव-कौरव-पाण्डव) सबको चढ़ाई करनी है...देहली की (चेतन) धरणी को प्रणाम ज़रूर करना है।...देहली की तरफ़ सभी की नज़र है। (साकार) बाप की भी नज़र है ...देहली से सेवा की प्रेरणा मिलनी चाहिए (M.आबू से नहीं)। जैसे सेंट्रल गवर्मेंट है, तो सेंटर द्वारा सर्व स्टेशन को डायरैक्शन मिलते हैं। -तो जैसे (राजधानी)-स्थापना में नं.वन देहली रही- वैसे देहली की धरणी सेवा को प्रत्यक्ष रूप देने के निमित्त है, तब देहली से आवाज़ निकलेगी। अभी सभी की बुद्धियों में यह संकल्प तक उत्पन्न हुआ है कि जो कुछ (यह प्रदर्शनी मेले-मलाखड़े कांफ्रेस आदि) कर रहे हैं, जो चल रहा है, उससे कुछ होना नहीं है, अभी सब सहारे टूटने लगे हैं। इसलिए ऐसे समय पर यथार्थ (साकार सो निराकार बाप का) सहारा अभी जल्दी ढूँढ़ेंगे। माँग करेंगे- ऐसी नई बात कोई सुनावें। और आखरीन में चारों तरफ़ भटकने के बाद (दिल्ली में) बाप के सहारे के आगे सब माथा झुकावेंगे। समझा! देहली वाले क्या करेंगे?"

(2) ब्रह्माकुमारी गुलज़ार में सिर्फ ब्रह्मा बाबा प्रवेश करते हैं; शिवबाबा नहीं :-

ध्यान रहे कि सन् 1969 से शिवबाबा ब्रह्माकुमारी गुलज़ार मोहिनी के तन में नहीं आते। सिर्फ ब्रह्मा बाबा की आकारी अर्थात् सूक्ष्म शरीरधारी आत्मा ही उनमें प्रवेश करती है। (i) अ.बापदादा ने कई बार कहा है कि बाप तो वानप्रस्थी अर्थात् वाणी से परे हो गया। जो वाणी से परे हो गया, वह फिर वाणी में कैसे आवेगा? (ii) 'बापदादा' शब्द का उच्चारण सिर्फ इसलिए किया जाता है कि हम बच्चों के मुक़ाबले ब्रह्मा बाबा अब भी बुद्धियोग से प्राय: शिवबाबा के साथ हैं। (iii) शिवबाबा का दिव्य जन्म अर्थात् दिव्य प्रवेश होता है-अर्थात् जिसके शरीर में प्रवेश करते हैं उस व्यक्ति को अपनी स्मृति रहती है। जैसे ब्रह्मा बाबा की आत्मा शिवबाबा की प्रवेशता के समय स्वयं भी मुरली सुनती थी। जबकि ब्र.कु.गुलज़ार को प्रवेशता के समय अपनी स्मृति नहीं रहती। उन्हें दुबारा मुरली पढ़नी पड़ती है। क्योंकि उस समय उनकी अपनी आत्मा, ब्रह्मा बाबा के सूक्ष्म शरीर के दबाव के कारण गुम अर्थात् अव्यक्त हो जाती है। ता.12.7.73 पृ.3 के मध्य में बाबा ने कहा भी है : • "घोस्ट भी आकर प्रवेश करते हैं, तो

वह आत्मा हुई न, (परमात्मा नहीं हुई, क्योंकि) घोस्ट अपना कर्तव्य करते हैं, तो उन(देहधारी)का पार्ट बन्द हो जाता है।" परंतु ज्ञानी होने के कारण ब्रह्मा की सोल घोस्ट अर्थात् भूत-प्रेतात्माओं की तरह ईविल पार्ट नहीं बजाती। (iv) शिवबाबा पतित तन में आते हैं। ब्र.कु.गुलज़ारमोहिनी तो आजन्म कुमारी रही हैं। कुमारी के पवित्र शरीर में ईश्वरीय नियमानुसार शिवबाबा की प्रवेशता सिद्ध नहीं होती। बाबा ने ता.15.10.69 पृ.2 की मुरली में कहा भी है : • (शिवबाबा) "पवित्र कन्या के तन में आवें? परंतु कायदा नहीं है। बाप, सो फिर कुमारी पर कैसे सवारी करेंगे?" • "एकदम (कामी) कांटे में बैठ शिक्षा देते हैं। प्रवेश भी काँटों में किया है -नं.वन काँटे में आकर उनको नं.वन फूल बनाता हूँ।" (26.2.74 पृ.2) भला बताइए-सन् 69 से नं.वन (व्यभिचारी कामी) काँटा कौन है? (v) शिवबाबा ने अपना मुकर्रर रथ प्रजापिता ब्रह्मा को बताया है। ता.8.1.75 को मुरली में कहा है • "यह मुकर्रर तन है। दूसरे कोई में (सदाकाल प्रत्यक्ष या व्यक्त रूप से) कब आते ही नहीं। हाँ, बच्चों में कब मम्मा, कब बाबा (बिंदु रूप स्टेज में) आ सकते हैं ।" • "बाप जब आते हैं तब कोई को पता पड़ता है क्या? (ब्रह्मा) बाबा को पता पड़ता है क्या? नहीं, पता भी नहीं पड़ता। (ता. 5.5.73 पृ.4) जबकि (मा.आबू के) मधुबन में (गुलज़ार दीदी में) सूक्ष्म शरीरधारी ब्रह्मा बाबा की प्रवेशता का सबको पता पड़ जाता है। क्योंकि उनकी बैठक नैन-चैन और मुख की आभा में परिवर्तन आ जाता है।

स्पष्ट है कि ब्र.कु.गुलज़ार मोहिनी द्वारा शिवबाबा धर्मराज बाप का पार्ट नहीं बजाते। हाँ, आर-प्यार और मार की तीन नीतियों में से जो बड़ी माँ के रूप में पार्ट बजाने वाले ब्रह्मा के प्यार से नहीं सुधर सके उन्हें इस आर अर्थात् अरई लगाने वाले अव्यक्त बापदादा के पार्ट की भी ज़रूरत थी। परंतु मोटी चमड़ी के जानवर अरई की परवाह नहीं करते। मोटी बुद्धि (रूपी चमड़ी) होने से उन्हें पता भी नहीं चलता कि हमारे (में) अरई लगाई जा रही है। उनके ऊपर फिर उबलते हुए (ज्ञान) जल की धाराएँ डालकर जैसे धर्मराज बाप के (ज्ञान) डंडों की पिटाई द्वारा (मनमानी बुद्धि रूपी) खाल ही उधेड़ दी जाती है। इसीलिए 16.12.76 पृ.1 की वाणी में बाबा ने हम बच्चों को सावधान भी किया था :- "अभी थोड़े समय में धर्मराज का प्रत्यक्ष रूप अनुभव करेंगे; क्योंकि अब अंतिम समय है।" • "सज़ाएँ भी सभी को इसी (संगमयुगी) दुनियाँ में खानी पड़ेंगी।" 15.9.70

(3) राम (बाप) की आत्मा ही यज्ञ के आदि में प्रजापिता और अंत में (सन् 1976 से) शंकर का पार्ट बजाती है :-

शिवबाबा ही प्रजापिता (रामबाप) और ब्रह्मा (उर्फ़ कलाबद्ध कृष्ण) की सोल द्वारा ज्ञानसूर्य बाप और ज्ञान-चंद्रमा ब्रह्मा अर्थात् बड़ी माँ के रूप से प्रत्यक्ष होते हैं। इसीलिए उस ज्योतिबिंदु को **"त्वमेव माता च पिता"** कहा जाता है। जन्म-मरण के चक्र में आने वाली 5-6 सौ करोड़ मनुष्यात्माओं के बीच सबसे पावरफुल अर्थात् परम मनुष्यात्मा आदम/एडम/अर्जुन को ही प्रजापिता कहा जाता है। ॐ मण्डली के उस प्रजापिता पियु में सबसे पहले प्रवेश करके (ता. 23.7.69 पृ.2) में शिवबाबा ने ब्रह्मा-सरस्वती के भी पार्ट को खोला था कि तुम ही (सतयुगादि के) राधा-कृष्ण की (16 कला) आत्माएँ हो। मम्मा से भी पहले यज्ञ माता कोई दूसरी थी। मम्मा बाद में आई थीं। इस तरह बड़ी माता-ब्रह्मा के भी बुद्धि रूपी पेट में ज्ञान का बीज डालने वाला व्यक्ति विवस्वत, गीता

4-1 सारी मनुष्य-सृष्टि का प्रजापिता, जगतपिता, विश्वनाथ या मानवमात्र का साकार परमपिता साबित हो जाता है। परम शब्द का अर्थ ही है- सबसे बड़ा। इसीलिए 2.2.78 की मुरली में कहा है : • **"बेहद के भी दो बाप हैं (एक शिव**बाबा**, दूसरा प्रजापिता) तो माँ भी ज़रूर दो (एक तो ब्रह्मा, दूसरी जगदम्बा सरस्वती)**।" • बेहद का साकार बाप प्रजापिता ब्रह्मा बिगर कोई होता नहीं।" बेहद 500 करोड़ को कहा जाता है। इतनी सब मनुष्यात्माएँ ब्रह्मा को बाप नहीं मानतीं। अतः बड़ी माता ब्रह्मा अर्थात् जगदम्बा के साकार स्वरूप को सिर्फ़ भारतवासी ही मानते हैं। सारे जगत या दूसरे धर्म के लोग नहीं मानते। यह ज्ञान-चंद्रमा-ब्रह्मा ही (हैं जो) 100 वर्ष की आयु पूरी होते-2 सम्पूर्ण बनकर, संगमयुग के अंतकाल में दूसरा जन्म लेने वाले उसी प्रजापिता की सोल-शंकर में प्राय: प्रवेश करता है। इसीलिए आज भी शास्त्रानुसार शंकर के माथे पर चंद्रमा दिखाया जाता है और उनका कोई साकार बाप या जन्म-स्थान भी नहीं दिखाया जाता। क्योंकि उस निराकारी स्टेज में स्थिर होने वाले के साकार शरीर आदिदेव द्वारा ही सब बापों (धर्मपिताओं) का बाप-शिवबाबा संसार में प्रत्यक्ष होता है।

10 और 28 मई, सन् 74 पृ.2 की मुरली के अनुसार (ज्ञान-) यज्ञ के शुरू (ॐ मंडली) में मम्मा-बाबा को भी साकार में कण्ट्रोल करने वाली, डायरैक्शन देने वाली, रूहानी ड्रिल कराने वाली, टीचर हो बैठने वाली आत्मा ही प्रजापिता थी; क्योंकि बाप ही माँ को कण्ट्रोल करने का अधिकारी है, बच्चे नहीं। ''जो आदि में हुआ सो अंत में होना है''-के नियमानुसार वह छुपा रुस्तम-प्रजापिता की सोल बाद में बच्चों के सामने खुलकर विश्व की बादशाही का वर्सा दिलाने के लिए प्रैक्टिकल में प्रत्यक्ष हो जाता है। इसलिए ता.1.3.76 और 25.3.76 की मुरलियों में बाबा ने स्पष्ट कहा था •"ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा ब्राह्मण कुल की रचना करते हैं। और प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्रह्माकुमार-कु. को वर्सा देते हैं। आदि में बीज बोने और अंत में वर्सा देने का पार्ट बाप का होता है, जबकि मध्य में जन्म देने, पालना करने, और प्यार देने का पार्ट माता (ब्रह्म+माँ) का होता है। (सहनशील) माता का पार्ट मम्मा-बाबा द्वारा बखूबी निभाया गया। परंतु अभी अंत में फिर उसी निराकार बाप से प्रीतिबुद्धि बच्चों को नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार विजय+अन्ते रूपी माला में संगमयुगी विश्व की बादशाही का अविनाशी वर्सा देने का महान् कार्य शिवबाबा को उसी प्रजापिता की सोल द्वारा इस जन्म में शंकर के नाम-रूप से सम्पन्न कराना है।

जैसे सतयुगी (16 कला) राधा-कृष्ण की आत्माएँ अपने संगमयुगी 84वें जन्म में ब्रह्मा-सरस्वती रूपी बेहद की माताओं के नाम-रूप से प्यार का पार्ट बजाती हैं, ठीक वैसे ही राम-सीता की आत्माएँ अपने अंतिम 84वें संगमयुगी जन्म में महाकाल और महाकाली रूपी शंकर-पार्वती के नाम-रूप से तांडव नृत्य करने वाले धर्मराज बाप का पार्ट बजाती है। ताड् धातु का अर्थ ही है- पिटाई करना। ज्ञानीजन ज्ञान-डंडे का प्रयोग करेंगे, और देहाभिमानी असुरों का काम है- बाहुबल का प्रयोग करना। जिसके पास जो प्रॉपर्टी होती है, उसे उसका नशा रहता है। ज्ञान-योगबल वाले विश्व की बादशाही पा जाते हैं, जबकि बाहुबल वाले गँवाते हैं। इसी आधार पर देव और असुर, कौरव और पांडव अथवा राम या रावण सम्प्रदाय के अलग-2 पार्ट भी खुल जाते हैं।

राम और राम-सम्प्रदाय की आत्माओं के बुद्धि रूपी तरकस में और पुरुषार्थ (वाले शरीर) रूपी धनुष में ज्ञान के अस्त्र-शस्त्र रूपी नुकीले बाण चलाने की अपूर्व क्षमता होगी। प्रजापिता का पार्ट बजाने वाली यह राम की

आत्मा ही यज्ञ के अंदर पूर्वजन्म में फेल हुई थी-अर्थात् शुरू में ड्रामा का ज्ञान न होने के कारण सबसे पहले शिवपिता से बिछुड़ गई थी। अतः बाप से न्यारे होने वाले उस सिकीलधे, सबसे बड़े, और अनन्य बच्चे को पूर्वजन्म की प्रारब्ध से इस दूसरी बार मिले ब्राह्मण जन्म में ऑटोमैटिक ज्ञान का तीर और पुरुषार्थ की कमान मिल जाती है। यह कोई त्रेतायुग में धनुष-बाण लेकर जन्म लेने की बात नहीं है। संगमयुगी प्रैक्टिकल पार्ट का गायन है। इसलिए वह आत्मा लास्ट में आने पर भी पूर्वजन्म की प्रारब्ध से फास्ट जाने के कारण अकेले योगबल से ही विश्व की बादशाही लेने की हाईजम्प लगाने में सफल हो जाती है।

चूँकि राम के इस संगमयुगी दूसरे जन्म के शरीर में प्रवेश करके ही बिंदु रूप निराकार राम (शिव) और फर्स्टक्लास सीता (ब्रह्मा) अर्थात् बाप+दादा प्रैक्टिकल में स्वर्ग की स्थापना कर दिखाते हैं, अतः सतयुग को **रामपुरी या रामराज्य** कहा जाता है (6.3.75 व 24.5.71) 'पतित-पावन सीताराम' या 'सर्व का सद्गति दाता राम' आदि गायन भी शंकर-पार्वती के नाम-रूप से पार्ट बजाने वाले इसी अंतिम 84वें जन्म के संगमयुगी शरीरों का ही गायन है। चौदह कला वाले त्रेतायुगी रामसीता का नहीं।

(4) सूक्ष्माकारी स्टेज में रहने वाला साकारी शंकर अवश्य है :-

बाकी रही शंकर के पार्ट की बात। वास्तव में शंकर की सोल का कोई पार्ट नहीं, क्योंकि कर्मणा या वाणी के द्वारा ही पार्ट बजाया जाता है। परंतु (प्राय:) शंकर को सदा याद में बैठा हुआ दिखाते हैं, कोई एक्टिविटी करते हुए नहीं दिखाते। वह तो सिर्फ़ योगबल से विश्व की बादशाही लेता है। उसके द्वारा विनाश की वाणी चलाने का पार्ट ब्रह्मा की सोल का है, जबकि बाक़ी बचे, ब्राह्मण-देवता-क्षत्रिय धर्म की राजधानी-स्थापना का पार्ट शिवबाबा का हैं-जो शंकर के शरीर द्वारा समय प्रति समय चलता रहता है। इस तरह शंकर का (कर्मणा-) पार्ट बेशक नहीं है, परंतु शंकर अवश्य है। बाबा ने 26.2.73 की वाणी में कहा था • "शंकर द्वारा विनाश होना है। वह भी (योगबल के मनसा वायब्रेशन से) अपना कर्तव्य कर रहे हैं। ज़रूर शंकर भी है तब तो साक्षात्कार होता है"

• "सूक्ष्मवतन-वासी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का भी (यादगार) मंदिर यहाँ है, क्योंकि आते तो हैं न।" ता.25.6.73। कहीं-2 शंकर के अस्तित्व को नक्कारने वालों से बाबा ने डायरैक्ट सवाल किया है : • "कुमारका! बताओ, शिवबाबा को कितने बच्चे हैं? कोई कहते 500 करोड़, कोई कहते एक ब्रह्मा बच्चा है। क्या शंकर बच्चा नहीं है? तब किसका बच्चा है? यह भी गुंजाइश है। मैं कहता हूँ शिवबाबा को दो बच्चे हैं क्योंकि ब्रह्मा, वह तो विष्णु बन जाते हैं। बाक़ी रहा शंकर। तो दो हुए ना। तुम शंकर को क्यों छोड़ देती हो?" • "वहाँ (अमरनाथ में) तो शिव का चित्र दिखाते हैं। अच्छा, शिव किसमें बैठा? शिव और शंकर दिखाते हैं। शिव ने शंकर में बैठ कथा सुनाई-ऐसा हिसाब हो जाता है।" (ता.6.10.76 पृ.3)

अकसर यह प्रश्न भी उठाया जाता है कि बाबा ने पहले से इस नए पार्ट के बारे में क्यों नहीं बताया? उसका सीधा और साफ़ जवाब यह है कि **इस यज्ञ में जो पूजनीय देवता बनने वाले होंगे, उन ब्राह्मणों को बाबा का इशारा ही काफ़ी होता है**, जबकि मनुष्य आत्माएँ कहने-सुनने से ही समझती हैं। और यज्ञ के अंदर रहकर भी विकर्म करके सौगुणा पाप का बोझा चढ़ाने वाली आसुरी स्टेज को पाई हुई आत्माएँ बार-2 कहने पर भी न सुनती

हैं, न समझती हैं और न मानती हैं। उन यादव वंशियों का तो धर्मराज शंकर ही मालिक है, क्योंकि बाबा ने शंकर को यादवों का हेड बताया है। साकार मुरलियों और अ.वाणियों में बापदादा के इस नए धर्मराज के पार्ट का स्पष्ट इशारा ब्राह्मण देवताओं को समय प्रति समय मिलता ही रहा है, जो इस प्रकार हैः-(1) "मैं थोड़े समय (अधिकतम 33 वर्ष) के लिए इनमें प्रवेश करता हूँ। यह ब्रह्मा तो पुरानी जूती है। पुरुष की एक स्त्री मर जाती है तो कहते हैं- पुरानी जूती गई। अभी फिर नई लेते हैं। यह भी पुराना तन है ना।" (ता. 15.7.74 और 11.7.70) यहाँ स्पष्ट है कि आगे चलकर नया नौजवान तन लेने का शिवबाबा का इरादा पहले से ही था।(2) "एक दिन टेलीविजन भी निकलेगा -देखेंगे बाबा मुरली चला रहे हैं। आवाज़ भी सुनेंगे।" (ता.23.8.73 पृ.3) साकार ब्रह्मा या गुल्ज़ार संदेशी के द्वारा अभी तक तो यह कार्य पूरा हुआ नहीं, और न ही कोई ऐसी मुरली पढ़ने सुनने में आई है जिसका टेलीविजन वालों ने मधुबन में चित्र लिया हो। लेकिन यह ईश्वरीय वाक्य है, तो किसी न किसी साकार तन द्वारा, संसार में बाप की प्रत्यक्षता होने पर यह कार्य भी जरूर संपन्न होना है, जो होगा। (3) "बाप (शिव) साकार से आकारी बना। निराकारी (बिंदु), फिर साकार बनेगा।" (ता. 15.9.74 "अव्यक्त वाणी" पृ. 131 के मध्य में) (4) ता. 11.1.75 पृ.3 के मध्य में कहा है • "यह तो शिवबाबा का रथ ही है (जो रथ) सारे वर्ल्ड को हैविन बनाने वाला है।" लखपति ब्रह्मा के रथ द्वारा तो सारी दुनिया हैविन बनी नहीं, तो ज़रूर किसी-न-किसी बैगरी शरीर रूपी रथ द्वारा ही यह कार्य सम्पन्न होगा, क्योंकि "फुल बैगर टू फुल प्रिन्स" तो शंकर जैसा मस्त कलंकीधर फ़क़ीर ही बनेगा। बाक़ी के लाख-करोड़-अरबपति तो मिट्टी में मिल जावेंगे।) (5) "घबड़ाओ मत! बैकबोन बापदादा सामना करने के लिए किसी भी व्यक्ति (व्यक्त तन) द्वारा समय पर प्रत्यक्ष हो ही जावेंगे। और अब भी हो रहे हैं।" (अव्यक्त वाणी पृ. 16, ता. 16.1.75)

पीठ पीछे पिलर के रूप में सदा लगी रहने वाली हड्डी को यहाँ ''बैकबोन बापदादा'' कहा गया है। कहते हैं ना- पिलर अर्थात् खंभ फाड़कर हिरण्याकश्यप रूपी दुश्मनों का सामना करने के लिए कल्प पहले भी भगवान प्रत्यक्ष हुए थे-सो अब भी कहा कि 'किसी भी' अर्थात् साधारण से साधारण व्यक्ति द्वारा समय आने पर प्रत्यक्ष हो ही जावेंगे। हालाँकि यज्ञ में आस्तीन के साँप बनकर घुसे बैठे दुश्मनों का सामना करने का यह ईश्वरीय कर्तव्य सन् 74/75 के उसी समय से चल रहा है जबकि अ. बापदादा ने कहा था कि "आगे चलकर बापदादा भी स्पष्ट चैलेंज देंगे, तब क्या कर सकेंगे?" इसीलिए सन् 75 की अ. वाणी में कहा कि अब भी प्रत्यक्ष हो रहे हैं। परंतु पहचानने की बात है। आगे चलकर बिल्कुल ही प्रत्यक्ष हो जावेंगे। ज्ञान चंद्रमा-ब्रह्मा भी धीरे-2 ही नं.वार को प्रत्यक्ष हुआ था। परंतु चंद्रमा के शीतल प्रकाश में कीड़े-मकोड़े भी पलते रहते हैं, जबकि ज्ञान सूर्य के तीक्ष्ण प्रकाश में वही कीड़े-मकोड़े तिलमिलाते हैं और तड़प-2 कर नष्ट हो जाते हैं। बलिहारी है उन पवित्र रहने वाले ऋषियों-मुनियों की जो फीके पड़ने वाले सितारों और छिपते हुए (ज्ञान) चंद्रमा की स्थिति को देखकर सूर्य निकलने से पहले ही पहचान लेते हैं कि इस दिशा से अर्थात् इस स्थान से, इतने समय बाद (ज्ञान) सूर्य प्रत्यक्ष होने वाला है। ऐसे ज्ञानीजन पहले से ही अज्ञान-निद्रा छोड़कर सूर्य के सम्मुख होकर अर्थात् प्रीतिबुद्धि होकर अमृतवेले का तीव्र पुरुषार्थ करने लग पड़ते हैं। सूर्य के प्रत्यक्ष होने के बाद तो सारी दुनिया ही जाग जाती है। उस समय हम बच्चों ने भी पहचाना तो क्या

बड़ी बात हुई। ज्ञान सूर्यवंशी बच्चे तो पहले से ही पहचान लेंगे।

ओमशांतिः ! ओमक्रांतिः !

शिवरात्रि सन् 79 ॥ॐ॥ परम+आत्मा-प्रत्यक्षता बॉम्ब ॥ ट्रा . ॥ नगाड़ा नं. 3

प्रजापिता की सोल-शंकर द्वारा, दिल्ली में डायरैक्ट त्रिमूर्ति शिव परमपिता

परम+आत्मा का विचित्र नया पार्ट चल रहा है

अभी इसी वर्ष अव्यक्त बाप-दादा ने ता.28.12.78 पृ.1 और 2 के मध्य में कहा है:- "लास्ट (ज्ञान) बॉम्ब-अर्थात् परमात्म-बॉम्ब है=बाप की प्रत्यक्षता का। जो देखे, जो (बाप के डायरैक्ट) सम्पर्क में आ करके सुने उन्हीं द्वारा यह आवाज़ निकले कि बाप आ गए हैं। डायरैक्ट ऑलमाइटी अथॉर्टी का कर्तव्य चल रहा है।" X "अंतिम पावरफुल बॉम्ब परमात्म-प्रत्यक्षता अभी शुरू नहीं की है.....सिखाने वाला डायरैक्ट ऑलमाइटी अथॉर्टी है, ज्ञानसूर्य साकार सृष्टि पर उदय हुआ है यह (बात) अभी गुप्त है (क्योंकि दूसरी ओर मधुबन में ज्ञान चंद्रमा-ब्रह्मा अभी तक अस्त नहीं हुआ).....इस अंतिम बॉम्ब द्वारा.....हरेक (ब्राह्मण) के बीच बाप प्रत्यक्ष होगा। (संगमयुगी) विश्व में विश्वपिता स्पष्ट दिखाई देगा।"

संगमयुग में ही विश्व महाराजन बनने वाले इसी विश्वपिता के लिए बाबा ने सन् 76 की अव्यक्त वाणी में कहा था "जब विश्वराजन बनेंगे तो विश्व (अर्थात् 500 करोड़) का बाप ही कहेंगे ना। विश्व के राजन विश्व के बाप हैं ना।" स्पष्ट है कि किसी ब्राह्मण बच्चे के द्वारा ही विश्वपिता दिखाई देगा। ता.28.9.74 की मुरली में कहा भी है "(ब्रह्मा की संतान) ब्राह्मण भी यहाँ ही हैं। जिनको ग्रेट-ग्रेट ग्रांड फादर भी कहा जाता है।" क्योंकि यज्ञ के शुरू में मम्मा-बाबा को भी डायरैक्शन देने वाली प्रजापिता की सोल ही दुबारा जन्म लेकर बैकबोन बापदादा अर्थात् डबल इंजन की प्रवेशता के कारण ऐसा निराकारी स्टेज वाला सम्पूर्ण ब्राह्मण बनती है जिसे संगमयुग में सब धर्मपिताएँ भिन्न नाम-रूप से प्रगट होकर आखरीन अपना बाप अर्थात् हैविनली ग्रांड फादर मान ही लेते हैं। इसलिए 23.1.79 पृ.3 के मध्य में अ.बापदादा ने कहा है "अनेक मत वाले सिर्फ़ एक बात को मान जाएँ कि हम सबका बाप एक है और वही अब (प्रैक्टिकली-डायरैक्ट) कार्य कर रहे हैं।" तभी तो 12.12.69 की मुरली में बाबा ने कहा था "आत्मा रूपी सूई की सारी कट उतरने पर (अर्थात् 1 सेकेण्ड में बिंदु रूप स्टेज में स्थिर अभ्यास होने पर) पिछाड़ी में डायरैक्ट बाप से सीखोगे।"

ता. 22.1.70 की मुरली में बाबा ने कहा था-"ज्ञानसूर्य के उदय होने पर सबकुछ स्पष्ट हो जावेगा।"अर्थात् मुरलियों के सारे ही गुह्य राज़ मुख्य-2 पार्टधारियों के पार्ट के साथ ही खुल जावेंगे जो अब सन् 76 से किसी निमित्त बने व्यक्ति शंकर द्वारा लगातार खुलते जा रहे हैं। इसीलिए ता.31.10.75 की 'अ.वाणी,' पृष्ठ 225 के अंत में बाबा ने कहा था "इस वर्ष कोई नई बात ज़रूर होनी है-सन् 76 में जिस (बाप की प्रत्यक्षता) का प्लैन बनाया है; लेकिन निमित्त बनना पड़ता है जो निमित्त बनता है उसका सारे ब्राह्मण कुल में नाम बाला होता है। यह भी प्राइज़ है।" (जिसकी घोषणा अ.बापदादा ने 'अ.वाणी' पृष्ठ 164 ता.23.9.73 में की है) और इसी वाणी में पृ.160-61 पर कहा है- **"अब यह लक्ष्य रखो कि सब मिलकर अपनी (दिल्ली) राजधानी पर विजय का झण्डा**

लहरावेंगे और सब पर विजय पावेंगे...अब यह रिजल्ट आउट होनी है-राख कौन बनते हैं और कितने बनते हैं और कोटों में से 1, लाखों में से एक कौन निकलते हैं-वह भी देखेंगे।"

'अ.वाणी' 4.2.76 जानबूझकर किताब में नहीं छापी गई है; क्योंकि इस वाणी के पृष्ठ 1 और 2 के अंत में बाबा ने (इस नए पार्ट के बारे में) स्पष्ट कहा था-"यह (सन् 76) विशेष वर्ष है जिसको (बाप की) प्रत्यक्षता वर्ष प्रसिद्ध किया है.....ड्रामा-अनुसार होगा वह तो ठीक है; लेकिन निमित्त कोई तो बनता है। जैसे (शुरू में यज्ञ की) स्थापना का पार्ट ड्रामा में था; लेकिन निमित्त ब्रह्मा बना ना। हिम्मत की, प्रैक्टिकल में आए निमित्त बने, तब सो हुआ। जैसे स्थापना के निमित्त साकार रूप में ब्रह्मा बने, ब्रह्मा तो अव्यक्त हो गए। अब साकार में विनाश कराने वाले कौन?"-इसका इशारा, अभी इसी वर्ष 1 जन.79 पृ.2 के मध्य में अ.बापदादा ने दीदी जी को इस प्रकार दिया है "ब्रह्मा के संकल्प से (ब्राह्मणों की) सृष्टि रची और ब्रह्मा के संकल्प से ही गेट खुलेगा। अब शंकर कौन हुआ? यह भी गुह्य रहस्य है। जब ब्रह्मा ही विष्णु है तो शंकर कौन? इस पर भी रूहरिहान करना।" बाप की प्रत्यक्षता का वर्ष सन् 76 पूरा होते ही दिल्ली के महरौली जैसे आश्रम में महा+रौला मचाने वाले किसी ऐसे ही महाविनाशकारी बच्चे की ओर पहले से ही स्पष्ट इशारा करते हुए ता.4.4.75 की मुरली में बाबा ने कहा था-"ऐसा कोई आश्रम सारे का सारा पलट पड़े तो सभी की आँख खुल जाए। बहुत समझते भी हैं-जबकि यह महाभारत लड़ाई है तो ज़रूर भगवान भी होना चाहिए।"

अभी 18 जन.79 पृ.1 और 2 पर भी बापदादा ने इस निमित्त बने नए पार्ट की ओर इशारा किया है "आज सभी बच्चे विशेष साकारी याद-प्रेम स्वरूप की स्मृति में ज़्यादा रहे। साकारी सो आकारी (अर्थात् साकार होते हुए भी आकारी अवस्था (वाला) बाप (आदि रतन ज्ञानी) बच्चों के नयनों में समाए हुए हैं।.....(परंतु) मैजॉरिटी (अज्ञानी) बच्चे बाप से पूछते हैं- हम सबसे पहले अकेले वतनवासी क्यों? ..... बाप बोले जैसे आदि में भी स्थापना के कार्य प्रति साकार रूप में निमित्त एक ही बने। अलफ की तार पहले एक को आई। सेवा-अर्थ सर्वस्व त्यागमूर्त एक अकेले बने-जिसको (सम्मुख) देख बच्चों ने फॉलो फादर किया।.....(वैसे ही) अब अंत में भी बच्चों को ऊँचा उठाने के लिए वा अव्यक्त बनाने के लिए बाप (अर्थात् प्रजापिता) को ही (जीते जी) अव्यक्तवतनवासी बनना पड़ा। इस साकारी दुनिया से ऊँचा स्थान अव्यक्त वतन (बुद्धियोग द्वारा) अपनाना पड़ा। अभी बाप कहते हैं बाप (प्रजापिता) समान स्वयं को और सेवा को सम्पन्न करो। (ब्रह्मा की तरह हार्टफेल होकर मरने की बात नहीं- देखिए 18.1.79 की दिनचर्या के मध्यांत में पृ.1 पर) बाप (प्रजापिता) समान (बुद्धियोग से जीते जी) अव्यक्त वतनवासी बन जाओ। यही बात 25.8.74 पृ.2 की मुरली में है "मरना कौन चाहते? (बुद्धि से) ऊपर जाना माना मरना, शरीर (भान) छोड़ना। यहाँ तो बाप ने कहा तुम इस शरीर को भूल जाओ। जीते जी मरना तुमको सिखाते हैं।" चूँकि सम्मुख देखकर फॉलो करने से सहज (योग) हो जाता है, अतः 6.9.75 'अ.वाणी' पृ.96 पर इसी साकारी सो आकारी अवस्था में सम्मुख पार्ट बजाने वाले बाप के लिए कहा है **"बाप सम्मुख आते, और बच्चे (धन-पद-मान-मर्तबे में) अलमस्त होने के कारण देखते हुए भी नहीं देखते। सुनते हुए भी नहीं सुनते।"**

18 जन. सन् 79 की अ.वाणी पृ.1 की अंतिम पंक्ति में भी साकारी बाप की वियोगी याद करने वाले बच्चों को कहा है "साकार स्नेह का रिटर्न साकार रूप (मौजूद) है"। सिर्फ़ उस बाप को और उसके वंडरफुल पार्ट की पहचानने की बात है। अतः इसी 18 जन. की वाणी में पृ.2 के मध्य में दीदी जी से अ.बापदादा ने कहा है "जैसे बाप विचित्र है, विचित्र बाप की लीला भी विचित्र है। दुनिया वाले समझते हैं बाप चले गए (बाहरी दुनिया वालों ने पहचाना ही नहीं था, अतः यहाँ संगमयुगी दुनिया वालों की ही बात है जो समझते हैं कि बाप अव्यक्तवतनवासी हो गए) और बाप बच्चों से जब चाहें तब विचित्र रूप में मिलन मना सकते। (संगमयुगी) दुनिया वालों की आँखों के आगे (अज्ञान का) पर्दा आ गया (क्योंकि बाहरी दुनिया वालों का पर्दा हटा ही कब था?), वैसे भी (प्रैक्टिकली पारिवारिक) स्नेह मिलन पर्दे के अंदर अच्छा होता है तो दुनिया की आँखों में पर्दा आ गया; लेकिन बाप (अपने आदि रतन) बच्चों से अलग नहीं हो सकता। वायदा है- साथ चलेंगे-वही वायदा याद है ना। जो आदि (में हुआ) सो अंत (में होना है)।" यहाँ फिर ब्राह्मण देवताओं को स्पष्ट इशारा दिया है कि जैसे शुरू में परमात्मा से प्रैक्टिकली सर्व सम्बंध जोड़ने के लिए खेल पाल हुए वैसे अब अंत में भी-पर्दा उठने वाला है-तमाशा होने वाला है। कोई हँसने वाला है-कोई रोने वाला है। इसीलिए तो ता. 7.12.72 की मुरली में कहा था **"पिछाड़ी में बहुत मज़े देखेंगे। शुरुआत से भी जास्ती।" X "जैसे तुम बच्चों को शुरुआत में बहलाया तो पिछाड़ी वालों का भी हक़ है।"** (ता.12.5.73) X ता. 23.7.77 पृ.1 की मुरली में कहा है- "शुरू-2 में जब बाबा आया, मकान तो छोटा ही था। मम्मा के कमरे से भी छोटा था। उसमें परमपिता परमात्मा ने आकर हॉस्पिटल अथवा यूनिवर्सिटी खोली। फिर धीरे-2 मकान बनते गए। पहले तो एक छोटी गली में मकान था। तो (बाप समान सम्पूर्ण ब्राह्मण) बच्चों का भी यही कर्तव्य है।" (क्योंकि आदि सो अंत)

चीफ जस्टिस धर्मराज का देहली दरबार-

अ.वाणी ता.26.5.77 पृ.3 के अनुसार "दिल्ली-दरबार कहते हैं। तो दिल्ली को अपना राज्य-दरबार बनाया है? राजाई तैयार हो गई है? दरबार में कौन बैठेंगे? दरबार में पहले तो महाराजा-महारानियाँ चाहिए.....दिल्ली वालों को राज्य का फाउंडेशन लगाना है।" X "अपने फ़रिश्ते-स्वरूप का अनावरण कब करेंगे? आप ही करेंगे, या चीफ गेस्ट (अर्थात् चीफ जस्टिस धर्मराज) को बुलाएँगे?" ('अ.वाणी' ता.2.2.76 पृ.33) बाप-दादा के महावाक्यों के अनुसार शिव परमात्मा का यह दिव्य कर्तव्य राजधानी-स्थापना के लिए दिल्ली में ही कहीं-न-कहीं अवश्य चल रहा है ताकि आदि रतन रूपी रुद्र और विजयमाला के बच्चों का बुद्धियोग, डायरैक्ट बाप से सर्वसम्बंध जोड़कर शीघ्र ही नष्टोमोहा के फाइनल पेपर में पास कराने के लिए, सहज खींचा जा सके। 29.11.78 पृ.2 की अ.वाणी के अनुसार "विशेष बॉम्बे और देहली में आदि रतन ज़्यादा हैं। विश्व-सेवा की स्थापना के कार्य में बॉम्बे और देहली का विशेष सहयोग है।" जबकि राजधानी देहली में स्थापना होनी है। अभी 26.12.78 की अ.वाणी में कहा भी है- "देहली का विशेष पार्ट राजधानी-स्थापना में और बॉम्बे का विशेष पार्ट विनाश में है।" चूँकि बाप स्वयं पहले राजधानी स्थापना करते हैं और बाद में विनाश स्वत: और शीघ्र ही हो जाता है; अतः दिल्ली में राजधानी जमाने के लिए धर्मराज बाप का वर्तमानकालीन पार्ट साबित हो जाता है; क्योंकि ब्रह्मा द्वारा यज्ञ-स्थापना

का कार्य तो उनकी 100 वर्ष आयु पूरी होने से समाप्त हुआ। 21.1.75 की 'अ.वाणी' (जो किताब में नहीं छापी गई है) में बाबा ने घोषणा की थी "अब सिर्फ़ महाविनाश को सम्पन्न करने की...अंतिम आहुति इस (ज्ञान-) यज्ञ की रही हुई है।"

बाबा ने ता.29.11.77 पृ.3 की मुरली में कहा था-"42वीं त्रिमूर्ति शिवजयंती होगी, तो बड़ी धूमधाम होगी। देहली जैसे गाँव (गीतापाठशाला) में ही धूमधाम हो सकती है।" [भक्तिमार्ग वाले जड़ चित्रों की धूमधाम करेंगे और विशेष प्रिय ज्ञानी तू आत्मा बच्चे शिव के चैतन्य चित्र का प्रदर्शन करेंगे] "मेला एक ही लगता है (कलह-कलेश काटने वाले बेहद) कलकत्ता (cal+cutta कल+कट्टा) में.....वह सागर जड़ है। दिल्ली में (चैतन्य ज्ञान सागर बाप) जावेंगे तो वहाँ भी सागर- ब्रह्मपुत्रा का (मिलन-)मेला (होना) है।" (ता. 25.6.73 पृ.2 के अंत में) X अभी ता. 26.2.78 पृ.2 व 3 पर बाप-दादा ने भी कहा है- "(बाप-प्रजापिता की) सम्पूर्णता और सम्पन्नता का झण्डा और राज्य का झण्डा दोनों देहली में होना है। तो देहली निवासी फ्लैग सेरीमनी की डेट फिक्स करें। अभी से तीव्र तैयारियाँ करने लग जाना है.....देहली पर सबको चढ़ाई करनी है। देहली की धरनी (माता) को प्रणाम ज़रूर करना है.....देहली के तरफ़ सभी की नज़र है। (विश्वपिता बनने वाले) बाप की भी नज़र है..... आखरीन में चारों तरफ़ भटकने के बाद बाप के सहारे के आगे सब माथा झुकावेंगे। समझा। देहली वालों को क्या करना है?"

अ.वाणी 24.1.70 पृ.4 पर कहा था "दिल्ली में कमाल कब करेंगे? दिल्ली का आवाज़ ही चारों ओर फैलता है। दिल्ली में नाम बाला होना (सारे) भारत में नाम बाला होता है। इतनी ज़िम्मेवारी दिल्ली वालों को उठानी है।" अ.वाणी 20.6.77 पृष्ठ-3 के अनुसार "दिल्ली को सबसे आगे जाना चाहिए। अगर इतने सब (विजयमाला के बीजरूप आदि रतन) विजयी हैं तो समझो दिल्ली पर विजय हो गई। दिल्ली के ऊपर विजय का नारा गूँजना अर्थात् विश्व के ऊपर नारा गूँजना। दिल्ली राजधानी तैयार तो विश्व तैयार। दिल्ली का परिवर्तन अर्थात् विश्व का परिवर्तन।" विश्व का परिवर्तन करने वाली इन्हीं विजयमाला की आदि रतन सर्वश्रेष्ठ आत्माओं से ता.5.12.78 पृ.2 पर अ.बापदादा ने कहा है "(इण्डिया गेट की यादगार दिल्ली में स्वर्ग का) गेट खोलने वाले कौन हैं? बाप अकेला कुछ नहीं करेगा। अकेला कब कुछ किया है क्या? अभी भी अकेले नहीं हैं (क्योंकि भुजाओं रूपी शिवशक्तियाँ तो साथ हैं ही)...वायदा क्या किया है? साथ रहेंगे, साथ चलेंगे, खावेंगे, पिएँगे- यह वायदा है ना। अभी वायदा बदल गया है क्या? अभी भी वही वायदा है, (देह रूपी मिट्टी के सिवाय कुछ भी) बदला नहीं है। .....साकार में तो कई प्रकार के (यज्ञ की पालना आदि अलौकिक परिवार के) बंधन थे। अभी तो निर्बंधन हैं (क्योंकि 'अ.वाणी' 13.6.73 पृ.96 की 18वीं पंक्ति के अनुसार लौकिक वा अलौकिक परिवार दोनों के बंधनों से स्वतंत्र बनना है अतः) अभी तो और ही तीव्र गति है। बाप को बुलाया और हाजरा हजूर...अभी साथ रहेंगे, साथ चलेंगे। सिर्फ़ आज क्यों? सदा (जन्म जन्मांतर) ही साथ चलेंगे। इसीलिए ता.7.12.78 पृ.2 के मध्यांत में बापदादा ने कहा है "यह जन्म-2 का साथ है। भविष्य में भी ब्रह्मा+(बड़ी माँ और प्रजापिता) बाप का तो साथ रहेगा न। **शिव बाप साक्षी हो जाएँगे और ब्रह्मा+बाप (अर्थात् रामकृष्ण की आत्माएँ) साथी हो जाएँगे।"**

दिल्ली की शक्ति-सेना द्वारा बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहराना शुरू :-

ता.23.8.77 पृ.3 की मुरली में शिवबाबा ने कहा था, "देहली से आवाज़ निकालनी चाहिए। वहाँ झट नाम होगा। (दिल्ली में नाम बाला होने के बीज तो सन्-76 में बाप की प्रत्यक्षता वर्ष में ही पड़ चुके थे) परंतु अजुन देरी दिखाई पड़ती है। अबलाओं-गणिकाओं को बाप कितना ऊँच आकर उठाते हैं। तुम ऐसे-2 का उद्धार जब करेंगे तब नाम बाला होगा।" + ता. 26.5.77 पृ.3 की अ.वाणी के अनुसार "दिल्ली वालों का, उसमें भी विशेष शक्ति सेना का विशेष गुण कौन-सा है? यज्ञ की स्थापना के कार्य में दिल्ली की शक्ति सेना का सुदामा मिसल जो चावल चपटी काम में आई है, वह बहुत महत्व के समय में काम आई है। दिल्ली की निमित्त सेवा अन्य सेवा स्थानों (अर्थात् सेवाकेंद्रों को स्वाधीन करने) के निमित्त एग्ज़ाम्पुल बनेगी । जैसे आदि में विशेषता दिखाई वैसे अब भी दिखाओ.....सबकी नज़र दिल्ली पर है।" अ.वाणी, 23.1.76 पृ.17 के अंत में कहा है "बापदादा का माताओं से आदि से विशेष स्नेह है। यज्ञ की स्थापना में भी विशेष किसका पार्ट रहा? निमित्त कौन बने? और अंत में भी (बाप की) प्रत्यक्षता और विजय (जय सियराम) का नारा लगाने में निमित्त कौन बनेंगे? माताएँ।" X 'अ.वाणी' 28.10.75 पृ.246 के अंत में कहा है "जैसे आदि स्थापना में ब्रह्मा रूप में सदैव (रचना रूपी बच्चा) श्रीकृष्ण दिखाई देता था ऐसे (ही अब अंत समय राजधानी की स्थापना में) शक्तियों द्वारा सर्वशक्तिवान (राजधानी का रचयिता और कृष्ण का बाप प्रजापिता) दिखाई दे। ऐसा अनुभव हो रहा है ना?" X अभी 7.12.78 पृष्ठ-2 पर अ.बापदादा ने कहा है- "शक्ति सेना को बापदादा विशेष चढ़ती कला का सहयोग देते हैं; क्योंकि शक्तियों को, माताओं को सबने नीचे गिराया है। अब बाप आ करके ऊँचा उठाते हैं। अपने से भी आगे शक्तियों को रखते हैं।"

अब फिर से डायरैक्ट बाप द्वारा घर बैठे प्रैक्टिकली सर्व सम्बंधों की भासना का आरम्भ :-

(i) **डायरैक्ट बाप मिला** :- 'अव्यक्त वाणी' 23.1.76 पृ.22 में कहा गया है "जब डायरैक्ट (बाप का) साथ निवाहने का वायदा है तो वायदा का फ़ायदा उठाओ। इस समय दो बाप (शिव और प्रजापिता) के साथ (अव्यक्त में नहीं;) व्यक्तिगत अनुभव हो सकता है। फिर सारे कल्प में नहीं होगा।" इसी तरह ता.12.1.79 पृ.3 के लास्ट में बेहद का नाटक करने वाले कर्नाटक जोन वालों से अ.बापदादा ने कहा है "आप श्रेष्ठ आत्माएँ ज्ञान सागर बाप द्वारा डायरैक्ट सर्व प्राप्ति करने वाली हो.....और जो भी आत्माएँ हैं वह (सतयुग में नं.वार ल.ना. बनने वाली) श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा कुछ-न-कुछ प्राप्ति करती हैं; लेकिन आप डायरैक्ट बाप द्वारा सर्व प्राप्ति करने वाली हो।" दिल्ली में स्थापन होने वाले गार्डन ऑफ अल्लाह के फूलों की डायरैक्ट बाप द्वारा परवरिश का ज़िक्र करते हुए अ. 1.2.79 पृ.3 के अंत में कहा है "हम किस बागवान के बगीचे के फूल हैं? डायरैक्ट बाप फूलों को स्नेह का पानी दे रहे हैं। तो कितने लकी हो गए?"

(ii) **घर बैठे भगवान मिला**- घर बैठे ही जिन आदि रत्नों ने ज्ञान सागर बाप से ज्ञान रतनों का थाल ले लिया- ऐसे बेहद के ऑस्ट्रेलिया (आस्=बैठना+ट्रे=थाल) वालों से अव्यक्त बापदादा ने ता. 8.1.79 पृ.3 के अंत में कहा है "चारों ओर से यह आवाज़ निकले कि हमारा बाप गुप्त वेष में आ गया है, (चला गया नहीं;)। जैसे बाप ने आप (बीजरूप आदि रतन पाँच पांडवों) को गुप्त से प्रत्यक्ष किया, वैसे आप सबको फिर बाप को प्रत्यक्ष करना है। सर्व

शक्तियाँ मिलकर सहयोग देंगी"। अ.3.2.79 पृ.4 पर कहा है- "कितनी बड़ी लॉटरी मिलती है?.....घर बैठे इतनी प्राप्ति है। घर बैठे भगवान मिल गया ना। तो अपने भाग्य की सदा महिमा करते रहो.....संगमयुग पर विशेष प्राप्ति बाप से मिलन मनाने की है।" X "कोटों में कोई और कोई में कोई यह हम (बीजरूप) आत्माओं का गायन है; क्योंकि साधारण रूप में आए हुए बाप को और बाप के कर्तव्य को जानना यह कोटों में कोई का पार्ट है। जान लिया, मान लिया और पा लिया जब विश्व (500 करोड़) का मालिक अपना हो गया (शिव पिता विश्व का मालिक नहीं बनता) तो विश्व अपनी हो ही गई ना। जैसे (मनुष्य-सृष्टि का) बीज (प्रजापिता) अपने हाथ में है तो वृक्ष तो है ही ना। जिसको ढूँढ़ते थे उसको पा लिया। घर बैठे भगवान मिला तो कितनी खुशी होनी चाहिए?.....बाप ने स्वयं आकर अपना बनाया.....जो स्वप्न में नहीं था वह प्राप्ति हो गई। बाप मिला सब-कुछ मिला।" (अ.17.1.78 पृ.2)

(iii) **प्रैक्टिकल सर्व सम्बंधों की भासना का समय चल रहा है** :- ता.23.1.79 पृ.2 की अ.वाणी में कहा है "सर्व सम्बंध निभाने वाले परम+आत्मा को अपना बना लिया। जब चाहो, जैसा सम्बंध चाहो, वैसा ही सम्बंध का रस एक द्वारा सदा निभा सकते हो और सम्बंध भी ऐसे जो देने वाले होंगे, लेने वाले नहीं। कभी धोखा भी नहीं देने वाले। सदा प्रीति की रीति निभाने वाले। ऐसे (प्रैक्टिकली) अमर सम्बंध अनुभव करते हो ना?" (कि बाप-टीचर-सद्गुरू-सखा साजन-सजनी का रट्टा लगाना ही सीखा है) X "भक्तिमार्ग में यही पुकार देते हैं कि थोड़े समय के साथ का अनुभव करा दो। झलक दिखा दो। लेकिन अब क्या हुआ? सर्व सम्बंध से साथी हो गए। झलक वा दर्शन अल्पकाल का होता है; लेकिन सम्बंध सदाकाल का होता है। तो अब बाप के समीप सम्बंध में आ गए कि अभी तक जिज्ञासु हो? जिज्ञासा तब तक होती है जब तक प्राप्ति नहीं। अब जिज्ञासु नहीं हो, अधिकारी हो। हर सेकेण्ड का साथ है। हर सेकेण्ड में सम्बंध के कारण समीप हैं।" (अ. 7.12.78 पृ.2)

+ "जितना यहाँ समीपता द्वारा साथ-साथ है उतना ही मूलवतन में भी ऐसी आत्माएँ साथ-2 हैं और स्वर्ग में भी हर दिनचर्या में सम्बंध का साथ है। जैसे यहाँ तुम्हीं से बोलूँ, तुम्हीं से खेलूँ, तुम्हीं से साथ निभाऊँ, वैसे भविष्य में भी (होगा).....जो बाप के गुण और संस्कार के समीप, सर्व सम्बंधों से सदा बाप के साथ का अनुभव करते हैं वहीं वहाँ रॉयल कुल के समीप सम्बंध में आवेंगे।" (अ.वाणी 8.1.79 पृ.1) अ.वाणी 1.12.78 पृ.2 के अंत में माताओं से कहा है "युगल स्मृति से पुराना सौदा कैन्सिल कर सिगल बनो। माया के सम्बंध को डायवोर्स दे दिया। बाप के सम्बंध से सौदा कर दिया। इसी से मायाजीत मोहजीत और विजयी रहेंगे.....मोस्ट लकी हो। घर बैठे भगवान मिल जाए तो और क्या चाहिए। बाप आपके पास पहले आया पीछे आप आए हो-इसी अपने भाग्य का वर्णन करते खुश रहो- भगवान को मैंने अपना बना लिया।" इसी अ.वाणी में आगे पृ.3 पर कहा है "बापदादा के (दिल्ली रूपी) दिलतख्तनशीन हो?.....सर्व आत्माएँ तड़फ रही हैं। बेसहारे हैं और आप थोड़ी-सी आत्माएँ (साकार) सहारे के अंदर सहारे का अनुभव कर रही हो- तो विशेष आत्मा हुई ना।"

ता.29.3.74 की मुरली में बाबा ने कहा है-"अब जो कुछ प्रैक्टिकल में हैं हो रहा है उसका भक्तिमार्ग में गायन होगा।" X "महिमा भी वही होनी चाहिए जो आपके सम्पूर्ण स्वरूप की है" [अ.20.1.74] डायरैक्ट

परम+आत्मा से वर्तमानकालीन सर्व सम्बंधों की प्रैक्टिकल भासना के आधार पर भक्तिमार्ग में चलने वाली कथा-कहानियों आदि का इशारा देते हुए अ.बापदादा ने ता.23.1.79 पृ.2 पर कहा है-"सदा सुहागिन का गायन पटरानियों के रूप में है। फिर पटरानियों में भी नम्बर हैं। कोई सदा साथ रहती हैं, कोई कभी-कभी। उन्होंने देहधारियों [देहभान में रहने वालों] की कहानी बना दी है; लेकिन है आत्माओं और परमात्मा के (प्रैक्टिकल-पार्ट) की कहानी। कोई विशेषता राधे के पार्ट में है, और कोई विशेषता पटरानियों वा गोपियों के पार्ट में है। इसका भी गुह्य रहस्य है। मिलन मेला मनाने वाले कौन? सर्व सुखों का अनुभव परम+आत्मा (के) पार्ट में है। यह भी सबसे विशेष भाग्य है। इस (परमात्मा-पार्ट) का भी आत्माओं के विशेष (रुद्र और विजयमाला के) पार्ट से सम्बंध है"

ता.3.2.79 पृ.3 पर अ.बापदादा ने संदेश दिया है-"यह शिवरात्रि प्रत्यक्षता की शिवरात्रि करके मनाओ। सब (ब्राह्मणों) का अटेन्शन जाय- यह कौन हैं? और किसके प्रति सम्बंध जोड़ने वाले हैं? सब अनुभव करें कि जो आवश्यकता है, वह यहाँ से मिल सकती है। सर्व सुखों के खान की चाभी यहाँ (स्वर्ग की राजधानी दिल्ली में) ही मिलेगी।" और आखिरीन ता. 14.4.73 पृ.2 की मुरली के अनुसार आदि सो अंत के नियम प्रमाण इसकी रिजल्ट क्या निकलेगी?-"जैसे उन (हद के) राजाओं को रानियों की परवाह नहीं रही। छोड़ दिया। वैसे ही अब (बेहद की) रानियाँ निकलेंगी जो (बेहद के) राजाओं की परवाह नहीं करेंगी।"

ओमक्रांतिः॥ ओमशांति॥

रामनौमी बनाम महावीर जयन्ती ॥ॐ॥ परम+आत्मा-प्रत्यक्षता बॉम्ब ॥ट्रा.॥ नगाड़ा नं. 4

त्रिमूर्ति शिव परमात्मा के शरीर रूपी (मुकर्रर) रथ - प्रजापिता की सोल-विश्वनाथ शंकर की पहचान

(1) नाम-

(i) लौकिक नाम :- जैसे 'ब्रह्मा' बाबा का लौकिक नाम उनके अलौकिक कर्तव्य के अनुरूप 'लेखराज'-अर्थात् भाग्य का लेख लिखने वालों का राजा-पहले से ही निश्चित था, ठीक वैसे ही राम की आत्मा 'शंकर' का लौकिक नाम मायावी रावण और उसके सम्प्रदाय से युद्ध करने में महान वीरता के अलौकिक कर्तव्य के अनुरूप पहले से निश्चित होना चाहिए। महावीर को ही महान् वीर अर्थात्-वीरों का राजा 'इन्द्रदेव' कहा जाता है, जिसके नाम पर बसाई गई 'इन्द्रप्रस्थ नगरी' और 'इन्द्र सभा' आज भी मशहूर है। वह पांडवों की विख्यात राजधानी इन्द्रप्रस्थ माउण्ट आबू में नहीं, दिल्ली क्षेत्र में बसाई गई थी।

जैसा ब्रह्मा बाबा 'बडग' जाति के ब्राह्मण थे वैसे ही प्रजापिता की सोल-शंकर भी कुलीन ब्राह्मण वर्ग की होनी चाहिए। अतः सच्चे ब्राह्मणों की रक्षा के लिए ज्ञान-यज्ञ रचने में दक्ष अर्थात् दीक्षित व्यक्ति को शास्त्रों में 'दक्ष+प्रजा+पति' कह दिया है (पति का अर्थ ही है रक्षा करने वाला) नहीं तो शंकर की सोल अपने पूर्वजन्म में ब्रह्मा का रचयिता प्रजापिता कही गई है क्योंकि ता.6.5.73 पृ.3 के अंत में बाबा ने कहा है-"बाबा को तो स्थापना-विनाश का साक्षात्कार हुआ है; परंतु पहले यह समझ में नहीं आया कि हम ही विष्णु बनेंगे।" स्पष्ट है कि ब्रह्मा में सत्य ज्ञान का बीज डालने और निश्चय का फाउंडेशन जमाने के लिए अर्थात् उसका पार्ट खोलने के लिए

शिवबाबा ने ब्रह्मा से पहले किन्हीं दूसरे बच्चों में प्रवेश किया था। ता. 23.7.69 पृ.2 के मध्य में साफ़ कहा गया है-"10 वर्ष से रहने वाला, ध्यान में जाती थी। मम्मा-बाबा को भी ड्रिल कराती थी। उनमें बाबा प्रवेश कर डायरैक्शन कर देते थे। कितना मर्तबा था। आज वे हैं नहीं (क्योंकि) उस समय यह इतना (ड्रामा का) ज्ञान नहीं था।"

(ii) **अलौकिक नाम**- जिस बच्चे के शरीर रूपी रथ के द्वारा शिवबाबा परम+पिता (Supreme god father) के रूप में सारे विश्व में विख्यात होते हैं उसके प्रमुख अलौकिक नाम- शंकर, महावीर, सोमनाथ, सनत्कुमार आदि हैं।

विश्वनाथ शंकर :- ता.24.1.75 की मुरली में बाबा ने कहा है-"उन (शिव) की आत्मा का नाम 'शिव' ही है। वह कब बदलता नहीं। शरीर बदलते हैं तो नाम भी बदल जाते हैं।" (जैसे ब्रह्मा से शंकर, फिर विष्णु) " जब बाप आते हैं तो ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी ज़रूर चाहिए। कहते भी हैं त्रिमूर्ति शिव भगवान+उवाच। अब तीनों द्वारा (एक साथ) तो नहीं बोलेंगे ना। यह बातें अच्छी रीति धारण करनी हैं।" (ता. 22.2.75 पृष्ठ 1 के शुरू में) ता.10.2.72 की मुरली में ब्र.वि.शं. की त्रिमूर्ति में 'शंकर' को एकमात्र बड़ा बच्चा बताया है-"गॉड इज़ वन। उनका बच्चा भी वन कहा जाता है। त्रिमूर्ति ब्रह्मा-देवताओं से बड़ा शंकर।" भारतीय सभ्यता में बड़ा बच्चा ही पहले-पहल राज्य का अधिकारी होता है। इसलिए बाबा ने भी ता.3.5.73 की मुरली में कहा है-"बड़े भाई को हमेशा बाप समान समझते हैं। यह सारा ज्ञान के ऊपर है। जिसमें अधिक ज्ञान है वह बड़ा ठहरा। भल शरीर में छोटा हो, पर ज्ञान में तीखा है तो हम समझते हैं यह भविष्य में बड़ा (विश्वनाथ) बनने वाला है।"

विश्व में बड़ा अर्थात् महान् बनने वाला यह महा+देव शंकर ही वास्तव में ब्रह्मा का सबसे बड़ा पुत्र 'योगीश्वर सनत्कुमार' कहा गया है क्योंकि योगियों का ईश्वर तो एक ही होगा। एक के ही दो नाम दे दिए हैं। योगबल के आधार पर आदिदेव बनने वाले इसी सनत्+कुमार के आधार पर ही आदि+सनातन+देवता धर्म' का नाम सार्थक होता है, क्योंकि धर्मपिता के नाम पर ही धर्म का नाम विख्यात होता है। जैसे क्राइस्ट से क्रिश्चियन, बुद्ध से बौद्ध धर्म आदि-2। ता.18.3.71 की अव्यक्तवाणी में ब्रह्मा के ज्येष्ठ पुत्र सनत्कुमार का जिक्र आया है। वास्तव में ब्रह्मा-सरस्वती को आदिदेव और आदिदेवी नहीं कह सकते, क्योंकि सरस्वती ब्रह्मा की बेटी थी, परंतु वही ब्रह्मा-सरस्वती अपना पतित शरीर त्याग कर जब 'विशेष प्रिय ज्ञानी और योगी तू आत्मा'- शंकर,पार्वती में प्रवेश करते हैं तो आदि देव और आदि देवी के नाम से संसार में प्रत्यक्ष होते हैं।

महावीर- वास्तविकता तो यह है कि जैन तीर्थंकर 'महावीर' और हिंदुओं के नग्नवेषधारी 'शंकर' भी एक ही व्यक्तित्व के दो अलग-2 नाम हैं जिसकी साकारी सम्पूर्ण अवस्था की यादगार तपस्वी मूर्ति दिलवाड़ा मंदिर में स्थापित है। महान वीरता के कर्तव्य के आधार पर शिवबाबा ने भी ता. 8.1.74 पृ.1 के मध्य में उनका अलौकिक नाम 'महावीर' ही रखा है- "हनुमान का भी दृष्टांत है न। इसलिए तुम्हारा नाम 'महावीर' (तीर्थंकर) रखा है अभी तो एक भी महावीर नहीं.....अभी वीर हैं। पूरा महावीर पिछाड़ी में होंगे।"

सोमनाथ :- सोम चंद्रमा को कहते हैं। ज्ञान-चंद्रमा ब्रह्मा बाबा है। (ता.3.11.73) उस ब्रह्मा को भी पूर्वजन्म में

डायरैक्शन देकर ज्ञानयज्ञ में नाथने वाली प्रजापिता की सशक्त आत्माएँ ही अपने वर्तमान जन्म में सोमनाथ-सोमनाथिनी बनती हैं। योगबल से बनने वाली इनकी निरोगी कंचन काया की यादगार में आज भी मंदिरों में मूर्तियों को सजाने का उल्लेख करते हुए बाबा ने ता.5.7.75 पृ.1 की मु. में कहा है-"सोमनाथ का मंदिर कितना बड़ा है? कितना सजाते हैं?.....आत्मा की सजावट नहीं है वैसे परमात्मा की भी सजावट नहीं है। वह भी बिंदी है। बाकी जो भी सजावट है वह शरीरों की है.....अभी तुम (बच्चे) अंदर में जानते हो- हम सोमनाथ बन रहे हैं।"

यहाँ ब्रह्मा के पतित और रोगी शरीर रूपी रथ की सजावट की बात ही नहीं है। क्योंकि वे शरीर रहते सम्पूर्ण निरोगी कंचन काया नहीं बना सके।

(2) रूप-

(i) फ़रिश्ताई निराकारी स्टेज :- शंकर का साकारी शरीर होते हुए भी बुद्धियोग से अव्यक्त आकारी फ़रिश्ता स्वरूप या निराकारी बिंदुरूप स्टेज प्रत्यक्ष रूप में अनायास ही देखने में आवेगी। इसीलिए शंकर को तीन लोक वाले चित्र में निराकारी वतन के अति समीप सबसे ऊँचे तबक्के में सूक्ष्मवतनवासी दिखाया जाता है। बाबा ने कहा भी है कि बाप निराकारी और माँ साकार होती है। जैसे कि ब्रह्मा के किसी भी चित्र में बुद्ध-क्राइस्ट-नानक आदि धर्मपिताओं की तरह चढ़ी हुई पुतलियों वाली आँखें (निराकारी स्टेज) देखने में नहीं आती; जबकि बापों के बाप शिव (शंकर) को चित्रों में ज़बरदस्त निराकारी स्टेज वाले नारायणी नशे में दिखाया जाता है।

(ii) अति साधारण वेशभूषा :- बाबा ने 5.2.74 की मुरली में कहा है- "इनका तो वही साधारण रूप है। वहीं ड्रेस आदि है। फ़र्क़ नहीं। इसलिए कोई समझ नहीं सकते हैं।" X "वह है निराकारी निरअहंकारी, कोई अहंकार नहीं, कपड़े आदि सब वही हैं। (शरीर रूपी मिट्टी के सिवाय) कुछ भी बदला नहीं है..... उनका तो वही साधारण तन पहरवाइस है। कोई फ़र्क़ नहीं।" (ता. 8.4.74) X "बाप कहते हैं मैं बहुत साधारण तन में आता हूँ (ब्रह्मा अर्थात् बड़ी माँ का तन तो असाधारण था) इसलिए कोई विरला पहचानते हैं। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, साथ में रहने वाले भी पहचान नहीं सकते ।" (ता.4.2.74 पृ.3) X "वही महाभारत लड़ाई है। तो ज़रूर भगवान भी होगा। किस रूप में किस तन में है? यह सिवाय तुम बच्चों के और किसी को पता नहीं है। कहते भी हैं मैं बिल्कुल साधारण तन में आता हूँ। मैं कृष्ण -(अर्थात् ब्रह्मा के शोभायमान) तन में नहीं आता हूँ।" (ता.13.8.76)

(iii) कमज़ोर मेदे वाला हल्का शरीर :- ता.20.7.73 पृ.2 की मुरली में कहा है- (शंकर के मस्तक में ज्ञान चंद्रमा ब्रह्मा की प्रवेशता के कारण) "श्रीनाथ-जगन्नाथ है एक ही चीज़। परंतु जैसा देश वैसा ठाकुर बनाय उनको भोग लगाते हैं। अगर पकवान आदि खिलावें तो (लीवर ख़राब होने से) पेट में दर्द ही पड़ जावे।" यही कारण है कि आज भी 500 करोड़ के स्वामी जगन्नाथ के मंदिर में सूखी रोटी-दाल-चावल का सादा भोग ही लगाया जाता है। ता. 24.5.72 की मुरली में कहा है-"शरीर कमज़ोर हो तो कोई हर्जा नहीं, आत्मा पावरफुल होनी चाहिए।"

(3) देश (धाम)-

(i) लौकिक घर फर्रुखाबाद तरफ़ :- कई एक मुरलियों में बाबा ने बेहद के घर परिवार ('वसुधैव कुटुम्बकम्) का

मालिक बनने वाले इस विश्वपिता की याद और मान्यता का सम्बंध (जिला) फर्रुखाबाद से जोड़ा है। 'जहाँ जन्म वहाँ जीत' के नियम-प्रमाण जैसे मथुरा, वृन्दावन में कृष्ण और अयोध्या में राम की याद और मान्यता अधिक है, ठीक वैसे ही विश्वपिता या विश्वनाथ शंकर की जन्म स्थली- फर्रुखाबाद तरफ़ उसकी ''याद और मान्यता'' अधिक होनी ही चाहिए, क्योंकि घर-परिवार या देश वालों को महानता का फखुर (गौरव) अधिक रहता है। ता.10.4.74 की मुरली में कहा है- "बाप को मालिक कहा जाता है। फर्रुखाबाद तरफ़ मालिक को मानते हैं। घर का मालिक तो बाप ही होता है। बच्चों को बच्चे ही कहेंगे। जब वही बड़े होते हैं, (अलौकिक) बच्चे पैदा करते हैं, तब फिर मालिक बनते हैं-यह सब राज़ समझने के हैं।" ता. 14.1.73 और 12.1.78 की मुरलियों के पृष्ठ 2 पर कहा है- **"जैसे फर्रुखाबाद में कहते हैं- हम उस मालिक को याद करते हैं, परंतु वास्तव में विश्व का मालिक तो ल.ना. बनते हैं। शिवबाबा तो बनते नहीं।** (तो किसे याद करते हैं) तो उनसे पूछना पड़े वह मालिक साकार है या निराकार? निराकार तो साकार सृष्टि का मालिक हो न सके।.....खुद पावन दुनिया का मालिक नहीं बनते। उसका मालिक तो ल.ना. बनते हैं और बनाते हैं बाप-यह बड़ी गुह्य बातें हैं समझने की।"

जैसे शिव के रथी ब्रह्मा का लौकिक जन्म 'गाँवड़े' में हुआ था, ठीक वैसे ही शिव और ब्रह्मा रूपी डबल इंजन (बाप-दादा) के रथी शंकर की जन्म स्थली (फर्रुखाबाद के) किसी गाँव में ही होनी चाहिए। अतः बाबा ने 8.2.75 की मुरली में कहा- "जब गोरा (निर्विकारी) है तो (स्वर्ग-स्थापना की ज़िम्मेवारी का) ताज होना चाहिए और सांवरा (अर्थात् विकारी) है तो ताज कहाँ से आवेगा। गाँवड़े का छोरा तो गरीब होगा ना।" वैसे शास्त्रीय मान्यतानुसार 'सम्बल' (अर्थात् आधार या नींव) ग्राम में भगवान का जन्म बताया है जिससे सिद्ध होता है कि वह गांव अति प्राचीन भी होना चाहिए।

(ii) अलौकिक जन्म स्थान अहमदाबाद :- सारी मनुष्य-सृष्टि के बीजरूप-रचयिता-बाप अर्थात्, "प्रजापिता की सोल" शंकर का अलौकिक ब्राह्मण जन्म अहमदाबाद में स्थिति किसी बेहद ब्राह्मण-परिवार अर्थात् सेवाकेंद्र में होना चाहिए, क्योंकि ता. 24.1.70 पृ.4 पर अ.बापदादा ने **अहमदाबाद में को सर्व सेंटर्स का बीजरूप कहा है**- "अहमदाबाद को सभी से ज़्यादा सर्विस करनी है, क्योंकि अहमदाबाद सभी सेंटर्स का बीजरूप है। बीज में ज़्यादा शक्ति है। खूब ललकार करो जो गहरी नींद में सोये हुए भी जाग उठें। (सोमनाथिनी जैसी) कुमारियाँ तो बहुत कमाल कर सकती हैं।" जैसे भक्तिमार्ग में गुजरात का सोमनाथ मंदिर सब मंदिरों का बीजरूप है, ठीक वैसे ही ज्ञानमार्ग में सोमनाथ-सोमनाथिनी जैसी मनुष्य-सृष्टि की बीजरूप आत्माओं को जन्म देने के कारण अहमदाबाद का ('हे प्रभु पार करो' की यादगार) '**प्रभु+पार्क**' सेंटर सिर्फ़ गुजरात का ही नहीं, बल्कि सारे विश्व के सेवाकेंद्रों का बीजरूप है, क्योंकि राजा विक्रमादित्य की आत्मा ब्रह्मा ने स्वयं ही **'मधुबन'** की धन राशि लगाकर एकमात्र इसी सेंटर की स्थापना की थी, जबकि अन्यान्य सेवाकेंद्र दूसरे लोगों के निमंत्रण पर खोले गए हैं। चूँकि इसी सेवाकेंद्र से सोमनाथ-सोमनाथिनी का अलौकिक जन्म होता है, अतः बाबा ने ता.4.3.75 की वाणी में कहा है-**"सोमनाथ नाम रखा है**, क्योंकि सोम+रस पिलाते हैं। (एडवांस) ज्ञान-धन देते हैं। फिर जब पुजारी बनते हैं तो कितना खर्चा करते हैं उनका मंदिर बनाने पर, क्योंकि (विक्रमादित्य उर्फ़ ब्रह्मा को) सोमरस दिया है ना। **सोमनाथ**

(शंकर) के साथ सोमनाथिनी (पार्वती) भी होगी।"

इस वर्ष भी अव्यक्त बापदादा ने ता. 4.1.79 पृष्ठ 2 पर कहा है- "गुजरात को सैम्पुल तैयार करना चाहिए। गुजरात को लाइट हाउस बनाओ (जो) न सिर्फ़ गुजरात (का) लाइट-हाउस हो, बल्कि विश्व (का) लाइट हाउस (हो).....**ऐसा परमात्मा+बॉम्ब फेंको** जो एक ठक्का से आत्माएँ दौड़ती हुई अपने एसलम में पहुँच जाएँ। पहले गुजरात आबू में क्यू शुरू करें। **जो ओटे सो अर्जुन हो जावेगा। अर्जुन अर्थात् पहला नं."** प्लस में आने वाले इसी पहले नं. **संगमयुगी नारायण की यादगार**-अहमदाबाद के स्वामी नारायण मंदिर-का ज़िक्र ता.5.3.75 की मुरली में इस प्रकार किया है-"अहमदाबाद में स्वामी नारायण के 108 मंदिर हैं। (करोड़ों पैसे आते होंगे। मिलते तो स्वामी नारायण को होंगे ना। तो (अंत में अहमदाबादी पाण्डव-भवन तैयार होने पर विश्व-विजेता 108 मणकों से कनेक्शन जोड़ने के लिए) सभी सेंटर्स से यहाँ ही आवेंगे ना।"-क्योंकि गुजरात की राजधानी अहमदाबाद को ही सारे विश्व का लाइट हाउस बनना है, अतः भक्तिमार्ग के जयगुरुदेव की यह भविष्यवाणी सत्य ही है कि मध्यभारत के किसी शहर से सारे विश्व का शासन सम्भाला जाएगा।

(4) (कार्य-)काल

50-60 वर्षीय पुरुषोत्तम संगमयुग में (एडवांस) ज्ञान का बीज बोने और विश्व की बादशाही का वरसा देने के लिए क्रमशः आदि और अंत का कार्य-काल प्रजापिता की सोल द्वारा चलता है, जबकि मध्य के 40 वर्ष बड़ी माँ (ब्रह्मा) का पार्ट चलता है। चूंकि ब्रह्मा की 100 वर्षीय आयु अब सन 87 से पूरी हो रही है और सचखण्ड की राजधानी स्थापना का कार्य (1976 से) डायरैक्ट बाप (प्रजापिता की सोल द्वारा) आरम्भ हो चुका है, अत: भुजाओं रूपी बच्चों के सहयोग प्रमाण नं.वार वर्सा देने का कार्य सन् 87 तक पूरा हो जावेगा, क्योंकि बाबा ने ता. 24.7.72 और 25.7.75 की मुरली में कहा है- "पूरी राजधानी स्थापन होने में 50-60 वर्ष लगते हैं।" X " तुम्हारा यह (ज्ञान) यज्ञ 50 वर्ष चलता है।" ता. 11.5.73

(5) आयु-

(i) **लौकिक शरीर की आयु** :- (37 वर्ष) बाबा ने कहा है कि बाप तो अनन्य (अन्+अन्य अर्थात् उन जैसा अन्य कोई सैम्पुल न हो ऐसे) बच्चों को ही याद करते हैं। प्रजापिता के रूप में यज्ञ के आरम्भ में 2/3 नं. में आने वाले जिन बच्चों द्वारा शिवबाबा ने ब्रह्मा-सरस्वती के भी पार्ट खोले थे, उन्हीं अनन्य बच्चों के वर्तमान जन्म के लौकिक शरीर की आयु का उल्लेख करते हुए बाबा ने ता.17.2.75 पृष्ठ 1 के मध्यांत में कहा है- "आत्मा को बुलाते हैं उनको समझाने के लिए कि 'तुम आते थे। तुमको कितना समझाते थे कि पवित्र बनो। फिर भी न माना। अब तुम पद-भ्रष्ट हो गए।' आगे जो मरे हैं फिर भी बड़े होकर कोई 20, कोई 25 वर्ष के हो गए होंगे। ज्ञान भी ले सकते हैं"- सन् 1967 में चलाई गई इस वाणी के अनुसार उस समय की 20 और 25 वर्ष वाली ये एडवांस पार्टी की आत्माएँ (पार्वती-शंकर) सन् 79 में अब क्रमश: 32 और 37 वर्ष आयु वाली होनी चाहिए।

(ii) अलौकिक आयु :- रंगमंच कभी खाली नहीं रहता। अर्थात् ब्रह्मा-सरस्वती की आत्माएँ अपना साकार शरीर छोड़ती हैं तो संगमयुगी दुनिया के रंगमंच पर पार्वती-शंकर (जिज्ञासु रूप में) क्रमश: सन् 66-67 और 69-70 में

उपस्थित हो जाते हैं। (और 1976 के प्रत्यक्षता वर्ष तक आते-2 अपनी आत्माओं के पुरुषार्थ की सम्पन्न स्टेज में आकर बेसिकली आत्मा की कट उतरने से आदि लक्ष्मी-नारायण अर्थात् पुरुषोत्तम संगमयुग के अर्धनारीश्वर रूप से नं. वार ब्रह्मावत्सों के सामने प्रत्यक्ष होने लगते हैं)

बुद्ध पूर्णिमा : 11 मई 79 ॥ॐ॥ परमात्मा-प्रत्यक्षता बॉम्ब ॥ ट्रा. ॥ नगाड़ा नं. 5

<u>विश्वनाथ शंकर की अंतरंग पहचान</u>

(6) गुण शक्ति और स्वभाव- ऐसे तो परमात्मा गुणों का सागर कहा जाता है; परंतु वर्तमानकालीन ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में देशकाल-परिस्थितियों के अनुरूप जिन प्रमुख गुणों, शक्तियों और स्वभाव को प्रत्यक्ष करते हुए शिवबाबा धर्मराजशंकर द्वारा पार्ट बजाते हैं, उनका यहाँ संक्षेप में उल्लेख किया गया है-

(i) स्वाधीनता :- विश्वपिता बनने वाले उस बाप-समान व्यक्तित्व में किसी व्यक्ति या वैभव के प्रति सरेण्डर होने, अर्थात् शरण में जाने या आधीन होने के स्वभाव-संस्कार नहीं हो सकते। बाबा ने 27.2.75 की मुरली में साफ़ कहा है • "तुम कोई शरणगत नहीं लेते हो। यह अक्षर भक्तिमार्ग के हैं 'शरण पड़ी मैं तेरे'। बच्चा कब बाप की शरण पड़ता है क्या? बच्चे तो मालिक होते हैं। तुम बच्चे बाप की शरण नहीं पड़े हो। बाप ने तुमको अपना बनाया है।" स्पष्ट है कि (किसी व्यक्ति के सामने) सरेंडर होने वाले बाप के बीजरूप, बाप समान सूर्यवंशी बच्चे नहीं हो सकते; क्योंकि (कुछ न कुछ अंतिम 84 वें जन्म में एंटी बने) दुश्मनों या विधर्मियों को ही सरेंडर करने या शरण में लेने की भारतीय परम्परा चली आई है। (जन्म-जन्मान्तर सदाकाल) वफ़ादार-फ़रमानबरदार (....) मातेले बच्चों को आधीन बनाने का सवाल ही नहीं उठता। 'अव्यक्त वाणी' 16.6.73 पृ.96 की 18वीं पंक्ति में तो लौकिक ही नहीं; बल्कि अलौकिक ब्राह्मण-परिवार के सम्पर्क के बंधनों से भी सम्पूर्ण स्वाधीन रहने का डायरैक्शन दिया गया है। इसीलिए बाबा ने ता.27.6.74 पृ.80 में कहा है • "किसी व्यक्ति वा वैभव के आधीन रहने वाली आत्मा सर्वाधिकारी (विश्वराजन) नहीं बन सकती"। X "हरेक को अपनी ज़िम्मेवारी आप उठानी है। अगर यह सोचेंगे कि दीदी-दादी व टीचर (हमारी जिदगी के) ज़िम्मेवार हैं, तो इससे सिद्ध होता है कि आपको भविष्य में उनकी प्रजा बनना है, राजा नहीं बनना है। यह भी आधीन रहने के संस्कार हुए न? जो आधीन रहने वाला है वह अधिकारी नहीं बन सकता। विश्व का राजभाग नहीं ले पाता। इसलिए स्वयं के ज़िम्मेवार फिर सारे विश्व की ज़िम्मेवारी लेने वाले ही विश्वमहाराजन् बन सकते हैं।" (अव्यक्त वाणी 30.5.73 पृ.81) यहाँ स्पष्ट है कि जब तक कोई ब्राह्मण अपनी अब तक की पढ़ाई से धारण किए गए ज्ञान-योग और पवित्रता के निर्विकारी साधनों से स्वयं की रोटी कपड़ा और मकान की ज़िम्मेवारी लेने योग्य ही नहीं बना, (अर्थात् दादी-दादा आदि किसी देहधारी व्यक्ति विशेष की कृपा के आधीन है) वह सारे विश्व को पालने वाला राजा+महाराजा अर्थात् विजय+अन्ती माला का मणका कैसे बन सकता है? अर्थात् नहीं बन सकता।

(ii) स्वाभिमान :- बेहद की खुदी का पार्ट बजाने वाले परम+आत्मा को खुदा भी कहा जाता है। उस खुदा का साकार तन अहमदाबाद में से अलौकिक ब्राह्मण जन्म लेता है; अतः अव्यक्त बाप-दादा ने अहमदाबाद को अल्लाह की नगरी कहा है। खुदा की इस बेहद खुदी के कारण ही इस नगरी का नाम 'अहं+दा+बाद' अर्थात्

जिसने सबको झुकाने के बाद अपना (सात्विक) अहं दिया हो- ऐसा अहमदाबाद नाम पड़ा है।

टैगोर का प्रसिद्ध गीत है • 'यदि कोई तेरा साथ न दे तो तू अकेला चलो रे'-यह गीत जैसे खुदा को फॉलो करने वाले सभी धर्मपिताओं पर (नं. वार) लागू होता है, वैसे खुदा पर भी लागू होता है। जब सच्चखण्ड की स्थापना करने वाले सच्चे बाप की प्रत्यक्षता में कोई सहयोग नहीं देता तो अपना परिचय या पैगाम देने का काम उन्हें खुद ही बाप के (नं.वार) सच्चे और साफ़दिल 108 विजयी (होने वाले) वत्सों के घर-2 जाकर करना पड़ता है। अतः बाबा ने 20.12.74 की मुरली में कहा है • "बाप खुद आकर तुमको अपना परिचय देते हैं। तुम आपे ही अपना परिचय नहीं पाती हो।" + "वह सद्गुरू स्वयं ही आकर अपना परिचय देते हैं।" (8.10.74) "पैगाम अथवा मैसेज तो शिव+बाबा ही देते हैं। खुदा को पैगम्बर कहते हैं न।" (ता.9.3.74) गायन भी है •"घर बैठे भगवान मिला।" सब पुरुषार्थियों को थोड़े ही घर बैठे भगवान मिला होगा। गायन ही है कि कोटों में कोई पुरुषार्थ करते हैं और उन पुरुषार्थ करने वालों में से भी कोई विरले ही उस (ज्ञान की बेहद चमक मारने वाले) हीरे को प्राप्त करते हैं। प्राप्त करने वाले ज़रूर (जब) स्वाधीन और स्वाभिमानी होंगे क्योंकि मानवीय प्रकृति का नियम है कि 'ज्ञानी से ज्ञानी मिलै, मिलै कीच में कीच।'

ऊँच-ते-ऊँच स्वाभिमानी की यादगार गुरुशिखर-(शिखा अर्थात् ब्राह्मण चोटी) में प्रवेश करके रहने वाले जगद्गुरू शिव+**(बाबा)** की भेंट में सब नीचे हैं। ऐसे ऊँचे बाप शिव का सबसे बड़ा स्वाभिमानी बच्चा- देव-देव महादेव शंकर किसी नीचे तबक्के वाले की शरण में क्यों जावेगा? इसलिए 29.1.74 ता. मृ की मु. में बाबा ने कहा है • "धनवान बाप (शिव) का बच्चा कब गरीब (ब्रह्मा बाबा, दीदी-दादी आदि देहधारियों) की एडॉप्शन थोड़े ही कबूल करेगा।" क्योंकि बाबा ने ता.26.2.75 की मुरली में खास ब्रह्मा-विष्णु को भी 'वर्थ नॉट ए पैनी' बताया है। शंकर का नाम नहीं लिया; क्योंकि शंकर समान (नं. वार) स्वाभिमानी बच्चों की ओर से बाबा ने स्वयं ही ता.13.8.74 की मुरली में कहा है • "हम नं.वन (संगमयुगी विश्वमहाराजन) बनते हैं तो फिर सेकिण्ड-थर्ड (सतयुगी ल.ना.) की पूजा (खुट्टेबरदारी) क्यों करेंगे?" X "मम्मा-बाबा यह (16 कला सम्पूर्ण ल.ना.) बनते हैं तो हम फिर कम बनेंगे क्या?" (ता.16.3.75) "जब एक (शिव) से ही सारी प्राप्ति हो सकती है तो अनेकों (देहधारी गुरुओं) की ओर जाने की क्या दरकार है?" (ता.25.10.69)

(iii) निर्भयता :- बाबा ने कहा है कि योगबल वाले निडर होंगे। निडर होने का मतलब यह नहीं कि खूँख़ार और क्रोधी जानवरों के निर्जन प्रदेश में जानबूझकर निहत्थे और एकाकी होकर घूमते फिरें या कि उन जानवरों से मुठभेड़ करके बाहुबल का प्रदर्शन करते फिरें; क्योंकि बाबा ने 19.7.77 की मु. में कहा है • "बाहुबल वाले विनाश को पावेंगे।" अतः गुप्त ज्ञान के गुह्य राज़ों को डंके की चोट पर, (युक्ति से) निर्भीकतापूर्वक प्रत्यक्ष करना ही अंडरग्राउंड रूहानी मिलेट्री के शूरवीर वॉरियर्स का काम है क्योंकि हमारा कोई स्थूल हिसक युद्ध तो है नहीं; यह तो ज्ञान के अस्त्र-शस्त्रों का रूहानी युद्ध है जिसका सामना करने के लिए विशेष प्रिय ज्ञानी तू आत्मा बच्चे सदा तैयार रहते हैं। इसीलिए बाबा ने ता.19.12.78 पृ.4 के शुरू में कहा है • "महावीर तो दुश्मन (अर्थात् एंटी स्वभाव-संस्कार के विरोधियों) का आह्वान करते हैं (अर्थात् निमंत्रण देते हैं) कि आओ, और हम विजयी बने।

महावीर पेपर को देख घबराएँगे नहीं। चैलेंज करेंगे। क्योंकि त्रिकालदर्शी होने के कारण जानते हैं कि हम कल्प-2 के विजयी हैं।" X "शूरवीर आत्माएँ कब किसी से घबराने वाली नहीं होंगी; बल्कि उनके सामने आने वाले घबराएँगे।" (अ.13.3.71)

(iv) सच्चाई और सफाई :- अभी इस वर्ष भी अव्यक्त बाप-दादा ने हम बच्चों को सत्यता और निर्भीकता की अथॉरिटी से बाप की प्रत्यक्षता करने का डायरैक्शन दिया है। परंतु इस डायरैक्शन को वही बच्चा अमल में ला सकेगा जो स्वयं बाप के सामने सच्चाई और दिल की सफ़ाई का सैम्पुल बनकर दिखाएगा; क्योंकि बाबा ने कहा है • "सच्चे दिल पर सच्चा साहब राज़ी होगा। झूठे दिल पर सच्चा साहब कब राज़ी नहीं होगा।" X "बापदादा सुनाते भी सत्यनारायण की कथा हैं और स्थापना भी सतयुग की करते हैं। तो बाप को, जो सत् बाप, सत् टीचर और सत्+गुरु का प्रैक्टिकल पार्ट बजाते हैं, तो सत् बाप को क्या प्रिय लगता है-सच्चाई। जहाँ सच्चाई अर्थात् सत्यता है वहाँ स्वच्छता- सफ़ाई अवश्य होनी है। गायन भी है "सच्चे दिल पर साहब राज़ी।" (अ.वा.2.9.75 पृ. 89)

दिलवाड़ा बाप भी ऐसे सच्चे दिल वाले बच्चे के द्वारा प्रत्यक्ष होते हैं जिसने तन-मन-धन (समय-सम्बन्ध) से सम्बंधित एक-2 पाई-पैसे का पोतामेल खुले दिल से, लोकलाज की परवाह न करते हुए बेहिचक दिया हो। इसीलिए बाबा ने 16.4.70 की वाणी में कहा भी है • "अपना सही चार्ट लिखने वाला कोई कोटों में एक है।"'साफ़दिल तो मुराद हासिल' करने वाले ऐसे सच्चे पुरुषार्थी बच्चे द्वारा जब सन् 76 के प्रत्यक्षता वर्ष में बाप की प्रत्यक्षता होती है तो झूठे बगुला पुरुषार्थी सामना करने लग जाते हैं। ता.9.5.73 पृ.3 की मु. में बाबा ने कहा भी है • " **सच्चा जब निकलता है तो झूठ सामना करते हैं। तुम किसको सच बतलाते हो तो जैसे मिर्ची लगती है।"**

(v) सबसे न्यारा-फिर भी बाप (शिव) का प्यारा :- ऐसी (सांसारिक) तनातनी की परिस्थितियों में बाबा के कथनानुसार • "(बुद्धियोग से) हंस-बगुले इकट्ठे रह न सके।" अतः नं.वार ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में से कमल फूल के समान सदा बुद्धियोग से न्यारे रहने वाले ऐसे साफ़दिल बच्चों को लौकिक ही नहीं, बल्कि अलौकिक परिवार के भी सर्व सम्बंधों से न्यारे होकर चलना पड़ता है। बाबा ने 11.1.70 की अ.वाणी में कहा भी है • "साफ़ दिल समीप सितारा बनेगा तो (लौकिक-अलौकिक) सभी सम्बन्ध भी छोड़ने पड़ेंगे।" X "सबसे न्यारा और बाप का प्यारा। इसी को कमल पुष्प समान कहा जाता है" (अ.30.6.77 पृ.3) X "कमल- पुष्प कमाल करने में प्रवीण होता है" (अ. 31.1.75) X "इस मायावी (विषय) वैतरणी में रहते (न कि आश्रम के पवित्र वातावरण में रहकर) कमल समान पवित्र बनना है। कमल-फूल बहुत बच्चों (शतदल यानी 100 पंखड़ी) वाला-होता है फिर भी पानी से ऊपर ही रहता है। वह गृहस्थी (प्रजापिता/शंकर) बहुत चीज़ें (अर्थात् हर धर्म की बीजरूप मनुष्यात्माओं को) पैदा करता है। दृष्टांत सब तुम्हारे (विश्वपिता शंकर के) हैं ।" (ता.31.1.75) इसी अवस्था की यादगार चित्रों में आज भी शंकर को प्रायः कमल-पुष्प पर बैठा हुआ दिखाते हैं। हमारे त्रिमूर्ति के चित्र में, विष्णु के नीचे वाले (धर्मराज के प्रतीक) लेफ्ट हैंड में भी शंकर की इस न्यारी और प्यारी अवस्था को सूचित करने वाला

कमल-पुष्प दिखाया गया है; क्योंकि ब्रह्मा-सरस्वती की सम्पूर्ण आत्माएँ ही शंकर-पार्वती में प्रवेश करके संगमयुग में ही विष्णु का पार्ट बजाती हैं। अतः बाबा ने ता.22.1.75 की वाणी में कहा है • "पवित्र प्रवृत्ति मार्ग बाप ही बनाते हैं। इसलिए विष्णु को भी 4 भुजाएँ दिखाई हैं। शंकर के साथ पार्वती, ब्रह्मा के साथ सरस्वती । अब वह कोई ब्रह्मा की स्त्री तो नहीं ; (परंतु वह भी पार्वती में प्रवेश करने के बाद वैष्णव देवी कही जाती है।)"

(vi) गुप्त पुरुषार्थी :- अभी इसी वर्ष अव्यक्त बाप-दादा ने ता. 6.2.79 पर पृष्ठ 1 के अंत में बाप के इस गुप्त पार्ट की ओर इशारा करते हुए कहा है • "जो बाप बैकबोन है। गुप्त रूप में पार्ट बजा रहे हैं x बाप को प्रत्यक्ष करना है (बाप से) सुनने वालों को पहचानते हैं, लेकिन बनाने वाला अभी भी गुप्त है। तो अब बनाने वाले को प्रत्यक्ष करना है अर्थात् (दिल्ली राजधानी पर) विजय का झण्डा लहराना है"। x "बाप भी है गुप्त (उसके) बच्चे भी गुप्त। उनका सारा पुरुषार्थ गुप्त। दान-मान-पद-सर्विस आदि सब गुप्त" (ता.13.9.70) "पाण्डव थे गुप्त।" (20.5.73) " बाबा तो अपने टाइम पर अपनी सर्विस पर खड़े हो जाते हैं। किसी को भी पता नहीं पड़ता है। कल्प (की शूटिगकाल 40 वर्ष) पहले भी तुम बच्चों को पता था नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। कौरवों को पता ही नहीं था। अभी भी ऐसे है।" (4.2.74)

(vii) मस्त कलंकीधर फ़क़ीरी स्वभाव:- दुनिया वालों को उलाहना न रह जाए कि (परमपिता) परमात्मा लखपति (और प्रसिद्ध जौहरी) दादा लेखराज के अंदर ही क्यों आया? किसी गरीब या फ़क़ीर के तन का आधार क्यों नहीं लिया? सिर्फ़ कहने मात्र के लिए फ़क़ीर भी कोई ऐसा क्यों हो, जो धर्म का ठेकेदार बनकर कोई ख़ास गद्दी या ठिकाना जमाकर बैठ जाए? इसलिए बाबा ने सुदामा का मिसाल देकर गरीब या फ़क़ीर की सच्ची व्याख्या करते हुए कहा है • "बैगर बनना मासी का घर थोड़े ही है। बैगर के पास तो (धन-पद-मान-मर्तबा) कुछ भी न हो।" (21.1.74) x "जब तक फुल बैगर नहीं बने हैं तब तक फुल प्रिस नहीं बन सकते" x "तुम सुदामा हो। देते क्या हो? (चावल मुट्ठी) लेते क्या हो-विश्व की बादशाही।" (20.1.74) "बाप है ही गरीब निवाज़। गरीबों को ही विश्व की बादशाही देते हैं।" (7.1.74) "(लौकिक या अलौकिक ब्राह्मणों की दुनिया में) "बड़ा पद जो मिला है वह उसी में रहते हैं। पैसे वालों को अपने पैसे ही याद पड़ते हैं। धन-मान-मर्तबा याद पड़ता रहेगा। तुम्हारे पास कुछ है ही नहीं, तो याद क्या पड़ेगा" (सिवाय शिव बाबा के) (ता.26.1.74)

भारतीय परम्परा में आज भी शंकर को फ़क़ीरी वेष में दिखाया जाता है। ज़रूर फ़क़ीर ही रहा होगा। अमीरों के मुक़ाबले में फकीरों को दुनिया वाले भी कलंक जास्ती लगाते हैं। बाबा ने ता.14.5.73 पृ.3 पर कहा भी है • "बड़े-2 आदमियों की गुप्त रहती है।" गरीबों को ही सितम सहन करने पड़ते हैं। यज्ञ के आदि में जो हुआ सो अंत में भी ज़रूर होना है-इसलिए बाबा ने कहा है • "(ब्रह्मा) बाबा गाली खाएँगे तो क्या बच्चे नहीं खाएँगे? सितम सहन करेंगे, अत्याचार होंगे-यह तो ड्रामा में नूँध है। बाबा कहते हैं मेरी कितनी ग्लानि की है? फिर भी ऐसे ही होगा।" (27.5.73 पृ.3 के मध्य में) • "कलंक जिस पर लगाते हैं वही कलंकीधर फिर डबल सिरताज (अर्थात् स्वर्ग स्थापना की ज़िम्मेवारी और पवित्रता दोनों के ताजधारी) बनते हैं। जैसे इन (ब्रह्मा) के लिए, वैसे तुम्हारे (अर्थात् शंकर के) लिए। हमारा यह सितम सहन करने का भी पार्ट है।" (ता.9.7.73 पृ.5 का अंत)

(viii) फुट्टैल-एकाकी-**अड़ियल स्वभाव** :- धर्म स्थापना के प्रतीक बैल (सांड) को भी अड़ियल स्वभाव होने के कारण कोई पालता नहीं। वह धक्के ही खाता रहता है। इसीलिए धर्म के धक्के प्रसिद्ध हैं। सम्पूर्ण पंचानन परं ब्रह्मा (शंकर) को ही अड़ियल बैल कहेंगे क्योंकि ज्ञान चंद्रमा-ब्रह्मा भी शंकर के मस्तक में दिखाया जाता है, अतः ता.17.1.79 पृ.2 के मध्य में बाबा कहते हैं-"मैं जानता हूँ तुमको कितने धक्के खाने पड़ते हैं। समझते हैं भगवान कोई रूप में आ जावेगा। कब बैल पर भी (शंकर की) सवारी दिखाते हैं। अब बैल पर (और कोई की) सवारी कोई होती थोड़े ही है।" (यह तो उसके फुट्टैल अड़ियल स्वभाव की बात है) यही कारण है कि शंकर को कोमल और मीठे स्वभाव वाले ब्रह्मा की तरह 100 या 1000 सहयोगी रूपी भुजाएँ नहीं दिखाई जातीं। बाबा ने कहा भी है • "तुम ऐसे कब नहीं सुनेंगे कि शंकर को (एक साथ इकट्ठी) 100 या 1000 भुजाएँ हैं।" हाँ, एक-दो करके आगे-पीछे नं.वार सहयोगी बनते रहें, वह दूसरी बात है। जब अंत में एकजुट संगठित माला के रूप में (8-8 या)100 सहयोगी देखने में आवेंगे तब तो 'औघड़ वरदानी' शंकर का पार्ट ही समाप्त हो जावेगा। फिर तो सहस्त्रभुजी विराट रूप विष्णु देखने में आवेगा। यह गुप्त साधारण फकीरी पार्ट गुम हो जावेगा।

(ix) तीन पाँव पृथ्वी भी न पाने वाला रमता जोगिया स्वभाव :- जैसे सांड को कोई भी व्यक्ति अपने खेत-बाड़ी या बाड़ा में 3 पैर पृथ्वी का ठिकाना (सदाकाल) नहीं देता, ठीक वही हाल शिव के (मुकर्रर) रथी नन्दीगण बैल का होता है। यही कारण है कि जानबूझकर कलंक रूपी मल धारण करने वाले शंकर (अथवा आदिनाथ या महावीर) को शास्त्रों में अवधूत वेश में रमता जोगी बताया गया है। ता.24.4.70 की मुरली में बाबा ने कहा भी है • "मैं रमता जोगी हूँ किसी को भी (माला का मणका बनाने के लिए) उठा सकता हूँ।" x "कहते हैं जिधर देखो राम ही राम रमता है। अभी (संगमयुग में) रमते तो मनुष्य (रूप में भगवान) हैं ना।" (त्रेतायुगी राम की तो बात ही नहीं, उनके संगमयुगी पार्ट (सदा शिव ज्योति+) शंकर की बात है) ता.11.3.75 x "कहावत है ईश्वरीय सन्तान को 3 पैर पृथ्वी के नहीं मिलती। (शिव) बाप (उसे) विश्व का मालिक (विश्वनाथ) बना देते हैं।" (ता. 4.6.73 पृ.4 के अंत में) x "गाया हुआ है जिनको (पुरुषार्थी जीवन भर) 3 पैर पृथ्वी के भी नहीं मिले , वे सारे विश्व के मालिक बन गए। मनुष्य थोड़े ही समझते हैं।" (ता.1.5.73 पृ.2 मध्यांत) • "बाप कहते हैं देखो- भक्तिमार्ग में मुझ शिव को रहने के लिए कितने अच्छे-2 हीरों-जवाहरातों के महल बनाते हैं। अभी मैं डायरैक्ट आया हूँ, तो देखो कहाँ रहता हूँ। कम से कम राष्ट्रपति जैसा मकान तो होना चाहिए। परंतु, देखो 3 पैर पृथ्वी भी नहीं मिलती।" (ता.1.5.73 पृ.1 का अंत)

(x) तीव्र ज्ञानी :- ता.18.6.70 की वाणी में कहा है • "ज्ञान में रमण करने वाला है रमता जोगी।" ता. 19.6.73 पृ.1 मध्यांत की वाणी के अनुसार ऐसा ज्ञानी तू आत्मा बच्चा शिवबाबा को विशेष प्रिय है। ज्ञान में बड़ा होने के कारण ही देवताओं में सबसे महान- देव-देव महादेव शंकर शिवबाबा का सबसे बड़ा, बाप समान बच्चा साबित हो जाता है। ता.3.5.73 की मुरली में बाबा ने कहा भी है • "बड़े भाई को हमेशा बाप समान कहा जाता है। जिसमें अधिक ज्ञान वह बड़ा ठहरा।" भारतीय परम्परानुसार शिवबाबा का यह बड़ा बच्चा त्रिनेत्री महादेव शंकर ही विश्व के राजभाग का अधिकारी 'विश्वनाथ' (**जगत्**+नाथ) बनता है। **ईश्वरीय ज्ञान की तीव्रता ही उस**

बच्चे में शिवबाबा की प्रवेशता की पक्की पहचान है, अतः बाबा ने कहा है- **"मालूम कैसे पड़ता है कि इनमें बाप भगवान है-जब (ऐसी) नॉलेज देते हैं।"** (ता.27.10.74) • "दान से ही ज्ञान की परख होती है।" (26.6.70) • "मैं तो नॉलेज (मुकर्रर रथ द्वारा) क्रियेट करता हूँ, इसलिए क्रियेटर हूँ।"(नहीं तो कभी नहीं) (7.2.70) "बाप है विचित्र तो उनकी नॉलेज भी विचित्र है।" (ता.1.5.73 पृ.1 का मध्य) x **"जैसे आत्मा को देख नहीं सकते जान सकते हैं। वैसे परम+आत्मा को भी (ज्ञान से) जान सकते हैं। देखने में तो आत्मा या परमात्मा दोनों एक जैसी बिंदी दिखेंगी। बाक़ी तो है सारी नॉलेज।"** (11.1.75)

सत्य ज्ञान की इस पराकाष्ठा के कारण आज शंकर को भी ज्ञान का तीसरा नेत्र दिखाया जाता है। बाबा ने 4.10.74 की वाणी में भी कहा है • " भला कितने भी (संगमयुगी में भी बेहद के) संन्यासी, पंडित, विद्वान आदि हैं, परंतु तीसरा नेत्र देने की कोई में ताकत नहीं है। यह (काम विकार को भस्म करने वाला) तीसरा नेत्र देने के लिए ज्ञान सूर्य (सदा शिवज्योति) बाप को आना पड़ता है।" ता. 3.11.73 की वाणी के अनुसार ब्रह्मा ज्ञान चंद्रमा-माता है, ज्ञानसूर्य बाप नहीं, जबकि बाबा ने कहा है • "हमको बाप जैसा सम्पूर्ण ज्ञान सागर बनना है" (ता.8.8.74) क्योंकि • "बुद्धि में फुल नॉलेज आने से वर्ल्ड की फुल राजाई मिल जावेगी।" (13.1.74) "जिसमें (जितनी) जास्ती नॉलेज होगी वह (उतना जास्ती) ऊँच पद पावेंगे।" (26.1.74) यही कारण है कि ब्रह्मा की आत्मा कृष्ण के नाम-रूप से सिर्फ़ 9 लाख की सतयुगी दुनिया का मालिक बनेगी। इसलिए उसे श्रीनाथ अर्थात् श्रेष्ठ देवों का नाथ कहा जाता है। वह सारे जगत् अर्थात् 5-7सौ करोड़ की विश्व का मालिक नहीं बनेगी। सारे विश्व का मालिक तो ज्ञान बाण चलाने में अर्जुन (ब्रह्मा) से भी तीखा कोई (एकलव्य) भील जैसा पुरुषार्थी ही बनेगा। बाबा ने 19.3.73 की मुरली में कहा भी है • "कई (बाप समान 8) बच्चे ऐसे भी हैं जो माँ-बाप से भी अच्छा पढ़ाते हैं। शिवबाबा की तो बात ही ऊँच ठहरी, परंतु मम्मा-बाबा से भी इस समय होशियार बच्चे हैं (जंगली) x "भील अर्जुन से भी तीखा गया। बाहर में रहने वाले ने तीर पूरा चट कर लिया। तब तो बाबा कहते हैं घर वाले इतना उठा नहीं सकते हैं, जितना बाहर वाले। कहा जाता है घर की गंगा को मान नहीं देते हैं, (3.8.74 पृ.3) यही कारण है कि माउण्ट आबू में 18 वर्ष चलाई गई ईश्वरीय वाणी का रिकॉर्ड भी खलास कर दिया गया।

चूँकि त्रेतायुगी राम की आत्मा ही कलियुग में तुलसीदास और पुरुषोत्तम संगमयुग में शंकर के नाम-रूप से विचार-सागर-मंथन रूपी ज्ञान की भांग घोटकर अथवा ज्ञान का चंदन घिसकर विश्व की बादशाही का तिलक पाने लायक बनती है, अतः बाबा ने कहा है • "मैं स्वर्ग का रचयिता तुमको राजतिलक न दूँगा तो कौन देगा? कहते हैं ना तुलसीदास चंदन घिसे(तिलक देत रघुवीर) यह बात यहाँ (संगमयुग) की है।" (ता.5.3.73 पृ.3 के शुरू में) x "जब ज्ञान घिसेंगे तब ही राजतिलक लायक बनेंगे।" (ता.8.8.73 पृ.3) शंकर द्वारा किए गए इसी विचार-मंथन की यादगार शास्त्रों में 'सागर-मंथन' की कथा है। 'गंगा-अवतरण' प्रसंग में ज्ञान-गंगा का शंकर के मस्तक में दीर्घकाल तक भ्रमण करने का अर्थ भी यही है। 'अपनी घोट तो नशा चढ़े' वाली कहावत भी ज्ञान की भांग घोटने वाले शंकर की नशीली आँखों से इसीलिए सम्बंध रखती है कि उन्होंने शिव पिता की वाणी पर गहराई से मनन-चिंतन किया था। बाबा ने कहा भी है • "विचार-मंथन का नाम बहुत बाला है। एक दिन (हद-बेहद की)

गवर्मेंट भी तुमको कहेगी, यह नॉलेज सभी को दो" (9.3.73) क्योंकि बाबा ने 26.1.74 की वाणी में कहा है • "विचार-मंथन करने वालों का ही चलेगा,सर्विस नहीं करते (डिस्सर्विस ही करते हैं) तो विचार-मंथन चल न सके।" x "(शास्त्रों में) यह बात ठीक है- विचार-सागर-मंथन हुआ। कलश लक्ष्मी (अर्थात् चतुर्मुखी ब्रह्मा सो विष्णुदेवी) को दिया। उसने फिर औरों को अमृत पिलाया। तब स्वर्ग के गेट खुले।" (7.6.74)

शंकर जैसे ज्ञानी तू आत्मा-महारथी बच्चों की पहचान देते हुए बाबा ने 25.5.74 की वाणी में कहा है • "महारथियों की बुद्धि में प्वॉइंट बैठती होगी। लिखते रहें तो अच्छी-2 प्वॉइंट्स अलग करते रहें। प्वॉइंट्स का वज़न करें। परंतु इतनी मेहनत तो कोई करते नहीं। मुश्किल कोई नोट्स रखते होंगे.....डायरी तो सदैव पॉकेट में रहनी चाहिए नोट करने के लिए। सबसे जास्ती तुम्हें (सदाशिव ज्योति के सबसे बड़े बच्चे शंकर को) नोट करना है।" x "मुरली तुम बच्चों को 5/6 बार पढ़नी चाहिए, सुननी चाहिए। तब ही बुद्धि में बैठेगी।" (31.8.73)

(xi) तीव्र योगी :- योगबल से नं.वार विश्व की बादशाही का स्कॉलरशिप पाने वाले बाप समान अष्ट रत्नों की विशेष पहचान देते हुए बाबा ने ता. 3.1.74 की मुरली में कहा है • "स्कॉलरशिप (होल्डर) तो उनको कहेंगे जो (संकल्पी भी) सजाएँ नहीं खाते। उनकी याद की रफ़्तार और ज्ञान की रफ़्तार फर्स्ट क्लास रहेगी।" x "ज्ञान-योग में प्रत्यक्ष प्रमाण बनने वाले ही बाप को प्रत्यक्ष करेंगे। (6.8.70) x "लास्ट सो फास्ट। नए-2 पुरानों से तीखे चले जाते हैं। बाप से पूरा योग लग जाए तो बहुत ऊँच चला जावेगा। सारा मदार है ही योग पर।" (4.9.74) यहाँ तक कि लौकिक और अलौकिक परिवार के बंधनों से सर्वथा मुक्त रहने वाली ऐसी आत्माएँ ब्रह्मा बाबा के पुरुषार्थ को भी जीते जी क्रॉस कर जावेंगी। इसलिए 2.12.74 की मुरली में कहा है • "इस याद की यात्रा में तुम मेरे (ब्रह्मा बाबा) से भी तीखे जाते हो, क्योंकि इनके ऊपर तो (यज्ञ की पालना का) मामला बहुत है।"

(xii) सामना करने और समाने की तीव्र शक्ति :- ता.16.1.75 की 'अव्यक्त-वाणी' पृ.16 की घोषणानुसार बैकबोन बाप-दादा शंकर समान किसी ज्वालामूर्त बच्चे के द्वारा लौकिक और अलौकिक दुनिया के आसुरी सम्प्रदायों का सामना करने के लिए ही विशेष रूप से प्रत्यक्ष होते हैं। अतः ता. 21.9.75 की अ.वाणी पृ.121 के मध्य में कहा है • "(ज्ञान)सागर (बाप) में विशेष दो शक्तियाँ सदैव देखने में आवेंगी- (ज्ञान) लहरों द्वारा सामना भी करते हैं और हर व्यक्ति वा वस्तु को स्वयं में समा भी लेते हैं।" x "स्थापना के आदि में तो सारी दुनिया एक तरफ़, एक आत्मा दूसरी तरफ़ थी ।.....पहले निमित्त तो एक आत्मा बनी ना.....जो आदि सो अंत (में फिर वही होता है)।" (अव्यक्तवाणी 9.4.73 पृ.19 के अंत)

ओमशांतिः।। ओमक्रांतिः।।

॥ॐ॥ परमात्मा-प्रत्यक्षता बॉम्ब ॥ ट्रायल॥ नगाड़ा नं. 6

विश्व महाराजन श्री (आदि)लक्ष्मी-नारायण उर्फ़ शंकर-पार्वती

(1) शंकर-पार्वती ही संगमयुगी (आदि) ल.ना. हैं जिनके बच्चे राधा-कृष्ण होंगे :-

दिव्य साक्षात्कार के आधार से बनवाए गए 4 मुख्य चित्रों में से ल.ना. का यह पुराना चित्र भी मम्मा-बाबा के समय का है। यहाँ चित्र के अंदर की स्पष्ट लिखत सामने दे दी गई है। इस चित्र के मध्य में वर्तमान मनुष्य-जीवन

का लक्ष्य **'नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी'** बनने का दिखाया गया है। चित्र में नीचे दिखाए गए (16 कला सं.) राधा-कृष्ण जैसे बच्चों का जन्म इन्हीं (आदि) ल.ना. के जैसा योगयुक्त गृहस्थ जीवन बनाने वाले विश्व विजेताओं के यहाँ होगा। यह (16 कला सतयुग के) राधा-कृष्ण जब बड़े होंगे तो अपने (पु.संगम के कलातीत) माँ-बाप का ल.ना. वाला टाइटिल खुद भी धारण करेंगे और (फिर) अगले जन्मों में आने वाली सतयुगी 7 पीढ़ियों में भी यही टाइटिल (क्रिश्चियन्स में किंग एडवर्ड I-II-III जैसा) चलता रहेगा। तात्पर्य है कि (16 कला सतयुगी) राधा-कृष्ण बड़े होकर चित्र के मध्य में चित्रित पु.संगमयुगी ल.ना. नहीं बनेंगे; बल्कि उन जैसे ही 16 कला सम्पूर्ण सतयुगी ल.ना. बनेंगे; क्योंकि चित्र के मध्य में चित्रित (कलातीत) ल.ना. तो राधा-कृष्ण के भी रचयिता माँ-बाप हैं। चूँकि राधा-कृष्ण नई मनुष्य-सृष्टि के पहले पत्ते हैं; अतः उनके माँ-बाप (संगमयुगी ल.ना.) इस साकारी मनुष्य-सृष्टि के साकार बीजरूप रचयिता बाप हैं। साकार (बीजरूप) रचयिता से ही साकार (सृष्टि-वृक्ष के) राधा-कृष्ण रूपी रचना (रूपी पत्तों) की पैदाइश हो सकती है। (अन्यथा) निराकार ज्योतिबिंदु (सदा) शिव(ज्योति) से साकार राधा-कृष्ण की पैदाइश कैसे होगी?

सूक्ष्म ज्योतिबिंदु शिव की रचना भी सूक्ष्म और आकारी (सूक्ष्मवतन वासी) होनी चाहिए। अतः चित्र में सबसे ऊपर त्रिमूर्ति में (अति)सूक्ष्म रचयिता शिव पिता की (मानसी मनन-चिन्तनशील) सूक्ष्म रचना रूपी (नं.वार) बच्चे ब्र.वि.शं. को दिखाया गया है। जबकि त्रिमूर्ति के नीचे स्थूल और साकारी सृष्टि के बीजरूप रचयिता संगमयुगी ल.ना. (प्रजापिता+ब्रह्मा या शंकर-पार्वती) को उनकी स्थूल रचना- राधा-कृष्ण रूपी बच्चों के ऊपर दिखाया गया है। इस तरह सारा ही चित्र रचयिता के बाद रचना के क्रम से चित्रित है, क्योंकि रचयिता (माँ-)बाप की स्टेज, रचना रूपी (16 कला सतयुग के) बच्चों से ऊपर ही होती है, नीचे नहीं। यही कारण है कि चित्र के हेडिंग में सबसे ऊपर मोटे अक्षरों की लिखत नं.1 में **'स्वर्ग के रचयिता और उनकी'** शब्द बहुवचन में साकार रचयिता ल. और ना. दोनों के लिए प्रयोग हुए हैं; क्योंकि साकार रचना रचने के लिए स्त्री-पुरुष दोनों (का श्रेष्ठाचारी संयोग) चाहिए। अकेले ज्योतिबिंदु शिवपिता से साकारी सृष्टि की पैदाइश नहीं हो सकती; क्योंकि निराकारी शिवपिता से तो ज्ञान का निराकारी वरसा ही मिलेगा। कृष्ण जैसे (16 कला) सतयुगी बच्चों को साकार में सतयुगी राजधानी का वरसा और ल.ना. का टाइटिल देने वाला तो कोई साकारी बाप ही चाहिए; क्योंकि शिव(परम-पिता) तो स्वर्ग में जाते ही नहीं। बाबा ने ता.7.10.73 पृ.3 की मु. के अंत में कहा भी है ✸ "अब उनसे वर्सा लेना है तो किस चीज़ का? निराकार से क्या निराकारी वर्सा चाहिए? प्रश्न उठता है।"

जगत के योगियों और तपस्वियों में ऊँचे-से-ऊँचे पुरुषार्थी योगीश्वर शंकर-पार्वती भक्तिमार्ग में प्राचीन काल से लेकर आज तक सारी मानवी सृष्टि के नामी-ग्रामी सर्वप्रथम माता-पिता गाए जाते हैं। (जगतं पितरं वंदे पार्वती-परमेश्वरौ) ईसाई-मुस्लिम और जैन सभ्यता में क्रमशः इन्हें एडम-ईव, आदम-हव्वा और आदिदेव-आदिदेवी नाम से पुकारा गया है। बाबा ने 18.5.73 पृ.2 की मुरली में कहा है ✸ "त्वमेव माता च पिता... कहते हैं तो फादर (साकार लिंग) के साथ मदर (ज्ञानजल+आधारी) भी चाहिए। मनुष्य समझते हैं एडम ब्रह्मा ईव सरस्वती। वास्तव में यह रॉंग है।" क्योंकि सरस्वती ब्रह्मा की बेटी थी; पत्नी नहीं। परंतु ब्रह्मा-सरस्वती

जब अपना पूर्व सम्बंध और (दाढ़ी-मूंछ वाला पतित) शरीर त्यागकर सम्पूर्ण बनने के बाद शंकर-पार्वती जैसे तीव्र पुरुषार्थी बच्चों में प्रवेश करते हैं तो (पु.संगमयुगी श्रेष्ठ संग के रंग से अर्धनारीश्वर) कहे जाते हैं।

अब चूँकि राम-सीता की आत्माएँ ही पुरुषोत्तम संगमयुग के अंत और सतयुग के आदिकाल में संगमयुगी ल.ना. उर्फ़ शंकर-पार्वती (अर्धनारीश्वर) के नाम-रूप से ल.ना. के टाइटिल वाली 1250 वर्षीय सतयुगी डायनेस्टी आरम्भ करती हैं और त्रेता के आदि में फिर वही आत्माएँ राम-सीता के टाइटिल वाली 1250 वर्षीय (13 जन्मों की त्रेतायुगी) डायनेस्टी शुरू करती हैं; अतः चित्र में इन संगमयुगी ल.ना. उर्फ़ शंकर-पार्वती के पैरों तले की लिखत नं.3 में **'संवत् 1 से 2500 वर्ष'** लिखा है। वास्तव में 2500 वर्ष तक सतयुगी ल.ना. (राधा-कृष्ण) का राज्य चलता ही नहीं; ल.ना. का राज्य तो 1250 वर्ष तक ही चलता है। बाद में 1250 वर्ष त्रेता के रामसीता का राज्य चलता है। इसीलिए ता.25.5.72 की मु. में कहा गया है ✸"यह अभी जानते हैं-हम सो (संगमयुगी) ल.ना. बनते हैं। हम सो (त्रेतायुगी) रामसीता बनेंगे।" इसी तरह ता.9.11.72 की मु. में कहा है ✸ "सतयुग (आदि) में ल.ना. का राज्य है। वही फिर त्रेता में भी राज्य करते हैं।"

चूँकि त्रेतायुगी राम के अंतिम 84वें संगमयुगी शरीर के द्वारा ही निराकार राम शिव प्रैक्टिकल में सतयुग की स्थापना कराते हैं; इसलिए सतयुग को भी रामराज्य या रामपुरी कहा जाता है। बाबा ने ता.6.3.75 की मु. में कहा भी है ✸ "सतयुग को रामपुरी कहा जाता है। अक्षर कहते हैं; परंतु यह नहीं जानते कि राम कौन है?" ✸ "जिस नाम से (रामराज्य की) स्थापना होती है तो जरूर उनका ही नाम रखेंगे ना!" (ता.24.5.74) ✸ "रामराज्य स्थापन हुआ। नाम राम रख दिया। वास्तव में नाम शिव है।" (ता. 19.9.72) परंतु शिव तो स्वर्ग में जाते ही नहीं; अतः शिवराज्य, नारायणराज्य, कृष्ण-राज्य का गायन नहीं है; रामराज्य का ही गायन है। बाबा ने 2.8.76 पृ.3 की मु. में कहा है ✸ **"रामराज्य है सतयुग के आदि में।"** जबकि 15.12.72 ता. की वाणी में यह भी कहा है ✸ **"राम भी वास्तव में जगतजीत था ना।"** वास्तव पु.संगम में 500 करोड़ की विश्व को जगत कहा जाता है। यही कारण है कि चित्र में ल.ना. के पैरों तलों की लिखत नं.4 में **'विश्व महाराजन श्री नारायण'** शब्द प्रयोग किया गया है। वास्तव में राधा-कृष्ण की आत्माएँ 500 करोड़ की विश्व पर संगमयुगी राजाई नहीं करेंगी। वे सिर्फ़ 9 लाख की (सतयुगी-आदि की) आबादी पर राजाई करेंगी। इसलिए (16 कला) राधा-कृष्ण को विश्व महाराजन न कहकर सतयुग का मालिक कह सकते हैं। बाबा ने ता.8.1.75 की वाणी में कहा भी है ✸"ऊँचे से ऊँचे बाप से ऊँचे से ऊँचा वर्सा मिलता है। वह (वरसा) है ही भगवान (भगवती का) फिर सेकिण्ड नम्बर में हैं ल.ना. सतयुग के मालिक।" राधा-कृष्ण को देवी-देवता कहेंगे। भगवान-भगवती नहीं; जबकि बाबा ने ता.23.5.76 पृ.2 के अंत में कहा है ✸"भगवान (शिव) ने ज़रूर भगवान-भगवती पैदा किए।" ता.17.7.74 की वाणी में कहा है-"नारायण से पहले तो श्रीकृष्ण है। फिर तुम ऐसा क्यों कहते हो कि नर से नारायण बने। क्यों नहीं कहते हो-नर से श्री कृष्ण बने। पहले नारायण थोड़े ही बनेंगे। पहले नर से श्रीकृष्ण बनेंगे न (कौन-ब्रह्मा).....बाप कहते हैं अब तुम (अर्थात् हम एडवांस पार्टी के बच्चे) नर से नारायण नारी से लक्ष्मी बनने वाले हो।" स्पष्ट है कि नर से कृष्ण तो ब्रह्मा ही बनेंगे-अगले जन्म में। परंतु हम बच्चे इसी संगमयुगी जन्म से नर से नारायण बनते हैं। इसीलिए नर से ना.

बनने का गायन ज़्यादा है। शिवबाबा ने इन्हीं संगमयुगी ना. को समझदार बताया है। जबकि दूसरे सतयुगी नारायणों को ज्ञान न होने के कारण बुद्धू बताया है। ता. 27.7.74 पृ.3 के शुरू में कहा है ✸"यह ल.ना. समझदार हैं तब तो (500 करोड़ की) विश्व के मालिक हैं। बेसमझ तो विश्व के मालिक बन न सकें।" ता. 30.9.74 पृ.3 के मध्य में कहा है ✸"यह (संगमयुगी) ल.ना. आदि चैतन्य में थे तो सुख ही सुख था। सब धर्म वाले उनको बहिश्त गार्डन ऑफ अल्लाह कहते हैं।" सब धर्म वाले संगमयुग में ही होंगे, सतयुग में नहीं। ता. 5.2.75 पृ.1 के शुरू में इन्हीं संगमयुगी ल.ना. के लिए कहा है ✸"अब हीरे जैसा जन्म तो सब कहेंगे-इन ल.ना. का है।" सतयुग में राधा-कृष्ण का जन्म तो देवताई सोने समान जन्म कहा जावेगा; हीरे समान नहीं। यही कारण है कि चित्र में भी ल.ना. को संगमयुगी ज्ञान प्रकाश की दुनिया में दिखाया गया है; जबकि राधाकृष्ण को फूलपत्तियों वाली सतयुगी दुनिया में दिखाया गया है।

(2) संगमयुग के वर्तमान जन्म ही में (आदि) ल.ना. बनना है :-

चित्र में ल.ना. के ऊपर लिखत नं.2 में स्पष्ट लिखा हुआ है-"सतयुगी दैवी स्वराज्य आपका ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है।" तात्पर्य है कि ईश्वरीय जन्म यहाँ लिया है तो विश्व की बादशाही का जन्मसिद्ध अधिकार अगले जन्म में क्यों मिले? स्पष्ट है कि इसी जन्म में और इसी नारकीय दुनिया के बीच स्वर्ग का वरसा लेना है। मरने के बाद नहीं। वह तो अंधश्रद्धा कही जावेगी। ता.9.6.74 की मुरली में बाबा ने कहा भी है ✸"(बेहद का) बाप है ही स्वर्ग का रचयिता। तो ज़रूर स्वर्ग का वरसा ही देंगे। और देंगे भी ज़रूर (रौरव कलियुगी) नर्क में।" इसी जन्म में यदि 16 कला सम्पूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति न हो तो ईश्वरीय पढ़ाई अथवा योगबल की महिमा कैसे होगी? बाबा ने कहा भी है ✸"तुम बच्चों को 16 कला सम्पूर्ण (भी) यहाँ बनना है।" (ता. 25.3.75) ✸"उत्तम ते उत्तम पुरुष हैं ही यह (इन्द्रियजीत आदि ल.ना.) जो पुरुषोत्तम युग पर ही बनते हैं।" (ता. 10.3.74 पृ.3 का आदि) ✸ "यह ल.ना. स्वर्ग के मालिक कैसे बने? अभी तुम्हें बाप सुना रहे हैं- इस (सहज) राजयोग द्वारा इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही यह बनते हैं।" (ता. 5.12.74) ✸"वह (सतयुगी ल.ना.) तो (संगम में) दान-पुण्य करने से राजा पास जन्म लेने से प्रिंस बनते हैं। परंतु तुम इस (ईश्वरीय) पढ़ाई से (डायरैक्ट) राजा बनते हो।" (ता.7.7.74)

चूँकि नियम प्रमाण सूक्ष्म से ही स्थूल की रचना होती है। जैसे अति सूक्ष्म बड़ के बीज से विशाल झाड़ बन जाता है; अतः 9.1.75 की 'अव्यक्त वाणी' पृ.11 पर बाबा ने कहा है ✸"अपने कमज़ोर संकल्पों को समर्थ बनाओ। यह जो कहावत है कि 'संकल्प से सृष्टि रची'-यह इस (संगमयुगी) समय का गायन है।" स्पष्ट है कि श्रीमत प्रमाण विधि-विधानपूर्वक ज्ञानयुक्त संकल्पों के बीज वाले सशक्त पुरुषार्थी बच्चे इसी जन्म में सम्पूर्ण सिद्धियाँ प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा समझना गलत है कि 16 कला सम्पूर्ण सतयुग के पहले ल.ना. तो मम्मा-बाबा बन गए; अतएव हमें तो दूसरी सतयुगी गद्दी से लेकर आठवीं गद्दी के कम कला वाले ल.ना. का पद लेने के सिवाय दूसरा कोई चारा ही नहीं-इस तरह की मजबूरी के कमजोर संकल्प चलाने वाली आत्माएँ छोटे दिल वाली कही जावेंगी। बाप समान महत्वाकांक्षी आत्माएँ थोड़े में सन्तुष्ट नहीं हो सकतीं। उन्हें तो कलातीत सम्पूर्ण लक्ष्य ही चाहिए और वह लक्ष्य है ही 16 कला सं. कृष्ण के जन्मदाता संगमयुगी ल.ना. बाबा ने कई बार कहा भी है कि

बच्चे ऐसा पुरुषार्थ करना है जो मम्मा-बाबा (ब्रह्मा-सरस्वती) आकर तुम्हारे वारिसदार बनें।

(3) संगमयुगी ल.ना. जैसे युगलों की निरोगी कंचनकाया इसी जन्म में बनेगी।

वास्तव में राधाकृष्ण जैसे (दैवी) बच्चों को जन्म देने वाले माँ-बाप भी तो योगबल से सम्पूर्ण निर्विकारी बन जाना चाहिए। विकारी और भ्रष्टाचारी देहधारियों से तो राधा-कृष्ण जैसी देवात्माएँ जन्म नहीं लेंगी; क्योंकि तामसी 5 तत्वों वाली धरणी पर तो देवताओं की परछाया भी नहीं पड़ सकती। ऐसी सम्पूर्ण योगी और ज्ञानी तू आत्माएँ; जिन्होंने अपने शरीर के 5 तत्वों को भी योगबल द्वारा इसी (पु.) संगमयुगी जन्म में परिवर्तित करके दीर्घायु और निरोगी कंचन काया जैसी सौ प्रतिशत हेल्थ प्राप्त की हो, वही तो कृष्ण जैसे बच्चों की बाप समान बीजरूप आत्माएँ विख्यात हो सकती हैं। बाबा ने इस संगमयुगी फर्स्ट जन्म के लिए ता.21.10.74 की मुरली में कहा है ✸ "बाप तुम बच्चों को 21 जन्मों के लिए 100% हेल्दी बनाने आए हैं।" • "अंत में जब एकदम कर्म+अतीत अवस्था बन जावेगी तो निरोगी बनेंगे।"(28.2.73) • "तुम बच्चे योगबल से (शरीर के) 5 तत्वों को भी सतो-प्रधान बनाते हो।" • "प्रकृति को भी सतोप्रधान बनाना है। तभी विश्व परिवर्तन होगा। (अ.वाणी 20.5.73)

बाबा ने धोबी और सर्प का मिसाल देकर बताया है कि पुरानी खल छोड़ने पर भी सर्प तो जीता ही रहता है। मर नहीं जाता। इसी को कायाकल्प कहा जाता है। • " सर्प एक खल छोड़ दूसरी लेता है। उनको कोई मरना नहीं कहा जाता है -एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं-यह अभ्यास यहीं डालना है।" (22.2.75) • "मैं कितना अच्छा धोबी हूँ। तुम्हारा (शरीर रूपी) वस्त्र कितना शुद्ध बनाता हूँ। ऐसा धोबी कब देखा।" (ता. 25.5.73 पृ.3) ऐसा धोबी किस काम का जो शरीर रूपी वस्त्र ही फाड़कर रख दे और कहे कि अगले जन्म में नया वस्त्र मिल जाएगा? वैसे भी सतयुग में तो शरीर रूपी वस्त्र शुद्ध बनाने का प्रश्न ही नहीं; क्योंकि बाबा ने 2.11.70 की मु. में कहा है ✸आत्मा और काया कंचन बन जावेंगे-यह कमाल है ना। इसी जन्म में कंचन काया बने तो कमाल है तो अपने को ऐसा (योगबल से) श्रृंगार करना है।" • "योगबल से तुम कितने कंचन बने रहे हो? आत्मा और काया दोनों कंचन बनती है।" (ता. 15.10.74) • "आत्मा और शरीर रूपी नैया को पार ले जाने वाला एक ही बाप खिवैया है।" (3.11.74) अर्थात् इस शरीर से ही योगबल से जीते जी कंचन बनकर नर्क के पार स्वर्ग में जाते हैं। तब तो राधाकृष्ण जैसे बच्चों का गर्भ-महल से जन्म होगा।

यह धारणा सर्वथा गलत है कि आत्मा के सतोप्रधान बनते ही मृत्यु हो जावेगी। नहीं। सतोप्रधान आत्मा बुद्धियोग द्वारा इस शरीर से डिटैच हो जावेगी। शिवबाबा ने 25.8.74 की मुरली में कहा भी है ✸"ऊपर जाना माना मरना। शरीर छोड़ना। मरना कौन चाहते? यहाँ तो बाप ने कहा तुम इस शरीर को भी भूल जाओ। जीते जी मरना तुमको सिखाते हैं।" जो जीते जी मरने की कला नहीं सीखेंगे, उन्हों की ही शारीरिक मृत्यु होनी है। वे स्वर्ग में जीते जी जाने के काबिल नहीं। अमरनाथ बाप के हम डायरैक्ट बच्चे तो मृत्यु पर भी विजय पाकर इच्छा मृत्यु धारण करने वाले बनते हैं। बाबा ने 8.10.74 पृ.2 की मु. में कहा भी है ✸"यह बहुत वैल्युएबल शरीर है। इस शरीर द्वारा ही आत्मा को बाप द्वारा (विश्व की बादशाही की) लॉटरी मिलती है।" **ओमशांतिः।**

प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सृष्टिचक्र अर्थात् सुदर्शन-चक्र फिर से घूमा

(1) 5000 वर्षीय ड्रामा में बीजरुपों के चारों युगों की शूटिंग या रिहर्सल संगमयुग के (लगभग) 50-60 वर्षों में होती है :-

(i) बेहद ड्रामा की रिहर्सल का रहस्य :- ऊपर के गोले का चित्र ब्रह्मा बाबा द्वारा संदेशियों से साक्षात्कार में बनवाए गए मुख्य 4 पुराने चित्रों में से एक है। इसमें मानवीय सृष्टि रूपी रंगमंच का 5000 वर्षीय कालक्रम 4 भागों में बाँटा गया है। दुनियावी हद के ड्रामा की तरह इस बेहद के नाटक में भी 4 दृश्य, चार युगों के रूप में दिखाए गए हैं। मुरलियों में इस बेहद ड्रामा के जिन 5-7 मुख्य पार्टधारियों का ज़िक्र आया है, उन्हें यहाँ नं.वार युगानुरूप कालक्रम से चित्रित किया गया है-अर्थात् सतयुग में (16 कला सं.) राधा[1]-कृष्ण[2], त्रेता में राम[3]-सीता[4], द्वापर में इब्राहीम[5], बुद्ध[6] और क्राइस्ट[7] को क्रमश: दिखाया गया है। बाकी के काले कलियुग में आने वाले धर्म और धर्मपिताएँ तो इन्हीं 4 मुख्य धर्मों के विकृत रूप हैं। इसलिए उन्हें यहाँ (कलियुग में) चित्रित नहीं किया गया है। इन धर्मपिताओं रूपी मुख्य पार्टधारियों और इनके फॉलोअर्स को नं.वार इशारे देकर सृष्टि रूपी रंगमंच पर भेजने वाला बेहद का डायरैक्टर (सदा)शिव ज्योति है जो चारों युगों रूपी सीन-सीनरियों अर्थात् पर्दों के पीछे, सृष्टि रूपी घड़ी के दो काँटों के मध्य में दिखाए गए अधिकतम (सौ) वर्षीय संगमयुग में गुप्त रहकर निर्देशक या डायरैक्टर का कार्य करता है। यह पुरुषोत्तम संगमयुग ही ऐसा महत्वपूर्ण समय है जहाँ 500-700 करोड़ पार्टधारियों के (भी) 5000 वर्षीय (ब्रॉड) ड्रामा की युगानुरूप शूटिंग नं.वार कराई जाती है। ता.30.5.73 पृ.78 की अ.वाणी के शुरू में बाबा ने इस संगमयुग को (बीजरूप) आत्माओं के रिकॉर्ड के भरने का समय बताया है • "सर्वश्रेष्ठ युग क्यों कहते हो? क्योंकि आत्मा में हर प्रकार के धर्म की, राज्य की, श्रेष्ठ संस्कारों की, श्रेष्ठ सम्बंधों की और श्रेष्ठ गुणों की सर्वश्रेष्ठता अभी रिकॉर्ड के समान भरती जाती है। 84 जन्मों की चढ़ती कला और उतरती कला दोनों के संस्कार इस (मानसी शूटिंग के) समय आत्मा में भरते हो।" • "आत्मा में हर जन्म के संस्कारों का रिकॉर्ड इस समय भर रहे हो।" (अ.वाणी ता.9.5.77 पृ.1) • "संगमयुग का रहस्यमय ड्रामा ही भविष्य (5000 वर्ष) में रिपीट होगा।" (ता. 23.3.70)• "तुम्हारी कर्मातीत अवस्था होने तक रिहर्सल होती रहेगी।" (ता.22.6.70) • "जो भी सारी दुनिया की (5-7 सौ करोड़) आत्माएँ हैं उनको पार्ट बजाना है। जैसे नए सिरे से शूटिंग होती जाती है।" (ता. 9.9.74 पृ.3) •"इस (संगमयुगी) ब्राह्मण जन्म में पूर्वकल्प का पार्ट ही इमर्ज होगा।" (ता. 3.12.70)

(ii) संगमयुग की आयु :- बाबा ने सामान्य रूप से संगमयुग की आयु 40 वर्ष, 50 वर्ष, 50/60 वर्ष और ज़्यादा से ज़्यादा 100 वर्ष (भी) बताई है • "इस संगमयुग को बहुत में बहुत 100 वर्ष दो।" (ता.1.12.72) • "50 नहीं तो 100 वर्ष सतयुगी राज्य शुरू होने में लगते हैं।" (ता.25.9.71) इसमें मूँझने की तो बात ही नहीं; सिर्फ़ प्रसंगानुसार इन भिन्न अंकों का गुह्य राज़ समझना है- 100 वर्षीय संगमयुग में से मन-बुद्धि रूपी आत्म-सुधार से सम्बंधित सूक्ष्म राजधानी स्थापना का कार्य पहले 50/60 वर्षों में पूरा होता है; (ता.24.7.72 एवं 25.7.77)

जबकि सतयुगी सृष्टि के बाल-बच्चों की पैदाइश से लेकर माला (रूपी संगठनों रूप) महल माणियों के निर्माण सम्बन्धी स्थूल स्थापना का कार्य बाद के वर्षों में सम्पन्न होता रहता है। इस तरह संगमयुग की 100 वर्ष आयु भी तर्क संगत है। बाक़ी पतित से पावन-मर्यादा पुरुषोत्तम बनने के लिए ज्ञानयज्ञ रचने या ईश्वर द्वारा डायरैक्ट पढ़ाई पढ़ाने (वाला टीचर) का समय (सन् 1977 से) मुरलियों में 40-50 वर्ष निर्धारित किया गया है • "यह पु. संगमयुग 50 वर्ष का होता है। पु. मास और पु. वर्ष का भी अर्थ नहीं जानते (वास्तव में पु.मास और वर्ष, पु.दिन और पु.बनने की घड़ी इन्हीं 50 वर्षों में प्रत्यक्ष होती हैं) ता.2.3.74 • "इतना 50 वर्ष कोई भी यज्ञ नहीं चलता। तुम्हारा यह (ज्ञान-)यज्ञ 50 वर्ष चलता है।" (ता.11.5.73) • "महासागर और नदियों का मेला जैसे 40-50(-60 और 100)वर्ष चलता ही है।" (ता. 25.7.72) • "बाबा आकर 50 वर्ष पत्थर से पारसबुद्धि बनाते हैं।" (ता.5.6.74) • "40-50 वर्ष बाप आकर तुम ब्राह्मणों को पढ़ाते हैं।" (ता. 9.4.74) • "तमो से सतोप्रधान बनने में 40 से 50 वर्ष लगते हैं।" (ता.6.10.74 पृ.2)

(iii) सतयुगी आत्माओं के ज्ञान में आने की रिहर्सल :- (सन् 36 से 76 तक) 100 वर्षीय संगमयुग के प्रथम 40 वर्षों में सिर्फ़ सतयुगी (देव) आत्माओं को संदेश देने की शूटिग होती है। अर्थात् ब्रह्मा-सरस्वती की अध्यक्षता में अथवा ब्राह्मणों की 40 वर्षीय संगमयुगी दुनिया में 2 करोड़ मनुष्यात्माओं का आगमन सन् 36 से 76 तक होता है • "जितने भी (8-10 करोड़) देवी-देवताएँ सतयुग-त्रेता में हैं, वह सब गुप्त यहाँ ही बनते हैं।" (ता.5.2.74) क्योंकि बाबा ने 22.3.71 और 76 पृ.1 के अंत में कहा है •"सतयुग-अंत में वृद्धि होकर 9 लाख से 2 करोड़ हो गए होंगे।" यह कार्य सतयुग में चित्रित (16 कला सं.) राधा-कृष्ण की आत्माओं द्वारा उनके अंतिम 84वें संगमयुगी शरीरों के नाम-रूप- ब्रह्मा-सरस्वती के प्रतिनिधित्व में पूरा हो जाता है। बाबा ने ता.11.6.73 की मुरली में कहा भी है • (चतुर्भुजी) "ब्रह्मा 100 वर्ष की आयु में ख़तम हो जाता है।" पुरानी सीढ़ी के चित्र में नीचे लिखे 40 वर्षीय पुरुषोत्तम संगमयुग की आयु सन् 76/77 से पूरा होने के साथ ही 4 भुजा वाले ब्रह्मा की 100 वर्ष की आयु 1987 में पूरी हो चुकी। सन् 73 के अंत में हुए दिल्ली मेले की मैगज़ीन (ज्ञानामृत) के अंतिम पृष्ठ पर कुल 1 करोड़ आत्माओं को संदेश देने का उल्लेख है। इसके बाद सन् 76/77 तक लगे मेलों आदि में कुल मिलाकर 2 मनुष्यात्माओं (आदि ल.ना.) ने तो अवश्य ही तहे दिल से बाप का संदेश लेते हुए नं.वार ब्रह्मा+बाप को पहचान लिया है। बाबा ने 25.9.72 की मुरली में कहा भी है • "अगर थोड़ा भी (ब्रह्मा को) पहचान लिया तो सतयुग में क्यों नहीं आवेंगे।" (क्योंकि) "(परं)ब्रह्मा द्वारा हमको सूर्यवंशी पद मिलता है (चंद्रवंशी नहीं) ता. 19.12.72 वैसे भी सन् 76 तक 33 करोड़ देवात्माओं को संदेश मिलने की बात किसी तरह भी सिद्ध नहीं होती। क्योंकि सारे भारत की कुल आबादी ही 60-65 करोड़ (रही) होगी; जबकि अ.वा.ता.25.5.73 पृ.73 पर साफ़ कहा गया है • "इन साधनों द्वारा अभी तक विश्व की अंश मात्र आत्माओं को ही संदेश दे पाए हो।"

(iv) त्रेतायुगी आत्माओं को संदेश देने की रिहर्सल :- जैसे सतयुग में चित्रित (सतयुगी) राधाकृष्ण की आत्माएँ अपने अंतिम 84वें संगमयुगी (स्थूल-सूक्ष्म) जन्म में ब्रह्मा-सरस्वती के नाम-रूप से सतयुगी 2 करोड़ आत्माओं की शूटिग कराती हैं ठीक वैसे ही त्रेतायुग में चित्रित रामसीता की आत्माएँ अपने अंतिम 84वें संगमयुगी जन्म में

शंकर-पार्वती के नाम-रूप से प्रत्यक्ष होकर त्रेतायुगी (2+8) = 10 करोड़ देवताओं को ईश्वरीय संदेश दिलाने का प्रतिनिधित्व करती हैं। यह कार्य सन् 77 से 1990 तक के 10(-15) वर्षों में सम्पन्न होना चाहिए। बाबा ने ता.24.10.72 की मुरली में कहा है • "जितने भी सतयुग-त्रेता में देवताएँ होंगे उतने ब्रह्मा मुखवंशावली यहाँ बनने हैं।" • "33 करोड़ (भारतीय) देवों की लिमिट यहाँ है।" (ता.23.3.73) • "जितने भी (10 करोड़) देवी-देवताएँ सतयुग-त्रेता में हैं वे सब गुप्त यहाँ बनने हैं।" (ता.5.2.74) • "ब्राह्मण कोई सब सतयुग में नहीं आते। त्रेता-अंत (की शूटिग) तक आवेंगे।"

(v) द्वापर और कलियुगी (प्रमुख 8 बीजरूप**) आत्माओं की रिहर्सल** (सन् 93 से 2004 तक भी) इसी तरह 50(-60) वर्षीय संगमयुग सहित बाकी बचे 10 वर्षों में द्वापर–कलियुगी प्रमुख बीजरूप धर्मपिताएँ भी भिन्न नाम-रूप से क्रमश: एक-एक करके प्रति वर्ष प्रत्यक्ष होकर अपने-2 धर्मों के कुल मिलाकर 500 करोड़ फालोअर्स को सन्देश देने के (आगे भी) निमित्त बनते (रहेंगे); क्योंकि राम-कृष्ण की आत्माओं की तरह भिन्न-2 धर्मों के (सूक्ष्म बीजरूप) धर्मपिताएँ भी जब तक (आधारमूर्तों में) नं.वार प्रत्यक्ष न हों, तो उनके फॉलोअर्स को ईश्वरीय संदेश कैसे मिल सकता है? अतः सर्वप्रथम तो धर्मपिताएँ प्रजापिता+ब्रह्मा के द्वारा (परमपिता) परमात्मा के कनेक्शन में आवें, फिर उनके माध्यम से सारी (5-7 अरब) प्रजा को मुक्ति-जीवन्मुक्ति का नं.वार वर्सा प्राप्त हो सकता है। बाबा ने अ.वाणी 30.6.74 पृ.83 में कहा भी है •"ब्रह्मा का पार्ट स्थापना के कार्य में अंत तक नूँधा हुआ है.....मनुष्य-सृष्टि की सर्ववंशावली रचने का ब्रह्मा के लिए ही <u>गायन</u> है- ग्रेट-2 ग्रांड फादर।" • "विश्व की हर प्रकार की आत्माओं के उद्धार होने का गायन भी शास्त्रों में है ना। प्रैक्टिकल में यह सब हुआ ना। तब तो उनकी निशानियाँ हैं। यह सब होगा।" इसी बात का स्पष्ट इशारा देने के लिए निश्चित समय का भी निर्देश बाबा ने 10.8.74 की वाणी में कर दिया है •"बाप कितनी मेहनत करते रहते हैं। अभी ¾ पूरा हो बाकी ¼ टाइम बचा है।" इस वाणी के हिसाब से शिवबाबा की पतित से पावन बनाने की कुल 50(-60) वर्षीय मेहनत में से 38 वर्ष सन् 74 में पूरे हुए। सन् 86-87 तक 12-13 वर्ष और भी (त्रेता की शूटिग के) बकाया रहे। जिसमें क्षत्रिय-स्लामी-बौद्धी आदि सभी धर्मों की (साकार बीजरूपों को) नं.वार <u>सन्देश</u> देने की शूटिग का कार्य भी (भविष्य में) समाप्त हो जावेगा। गोले के चित्र में नं.वार धर्मपिताओं के युगानुरूप चित्रण से भी यह बात स्पष्ट हो जाती है। बाबा ने ता.23.11.65 की मुरली में कहा भी है • "500 करोड़ को पढ़ाने वाला एक है।" • "कितने सेण्टर्स हैं? अभी तो अजुन थोड़े हैं। इससे भी 1000 गुना ज़्यादा होंगे।" (ता. 20.7.73) • "<u>तुम्हा</u>रे (AIVV) सेंटर्स लाखों की तादाद में हो जाएँगे।" (ता. 26.2.71) • "हर गली में सेण्टर होगा।" (13.12.69) • "मुरली छपती है। आगे चल लाखों-करोड़ों की तादाद में छपने लग पड़ेगी।" (ता.22.6.74)

(2) <u>हर युग की शूटिग-काल में यज्ञ और यज्ञवत्स 4 अवस्थाओं से पसार होते हैं</u> :-

शिवबाबा ने ता.13.6.76 की मुरली में कहा था •" हरेक मनुष्य मात्र को, हर चीज़ को (हर धर्म को) सतो, रजो, तमो में आना होता है। नई सो पुरानी ज़रूर होती है.....तो कहेंगे न पहले सतोप्रधान, फिर ज़रूर सतो, रजो, तमो तुमको ज्ञान मिला है।" यहाँ स्पष्ट हो जाता है कि सतयुगी शूटिग-काल के 40 वर्षों में सन् 37 से 76 तक

सामूहिक रूप से सारा ही (बेसिक) ज्ञान-यज्ञ इन 4 अवस्थाओं से पसार हुआ है। यज्ञ वत्सों की सतयुगी सतोप्रधान पहली अवस्था (ॐ मंडली) कराची में थी, जहाँ एकमात्र सत् (परमपिता+) परमात्मा शिव का साकार संग सदाकाल के लिए था। जैसा संग वैसा ही रंग चढ़ता है; अतः (ॐ मण्डली) उस समय सदाकालीन सत् के साकार संग ने यज्ञ वत्सों की सतोप्रधान अवस्था सहज ही बना दी। कहते हैं कि उस भट्ठी में विकारी दुनिया वालों का चेहरा भी देखने को नहीं मिलता था। बाबा ने ता.8.7.74 की मुरली में कहा भी है •"तुम आकर भट्ठी में पड़े। कोई देख न सके। (सिवाय सत् बाप के) कोई को देखते ही नहीं थे तो फिर दिल किससे लगावेंगे?" इसके बाद यज्ञ वत्सों को पाक+स्थान अर्थात् स्वर्ग या बैकुण्ठ की दुनियाँ ख़ास भारतवासियों के कल्याण के लिए छोड़नी पड़ी। माउंट आबू आए, जहाँ सन् 51 से (18 जन. सन 1969) तक यज्ञवत्सों को त्रेतायुगी सतोसामान्य दूसरी स्टेज से (भी) गुज़रना पड़ा; क्योंकि यहाँ (समर्पित) यज्ञवत्सों को समय-2 पर भारतवासियों की सेवा में बाहर भी जाना पड़ा, जिससे सदाकालीन एक सत् बाप के साकार संग का सहजयोग नहीं निभ सका। फिर भी बीच-2 में यदा-कदा सत् बाप के साकार संग का रंग लगते रहने से बाहरी कुसंग का रंग धुलता ही रहा। इस तरह अवस्था नीचे नहीं गिरने पाई, जिससे नम्बरवार (सतो और) सतोसामान्य त्रेतायुगी स्टेज की शूटिग होती रही।

सन् 65 से 68 के बीच, मम्मा-बाबा के शरीर छोड़ने के साथ ही हम ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में द्वापरयुगी रजोप्रधान तीसरी अवस्था की शूटिग का आरम्भ हो गया; क्योंकि ब्रह्मा के (टेम्परेरी) रथ के न रहने पर सत् बाप का प्रैक्टिकल साकार संग निरंतर के लिए समाप्त हो गया। दूसरी ओर नं.वार अधूरे ब्राह्मणों और तमोप्रधान दुनिया वालों के प्रैक्टिकल संग का रंग सदाकाल के लिए पड़ने लगा, जिससे समूचे ब्राह्मण-परिवार की द्वापरयुगी रजोप्रधान अवस्था बन गई। इसके बाद सन्73-74 से मेलों-मलाखड़ों की भरमार के कारण हम ब्राह्मणों की दुनिया में तमोप्रधान कलियुग का प्रवेश हो गया; क्योंकि मेलों में आने वाले ढेर-के-ढेर तमोप्रधान मनुष्यों की गंदी दृष्टि-वृत्ति का लगातार कुसंग होने लगा। इसलिए 4 मई 74 की मुरली में बाबा ने इस दुर्गति का इशारा भी दिया था •"अभी (कलियुगी शूटिग में) तो भक्ति की कितनी धूमधाम हो गई है। मेले-मलाखड़े भी लगते हैं, तो मनुष्य जाकर दिल बहला आवें।" • "मेले-मलाखड़े <u>सब</u> दुर्गति में ले जाने वाले हैं।" (ता.27.11.72 पृ.2) •"यहाँ (मधुबन में) है आत्माओं और परमात्मा का (प्रैक्टिकल) मेला। उन मेलों में तो मैले हो पड़ते हैं।" (ता.17.1.74/10.4.74/23.10.74 आदि) कहावत भी है • **"काजर की कोठरी में कैसोहू सयानो जाय, एक लीक काजर की लागिहै पै लागि है।"**

(3) संगमयुग में ही ब्रह्मा और ब्राह्मणों का (स्वर्गीय) दिन और (नारकीय) रात होती है :-

इस प्रकार यहाँ हमने देखा कि सतो-रजो आदि 4 युगों की स्टेज से विधिवत पसार होने के कारण हम ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया के इन 40 वर्षों में ही 4 युगों की शूटिग के हिसाब से सन् 76 तक पूरे एक कल्प (चतुर्युगी) की आवृत्ति हो चुकी है, जिसमें सन् 18 (जन.69) तक ब्रह्मा-तन द्वारा ज्ञान सूर्य शिव का प्रैक्टिकल साकार संग का रंग लगने से सतयुग-त्रेता रूपी ज्ञान-प्रकाश वाले दिन का आवर्तन हुआ। इसके बाद ब्रह्मा बाबा का टैम्परेरी रथ न रहने के कारण ज्ञान-सूर्य परमपिता शिव भी वाणी से परे-वानप्रस्थी हो गए। अर्थात् ज्ञानसूर्य के

छिपने के कारण हम ब्राह्मणों की दुनिया में ब्रह्मा की अज्ञान-अंधेरी रात आ गई। इस संगमयुगी मायावी ब्रह्मा की रात में गुलज़ार मोहिनी के द्वारा ज्ञान-चंद्रमा के साथ-2 ज्ञान-सितारों की झिलमिलाहट तो अवश्य ही चारों ओर देखने में आती है; परंतु ज्ञानसूर्य बाप तो (1975 तक) गुप्त ही रहता है। वास्तव में 2500 हज़ार वर्ष वाली स्वर्ग या नरक की ब्रॉड दुनियाँ में तो न ब्रह्मा ही होता है, न ब्राह्मण ही। अतः वहाँ तो ब्रह्मा या ब्राह्मणों की रात या दिन होने का सवाल ही नहीं होता। इसलिए शास्त्र-वर्णित ब्रह्मा का दिन और रात इसी संगमयुगी समय का गायन है। इसीलिए ता.10.10.73, पृ.1 की मु. में बाबा ने कहा भी है •"प्रजापिता ब्रह्मा मुखवंशावली (बीजरूप ब्राह्मण) घोर अंधेरे में थे, तो ज़रूर ब्रह्मा भी घोर अंधेरे में होगा। ब्रह्मा मुखवंशावली सोझरे में हैं तो ब्रह्मा भी सोझरे में होगा। गाते तो बहुत हैं। बहुत भटकते हैं दूर-2 (आबू जैसे) पहाड़ों पर (परंतु समझते कुछ नहीं)" •"ब्रह्मा का अथवा ब्राह्मणों का ही दिन-रात गाया जाता है... कलियुग अथवा सतयुग में यह ज्ञान किसको होती ही नहीं जो ब्रह्मा का दिन और रात गाई जाती हो ।" (ता.10.5.76 पृ.1) ब्रह्मामुखवंशावली के लिए ही यह दिन-रात होती है और संगम में ही दिन-रात होते हैं। (ता. 4.5.70) "ब्रह्माकुमार-कुमारियों के लिए ही यह बेहद के दिन-रात होते हैं।" (ता.29.6.77 पृ.2) • "सद्गुरू और गुरू में भी रात-दिन का फ़र्क़ है। वह (ज्ञानसूर्य सद्गुरू शिव ब्रह्मा द्वारा) दिन कर देते, वह (देहाभिमानी गुरू अज्ञान अंधेरी) रात कर देते।" (ता.27.2.74) •"ब्रह्मा का दिन और रात कहते हैं, तो प्रजा और ब्रह्मा दोनों ही इकट्ठे होंगे ना। तुम समझते हो यह ब्राह्मण ही आधा कल्प (सन् 68 तक मम्मा-बाबा के ज़माने में) सुख भोगते हैं, (बाद में) आधा कल्प (देहधारी गुरुओं से) दुःख भोगते हैं। यह बुद्धि से समझने की बात है।" (ता.21.11.74 पृ.1)

(4) सन् 76 से शंकर द्वारा हम ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया का विनाश या विघटन- कार्य आरम्भ हो चुका है :-

ब्रह्मा द्वारा स्थापना, फिर शंकर द्वारा विनाश। सन् 76 में (चतुर्मुखी संगठित) ब्रह्मा की 100 वर्षीय आयु पूरी होते ही शंकर का तीसरा ज्ञान-नेत्र खुलने से प्रेरणा पाकर एक ओर तो ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया के आसुरी सम्प्रदाय में खलबली मचने से हाँ-हाकार की शुरुआत होती है; जबकि दूसरी ओर दिल्ली में जमुना के कंठे (वाले B.K. सेवाकेंद्रों) पर ज्ञानी और योगी तू आत्मा अर्थात् सच्चे ब्राह्मण बच्चों की 'तीरी पर बहिश्त' माना बुद्धि रूपी हथेली पर स्वर्ग-स्थापना का अटल निश्चय बैठने से जय-जयकार के नारों की आवाज़ बुलन्द होती जाती है। सन् 66 में कराई गई 10 वर्षीय घोषणा इसी (प्रैक्टिकल) संगमयुगी ब्राह्मणों की दुनिया के लिए थी; बाहरी दुनिया के लिए नहीं; क्योंकि बेहद का बाप अपने बेहद के बच्चों से सदा बेहद की बातें करते हैं। उन बातों को धन-पद-मान-मर्तबे वाली हद की दुनिया में बुद्धि लगाने वाले बच्चे नहीं समझ सकते। दूसरी बात यह कि बाबा हमेशा मुरलियों में यही कहते रहे हैं कि विनाश-ज्वाला इस रुद्रज्ञान यज्ञ-कुण्ड से प्रज्वलित हुई, जिससे स्पष्ट होता है कि यज्ञ-कुण्ड से (सन् 76 बाप के प्रत्यक्षता वर्ष से) निकलने वाली विनाश ज्वाला, सबसे पहले तो यज्ञ-कुण्ड के आस-पास आस्तीन का साँप बनकर बैठने वाले कच्चे-हाफकास्ट ब्राह्मणों के 'जी' को जलाकर ख़ाक कर डालेगी; क्योंकि बाबा ने नारा भी दिया है •"चैरिटी बिगंस एट होम।" अर्थात् कल्याणकारी विनाश की शुरुआत भी घर

यानी ब्राह्मण-परिवार से शुरू होनी चाहिए। पहले घर का सुधार फिर दुनिया का सुधार हो सकता है। तो सबसे पहले ब्राह्मण-परिवार के बगुला पुरुषार्थियों रूपी कचड़े में महावीर (शंकर या हनुमान) की विकारों-रूपी पूँछ से धुआँधार आग लगाई जाना स्वाभाविक ही है। तीसरे नेत्र से प्रज्वलित हुई ज्ञान-अग्नि की इस विनाश-ज्वाला से सच्चे सोने के समान (वि+भीषण जैसे) परिपक्व धारणा वाले ब्राह्मणों की अवस्था में कोई गिरावट नहीं आ सकती। उनका पुरुषार्थ तो (साक्षात् भगवान बाप के संग से) सदा ही चमकता और निखरता जावेगा।

ब्राह्मणों की तमोप्रधान बनी इस सूक्ष्म संगमयुगी दुनिया में सन् 76 से होने वाले विनाश की प्रामाणिकता बाबा की मुरलियों में समय-प्रति समय दिए गए महावाक्यों से और भी अधिक साबित हो जाती है। बाबा ने कहा था • "10 वर्ष (की घोषणा) से 2 वर्ष बाकी बचे हैं। अभी कलियुग (की शूटिंग) का अंत आकर हुआ है।" (रिवा. मु. ता.4.2.74) • "जो जास्ती (ज्ञान-) धनवान हैं, वे 3/4 वर्ष मुश्किल से चलेंगे।" (ता. 9.5.72) (क्योंकि बाप की प्रत्यक्षता-वर्ष सन् 76 में ज्ञानसूर्य के प्रत्यक्ष होने से ज्ञान की प्रकाश-मणि (इन+डरा गन्दी जैसे) चाँद-सितारों का प्रभाव फीका हो जाता है) • "एक दिन ऐसा भी आवेगा जो (सच्चे ब्राह्मणों की) दुनिया बहुत खाली हो जावेगी। 2-4 वर्ष में सिर्फ़ भारत (अर्थात् ज्ञानधन से भरतू 108 बीजरूप आत्माओं का समूह) ही बचेगा।" (ता.14.8.74) तात्पर्य है कि सन् 78 तक बाक़ी सब (ब्रह्मा-वत्स) अज्ञानी मुर्दे बन पड़ेंगे जिन्हें बाबा की किसी बात पर अटल निश्चय नहीं रहेगा • " एक/डेढ़ वर्ष में हम ही थोड़े (ब्रह्मा-वत्स) बाक़ी होंगे। और इतने सब (संगमयुगी मत-मतांतरों के) धर्मखण्ड आदि नहीं होंगे। हम ही विश्व के मालिक होंगे।" (ता.10.8.74) अर्थात् बाक़ी सबका विश्व-विजयी आदि ल.ना. या अर्धनारीश्वर बनने का निश्चय रूपी फाउंडेशन उखड़ जावेगा।

• "बाक़ी (विनाश में) 2 वर्ष हैं। ऐसे मत समझना 3 वर्ष हो जावेंगे। 1 वर्ष होगा, परंतु 3 वर्ष नहीं होंगे।"(ता. 9.10.74 पृ.3) इतने दृढ़ निश्चय से कहे गए ईश्वरीय महावाक्यों का सही अर्थ न जानने के कारण बाप की वाणी को झूठा साबित करके बाप का नाम बदनाम करने वाले ऐसे ही बगुला पुरुषार्थियों के लिए बाबा ने 25.10.69 की मुरली में दृढ़ता से कहा है •"सृष्टि का फाइनल विनाश 6 वर्ष में .....जो 7 वर्ष कहेंगे तो उनका पद कम हो जावेगा।"

ओमक्रान्तिः। ओमशान्तिः।

<u>जन्माष्टमी बनाम स्वतंत्रता-दिवस 79</u> ॥ॐ॥ परमात्मा प्रत्यक्षता बॉम्ब ॥ ट्रायल॥ नगाड़ा नं. 8

<u>संगमयुगी राधाकृष्ण का पार्ट प्रत्यक्ष होने की यादगार "जन्माष्टमी" है</u>

(1) <u>सारी महिमा संगमयुगी राधा-कृष्ण की है</u> :-

शिवबाबा ने कहा है कि शास्त्रों में सतयुग-त्रेता की कोई हिस्ट्री नहीं मिलती अर्थात् सतयुगी राधा-कृष्ण या त्रेतायुगी राम-सीता का शास्त्रों में कोई वर्णन नहीं है। वास्तव में शास्त्रों में की गई शिवबाबा की सारी महिमा, (राधा)कृष्ण और राम-(सीता) की आत्माओं के द्वारा संगमयुग में बजाए गए सम्पूर्ण अवस्था के इस एकमात्र मिलेजुले गुप्त पार्ट की यादगार है। एक ही शंकर के शरीर रूपी रथ में डबल इंजन रूपी बाप-दादा (शिव और ब्रह्मा) के इस दिव्य प्रवेश का गुह्य ते गुह्य राज़ न जानने के कारण भक्तिमार्ग में

शिव-राम-कृष्ण-ब्रह्मा-विष्णु-शंकर-नारायण आदि सभी को मिलाकर एक भगवान का रूप समझ लिया है। बाबा ने ता.19.8.74 की मु. में साफ कहा है • "ढेढरों मिसल ट्रां-ट्रां करते हैं। अर्थ कुछ भी नहीं समझते।" कहते हैं-"अच्युतं-केशवं (राम-नारायणं, कृष्ण-दामोदरम् वासुदेवम् हरिम्। श्रीधरं-माधवं-गोपिका वल्लभं जानकी नायकम्, रामचंद्र भजे) कहाँ राम और कहाँ नारायण? सबको मिलाकर एक कर दिया है।" बाबा ने ता. 27.12.72 की मुरली में कहा है • "रामायण भागवत आदि में सभी इस समय की बातें हैं" • "गीता-भागवत (रामायण) महाभारत में जो भी लिखा हुआ है उसकी अभी भेंट कर सकते हो।" (ता.19.4.73) • "महिमा भी वह होनी चाहिए जो आपके सम्पूर्ण स्वरूप की है।" (ता.20.1.74 अव्यक्त) स्पष्ट है कि (पु.संगमयुग में) ब्रह्मा-सरस्वती का रूप धारण करने वाली राधा-कृष्ण की आत्माओं का सम्पूर्ण स्वरूप सिध या हैदराबाद में नहीं बना था; क्योंकि वह तो उनके आत्मिक पुरुषार्थ की शुरुआत थी। वास्तव में उनकी आत्माएँ स्थूल शरीर त्यागने के बाद (1967-69 में) जब सूक्ष्म शरीर की अवस्था धारण करके किन्हीं श्रेष्ठ (सृष्टि के बीजरूप) पुरुषार्थी (ब्रह्मावत्स) बच्चों (शंकर-पार्वती) में प्रवेशता का (बेहद) पार्ट बजाती हैं; तब ही उनकी महिमा होती है।

(2) <u>संगमयुगी राधा-कृष्ण और सतयुगी राधाकृष्ण</u> :-

संगमयुगी राधा-कृष्ण का पार्ट सतयुगी (16 कला) राधा-कृष्ण के पार्ट से निश्चित रूप से अलग है-इस बात का पक्का प्रमाण 30x40 इंच वाला सीढ़ी का पुराना चित्र है, जहाँ ऊपर के (बाएं) कोने में (पहला-2) सतयुगी पुरुषोत्तम संगमयुग दिखाया गया है। यहीं प्रैक्टिकली पुरुषों में (नं. वार 4 मुख्य धर्मों के) बीज बनने वालों (के साथ) संगमयुगी (पुरुषोत्तम) कृष्ण की प्रत्यक्षता होती है। संगमयुग का यह अंतिम श्रेष्ठ (पुरुषोत्तम) भाग सीढ़ी के चित्र में (सबसे ऊपर बाएं कोने में और) नीचे दिखाए गए 40 वर्षीय संगमयुग के बाद सन् 77 से शुरू होता है। यहाँ राधा-कृष्ण को नौजवान अवस्था में दिखाया गया है; जबकि सतयुग की सीढ़ियों के (ऊपर) अंदर (की और) शैशवावस्था वाले सतयुगी राधा-कृष्ण का स्पष्ट चित्रांकन है जिससे यह भली-भांति साबित हो जाता है कि संगमयुग (के अंत) और सतयुग (के आदि) में जन्म लेने वाले (दो) राधा-कृष्ण (की आत्माओं) का पार्ट अलग-2 है; क्योंकि बाबा ने ता.13.10.74 की मु. में कहा है कि लॉर्ड का टाइटिल बच्चे का नहीं होता, बड़े आदमी का होता है। संगमयुगी कृष्ण को ही विलायत वाले लॉर्ड कृष्ण के रूप में पहचानते हैं। सतयुगी कृष्ण (बच्चा) को तो वे लोग (लार्ड रूप में) नहीं मानेंगे; क्योंकि सतयुग में तो क्रिश्चिस लोग आवेंगे ही नहीं।

(3) संगमयुग में सूर्यवंश-चंद्रवंश दोनों (की शूटिग) होती हैं; सतयुग में नहीं :-

यह संगमयुगी कृष्ण (ज्ञान-) सूर्यवंशी घराने में पलता है, जबकि संगमयुगी राधा का पालन-पोषण (बेसिक ज्ञान के) चंद्रवंशी घराने में होता है; क्योंकि एकमात्र ज्ञानसूर्य शिवबाबा की मुरलियों के डायरैक्शन पर चलने वाले निराधार (सितारे रूपी) बच्चे ही ज्ञानसूर्यवंशी हैं। बाकी ज्ञानचंद्रमा-ब्रह्मा द्वारा निमित्त बनाई गई दीदी-दादियों आदि देहधारियों के आधीन होकर उनके मनमाने डायरैक्शन पर (श्रीमत के बरखिलाफ) चलने के लिए मजबूर होने वाले चंद्रवंशी कहे जाते हैं। आखिर तो सूर्यवंश और चंद्रवंश की शुरुआत करने के निमित्त कोई तो प्रैक्टिकली गर्म (सूर्य) और ठण्डा (चंद्रमा का) पार्ट बजाने वाले चैतन्य ज्ञानसूर्य और ज्ञानचंद्रमा होंगे ना। शिवबाबा ही ब्रह्मा

द्वारा ज्ञानचंद्रमा, और त्रिनेत्री शंकर (के शिवनेत्र) द्वारा ज्ञानसूर्य के रूप में प्रत्यक्ष होते हैं। राम के इसी संगमयुगी तीक्ष्ण पार्ट के कारण आज भी भक्तिमार्ग में राम को सूर्यवंशी माना जाता है। सम्पूर्ण बीजरूप (रूद्र) बने (परं)ब्रह्मा अर्थात् (पु.संगमयुगी) कृष्ण की आत्मा (त्रेता वाले) राम के इस संगमयुगी शरीरधारी स्वाधीन शंकर में प्रवेश करती है; जबकि सरस्वती की (सूक्ष्मशरीरी) बनी आत्मा दीदी-दादियों की पराधीनता में पलने वाली (चन्द्रवंशी राधा) में प्रवेश करती है। इसीलिए तारीख 10.5.73 पृ.3 की मुरली में बाबा ने कहा है • "(संगमयुगी) राधा -कृष्ण तो प्रिंस-प्रिंसेज थे। दोनों अपनी-2 राजधानी में रहते थे। ज़रूर स्वयंवर होगा जैसा कि सीढ़ी के चित्र में ऊपर (बाईं ओर) विजयमाला लिए हुए (चंद्रवंशी) राधा को (सूर्यवंशी) कृष्ण के सामने दिखाया भी गया है राधे-कृष्ण का (अपना) राज तो है नहीं (दीदी-दादी-दादाओं आदि का राज है)। सूर्यवंशी- चंद्रवंशी घराना है। चंद्रवंशी में तो सूर्यवंशी कृष्ण आ न सके (क्योंकि सूर्यवंशी ऊँच कुल का है) तो बड़ी मूँझ हो गई है।" (कि दोनों ब्रह्मा कु.& शंकर नाम की पार्टियों को मिलाकर एक वंश कैसे बनाया जाय, क्योंकि सतयुग में तो सिर्फ सूर्यवंश ही होगा। चंद्रवंश तो होगा ही नहीं)।

(4) राधा-कृष्ण की ज्ञानगर्भावस्था कब और कैसे :-

सन् 65 से 69 के बीच (सूक्ष्म शरीर तक) कर्मातीत हुई ब्रह्मा-सरस्वती की (अधूरी) बनी आत्माएँ ही समय प्रति समय राम-सीता के संगमयुगी शरीर में प्रवेश करके संगमयुगी (चंद्रवंशी) राधा (और सूर्यवंशी) कृष्ण का पार्ट बजाती हैं। पहले-2 तो सन्(76-77) तक के 10-12 वर्षों में (दूसरे बीकेज़ के) बुद्धि रूपी क्षेत्र में प्रवेश करके बेहद की ज्ञान गर्भावस्था का गुप्त पार्ट बजाती है।

इस अवस्था की यादगार शास्त्रों में पीपल के पत्ते पर गर्भमहल में चित्रित (सागर में शिशु) कृष्ण का चित्र (यादगार शास्त्रों में आज भी) है। (जगदम्बा) के संगमयुगी शरीर रूपी (हल्की हिलती डुलती) नैया की यादगार पीपल का पत्ता है, जो मायावी तूफ़ानों का मुक़ाबला करते हुए मझधार में पड़ी नौका की तरह डोलने लगता है, परंतु (पतित देह से) (सूक्ष्म देह होते भी) मम्मा-बाबा (ब्रह्मा-सरस्वती) अर्थात् राधा-कृष्ण की सशक्त आत्माओं की प्रवेशता के कारण उन बच्चों के पुरुषार्थी जीवन की नैया बड़ी भयंकर गति से डोलती तो है, परंतु डूबती नहीं। यही कारण है कि उन बच्चों को, मन-बुद्धि रूपी अंगुष्ठाकार समझी (गई) आत्मा का अटल निश्चय रूपी अँगूठा चूसते हुए स्वचिंतन की निश्चिंत स्टेज में दिखाया गया है। बाबा ने भी ता.30.9.74 की मु. में कहा है •"पीपल के पत्ते पर कृष्ण का बड़ा अच्छा चित्र दिखाते हैं। वह (एडवांस गीता ज्ञान) गर्भ महल जहाँ आराम से बैठा रहता है। (संकल्पों की) सज़ाएँ आदि तो कुछ भी नहीं खाते हैं।" • "अब (झंझावात के) सागर में पीपल के पत्ते पर कोई ऐसा होता नहीं है। यह दिखाया है कि (विषय विकारों के सागर में भी) कैसे आराम से रहते हैं। फिर समय होता है तो (प्रत्यक्षता रूपी) जन्म लेते हैं, जैसे कि (कृष्ण जन्माष्टमी 1988 और 2027-28 में भी) बिजली चमक जाती है।" (ता.10.10.74)

(5) <u>संगमयुगी कृष्ण-जन्माष्टमी कब-कहाँ और कैसे</u> :-

<u>जन्म कब</u>- (यह प्रैक्टिकल बात है कि) पुरुषोत्तम संगमयुग में (इन बीजरूप आत्माओं की) त्रेतायुगी <u>शूटिंग</u> के

(बाद) और द्वापरयुगी शूटिग के (मध्यांत) में संगमयुगी कृष्ण के जन्म रूपी प्रत्यक्षता (जेल में त्रिनेत्री) शंकर के माध्यम से (सन् 98 के स्वतंत्रता-दिवस 15 अगस्त जन्मष्टमी पर होती है इसका भी हिसाब है। बाबा ने कहा है कि क्राइस्ट से 3000 वर्ष पूर्व स्वर्ग था; अत: कल्प की आयु 5000 वर्ष पूरी होने के लिए इस क्रिश्चियन सम्वत को 2000 वर्ष तक चलना है। शिवबाबा ने कहा है • "कृष्ण (पु.संगम में ही) 20-22 वर्ष का होता है तब उसे (2018 में चैन की) गद्दी मिलती है।" • "ल.ना. बनने में कृष्ण को 20-25 वर्ष लगे होंगे।" (ता. 2.5.71) इन दोनों ही महावाक्यों में दिए गए कामन अंक 20 वर्ष को (1998) (बढ़ाया) जाय तो सन् (2018) ई. आता है। नगाड़ा नं.7 में दी गई सृष्टिचक्र की व्याख्या के अनुसार (बीजरुपों की दुनियाँ में) सन् (90) के बाद द्वापरयुग की शूटिग शुरू हो जाती है और इसी समय से संगमयुगी कृष्ण की जयंती (जय+अंती) अर्थात् अंतिम जय-जयकार रूपी प्रत्यक्षता ज़ोर-शोर (जगन्नाथ रथ-यात्रा) से शुरू होती है; अतः (शूटिग-अनुसार ही) शास्त्रकारों ने कृष्ण को द्वापरयुग में ठोक दिया है। ता.9.3.76 की मुरली में बाबा ने भी कहा है "किसको भी पता नहीं है (कि) कृष्ण द्वापरयुग (-अंत की शूटिग के अंत) में फिर कब आवेंगे?" • "जयंती भी (सूक्ष्मशरीरी) कृष्ण (बच्चे) की मनाते हैं। (नर रूप) ल.ना. की (प्रत्यक्षता वर्ष 1976में) क्यों नहीं? (शूटिग का) ज्ञान न होने के कारण कृष्ण को फिर द्वापर में ले गए हैं।" (ता.2.3.74) • "कृष्ण के साथ कंसी जरासिधी (जैसे दुश्मन) आदि दिखाते हैं। वास्तव में इस समय (संगमयुग में B.K.-P.B.K.) सब हैं- राक्षस सम्प्रदाय।" (ता.10.10.73 पृ.3)

<u>जन्म कहाँ</u>- यमुना (नदी) के कंठे पर (मथ+उरा=) मथुरा नगरी में कंस की जेल के अंदर कृष्ण का (प्रैक्टीकल यादगार) जन्म दिखाते हैं। (शास्त्रों में) डायरैक्ट ज्ञानसूर्य से अलौकिक जन्म लेने वाली को यमुना नदी कहा गया है जिसमें रमण करने वाले कालिया नाग के विष से विषाक्त हुई यमुना नदी को विषय-वैतरणी नदी मान लिया गया है। मथ+उरा=मथुरा शब्द भी अश्लीलता का वाचक है, जहाँ (जमुना-किनारे) कामाग्नि से काले हुए मुँह वाले कृष्ण ने जन्म लेकर अर्थात् संसार में प्रत्यक्ष होकर कन्याओं को कोसने वाले कंस की जेल का परित्याग करते हुए विषय वैतरणी नदी को कल्प पूर्व भी पार किया था और अब भी करता है। ता. 6.5.75 में इसी संगमयुगी राम+कृष्ण और शिव के मिले-जुले कालेपन के पार्ट का ज़िक्र करते हुए कहा है • "कृष्ण को तक्षक सर्प ने डसा। राम को किसने डसा? (इसी काम रूपी सर्प ने)। शिवलिग (शरीर की यादगार लिग) भी कोई काला, कोई सफेद बनाते हैं (वरना निराकार ज्योति शिव को लिग कहाँ से आया?)।" •"कृष्णपुरी और कंसपुरी दिखाते हैं। कृष्ण को (विषय वैतरणी नदी के) उस पार (क्रॉस कराय) ले गए हैं। है इस संगम (युग में दिल्ली) की बात। (सतयुगी 16 कला) कृष्ण को उस पार नहीं ले गए हैं। यह तो बेहद (के संगमयुगी कलातीत कृष्ण) की बात है। अभी उस पार जा रहे हैं ।" (अभी भी गए नहीं हैं ।) (ता.17.11.72)

<u>जन्म कैसे</u>- सतयुग में बनने वाले (उत्तरोतर नीची कलाओं के) अंतिम 7 नारायणों के नाम-रूप सहित पार्ट खुल जाने के बाद अर्थात् उनकी अलौकिक जन्म रूपी प्रत्यक्षता (1976 तक) होने के बाद ही आठवें नं. में संगमयुगी कृष्ण जन्म रूपी प्रत्यक्षता होती है। इसीलिए भक्तिमार्ग में आज भी ऐसे संगमयुगी घटनाक्रम की यादगार स्वरूप 'कृष्ण+जन्म+अष्टमी' मनाई जाती है। बाबा ने ता. 12.2.74 पृ.1 के अंत में कहा है •"कृष्ण

जन्माष्टमी भी दिखाते हैं। बच्चा तो (आदि ल.वाली) माता के (बेसिक ज्ञान) गर्भ से ही निकला। फिर दिखाते हैं उनको (धर्मपिताओं की तरह खास निराकार बने राम की बुद्धि रूपी) टोकरी में ले जाते हैं। अब कृष्ण तो (विश्व-पिता के) वर्ल्ड का प्रिंस। उनको डर फिर काहे का? वहाँ (16 कला सतयुग में) कंस आदि कहाँ से आए? (बातें संगमयुग की हैं) अब तुमको (सारी बातें) अच्छी रीति समझाना चाहिए।" (ताकि सबकी पोलपट्टी खुल जाय) • "देवकी को 8वाँ नं. श्रीकृष्ण बच्चा पैदा हुआ। अब (सतयुग में) आठवाँ नं. कृष्ण जन्म लेगा? किन्तु सतयुग में 8 बच्चे तो होते ही नहीं। फिर दिखाते हैं उनका बाप (शिव+राम मिश्र) उनको (चेतन ज्ञान-) नदी से पार ले जाता था।" (ता.18.8.72)

(6) <u>संगमयुगी बालकृष्ण की लीलाएँ</u> :-

(i) <u>कलंकीधर कृष्ण</u>- मटकी फोड़ने, माँ को सताने, मक्खन चुराने या गोपियों को भगाने आदि के ये सारे कलंक इसी संगमयुगी कृष्ण के अलौकिक पार्ट की यादगार हैं। बाबा ने ता. 18.8.70 की मुरली में कहा है • "ब्रह्मा या कृष्ण की बचपन (अर्थात् शुरूआत) में ही ग्लानि होती है।" तात्पर्य है कि जैसे यज्ञ के आदि में ब्रह्मा (उर्फ़ 16 कला कृष्ण) की ग्लानि सिध में हुई, वैसी (2017 के) अंत में पहले-पहले संगमयुगी कृष्ण की भी ग्लानि होना अवश्यम्भावी है; क्योंकि जो (सृष्टि के) 'आदि सो अंत' में ज़रूर होना है (ता.19.10.77 पृ.3) अतः बाबा ने 29.6.71 की मुरली में कहा है •"कृष्ण की आत्मा पर (सन् 1974 के आस-पास तमोप्रधान मेले मलाखडों वाली) कलियुग (की शूटिग) में कलंक लगता है और उन्होंने सतयुग में लगाया है।" वास्तव में 16 कला सं. सतयुग में तो कलंक लगाने की बात ही नहीं; यह तो (तामसी) सतयुगी शूटिग (चौथी अवस्था) के अंत में तमोप्रधान बने हम सब भारतवासी भक्तों की ही करतूत है। इसीलिए शिवबाबा ने अव्वल नं. भगत (सो ठगत) बनने वाले (कलाबद्ध) कृष्ण की पोलपट्टी खोलते हुए ता. 26.8.71 की मुरली में कह दिया है • "जब (सूक्ष्मशरीरी) कृष्ण साँवरे बनते हैं तो उन्हें कलंक भी लगते हैं।" (जिसकी यादगार है कलंकी अवतार)।

(ii) <u>मटकी फोड़ना</u>- इसी तरह ता.23.8.74 की मुरली के अनुसार स्थूल "मटकी फोड़ना आदि यह सब सतयुगी कृष्ण के लिए झूठी बातें करते हैं;" क्योंकि बाबा ने कहा है • "सूक्ष्म बात (मक्खन-भरी मिट्टी की देह वाली मटकी) का ही यादगार स्थूल रूप में होता है।" (ता.11.2.75 अ.वाणी पृ.68) अतः (आज भी मंदिरों में यादगार बने) सतयुगी (बालकृष्ण) के रूप में जन्म लेने वाले बच्चे पर यह बातें लागू नहीं होतीं। यह सब तो बुद्धि से समझने योग्य संगमयुगी सूक्ष्म (अलौकिक) पार्ट की यादगारें हैं। वास्तव में तो ग्वाल बालों सहित कृष्ण की आत्मा घर-घर में जाकर गोपियों की (बेसिक) ज्ञान (गर्भ की भी) मटकी का भंडाफोड़ करने का प्रैक्टिकल पार्ट वर्तमान समय बजा रही है जिससे सावधान रहने का नकली डायरैक्टर्स (बने) देहधारी गुरुओं द्वारा ता. 10.4.79 और 17.7.79 जैसी कई मुरलियों में दिया गया है।

(iii) <u>माँ को तंग करना</u>- यज्ञ में निमित्त बनी माताओं को तंग और अशांत करने की बात भी इसी संगमयुगी कृष्ण पर लागू होती है; सतयुगी कृष्ण (बच्चे) पर नहीं। इसलिए बाबा ने ता.17.5.73 पृ.4 के आदि में कहा है •"स्वर्ग में कृष्ण थोड़े ही माँ-बाप को अशांत करेगा। (निमित्त बने बच्चे) कहते हैं बाबा! बच्चे बहुत अशांत करते हैं।

शास्त्रों में (संगम की यादगार) लिखी है (यज्ञ) माता को तंग किया। उनको (नित नए-2 डायरैक्शन रूपी छोटी-2 रस्सियों से) बांधा गया। ऐसा हो नहीं सकता। स्वर्ग में जानवर भी किसी को तंग नहीं करते, तो मनुष्य कैसे करेंगे!" अतः यह बात भी वर्तमान संगमयुगी कृष्ण की यादगार है।

(iv) **मक्खन चुराना**- इसी तरह बचपन में, घरों में घुस-घुस कर, गोपियों के स्वर्ग में बनने वाले अच्छे-2 वारिसदार रूपी मक्खन के गोलों अर्थात् जिज्ञासुओं के दिलों को (एडवांस ज्ञान-मुरली से) चुरा कर अपना बनाने की बात को माखन-चोरी की लीला का नाम दे दिया गया है। इस कार्य में माताएँ और (बुद्धिवादी) गोप संगमयुगी कृष्ण के बहुत सहयोगी बनते हैं; क्योंकि वे जिज्ञासुओं रूपी शिकार को फँसाकर (एडवांस) ज्ञान सुनाने के लिए (पु.संगमी कृष्ण) के मुख में लाकर डाल देते हैं। अतः बाबा ने ता.25.4.77 पृ.2 पर कहा है •"माताएँ कृष्ण के मुख में माखन देती हैं।" • "विश्व के मालिकपने का मक्खन है।" (ता.6.8.78 पृ.2) वास्तव में 108 (रूद्रवत्स) विश्व के मालिक बनते हैं, B.Ks के घरों में घुसकर यह संगमयुगी कृष्ण ही तो ज्ञान सुनाकर उनके दिलों को चुरा लेता है, जिसकी यादगार दिलवाला मंदिर है।

(v) **गोपियों को भगाना** :- इस प्रकार जिनके दिल चुरा लिए जाते हैं उनकी मन-बुद्धि रूपी एडवांस बनी ~~रूपी~~ गोपियाँ तो स्वतः ही पीछे-2 भागने लगती हैं। यज्ञ के शुरू (ॐ मण्डली) में इस ब्राह्मण-दुनिया के अंदर (भी) यह (3-400) गोपियों को भगाने वाली हद की भागवत कथा हुई थी। और अब 'आदि सो अंत' के नियम-प्रमाण इस (एडवांस) ब्राह्मणों की संगमयुगी बेहद की (अलौकिक) दुनिया में फिर से (मीडियम प्रैक्टिकल 15-16 सौ वाली) भागवत-कथा की हूबहू पुनरावृत्ति होती है।(मीडियम) भागवत तो इसलिए है कि पहले तो सिर्फ 300-400 की ही स्थूल भागवत हुई थी; परंतु अब (एकदम) अंत में तो पूरे 16108 आत्मा रूपी गोपियों की नं.वार (प्रैक्टिकल) भागवत होकर ही रहेगी। वरना भक्तिमार्ग के भागवत जैसे शास्त्रों में गायन कैसे होगा? गीता ज्ञानामृत तो थोड़े लोग ही सुनते हैं।

(7) **सांवरे कृष्ण का ज्ञान-डांस** :-

संगमयुगी (जीवन) में ही कृष्ण साँवरा और फिर बाद में गोरा बनता है अर्थात् (सं.) विकारी और फिर (सं.) निर्विकारी बनता है। इस प्रकार श्याम-सुंदर का गायन भी संगमयुगी कृष्ण के परस्पर विरोधी पार्ट का गायन है, सतयुगी (16 कला) कृष्ण का गायन नहीं है; क्योंकि राम के जिस संगमयुगी तन में सूक्ष्म (शरीरी-ज्ञान चंद्रमा) ब्रह्मा अर्थात् कृष्ण (उर्फ़ ब्रह्मा) की आत्मा प्रवेश करके पार्ट बजाती है, वह तन पहले तो (भ्रष्ट इन्द्रियों से) भ्रष्टाचारी और विकारी कामी काँटे के समान काला ही होता है। फिर बाद में योगबल से जब निर्विकारी कंचन काया बनती है तब गोरा कहा जाता है। ज़रूर इस महाकाले कृष्ण ने महाविकारी कालेपन की (निंदा भरी) दयनीय अवस्था में रहते हुए भी निर्विकारी अर्थात् गोरा बनने का श्रेष्ठ (ज्ञान-योग का) पुरुषार्थ किया है; अतः आज भी काले अथवा साँवरे कृष्ण का गायन अथवा चरित्र-चित्रण ज़्यादा है। ता.21.7.72 की वाणी में बाबा ने कहा है •" कृष्ण को (गोप-गोपीजन ज्ञान झूले में) झुलाते हैं। झूलने वाले कृष्ण को कहते हैं सांवरा (अर्थात् विकारी) और गोरा किसे कहेंगे? (ज़रूर ज्ञान झूला झुलाने वाले को काला कहेंगे) • "झूले राजाओं के पास भी अधिक होते

हैं। गुजरात में भी इसीलिए (माला रूपी संगठन के) वारिस ज़्यादा हैं; (क्योंकि वहाँ इसी संगमयुगी काले कृष्ण को झुलाने की यादगार स्वरूप आज भी घर-2 में झूले पड़े हुए हैं)।" ता. 26.5.71। • "दिखाते हैं (गुजराती) गोप-गोपियों ने कृष्ण को (ज्ञान) डांस कराया (अर्थात् खूब नाच नचाया) यह बात इस समय की है।" (रिवा .मु. ता.6.4.78 पृ.3 के मध्यांत में) बाबा ने कहा है • "पहला नं. (संगमयुगी) बच्चू, उनको द्वापर में ठोंक दिया है (काँटों की जंगली दुनिया में घूमने वाला) भील बना दिया है। नाचू बना दिया है" (ताकि 108 विजयी वत्सों के घर-2 में जाकर ज्ञान का नंगा नाच नाचता फिरे) ता.17.11.77 पृ.3 के अंत में। संगमयुगी कृष्ण के इसी ज्ञान-डांस की यादगार में आज भी उन्हें 'नटवर' या 'नटेश्वर' की उपाधि दी जाती है। चूँकि संगमयुगी कृष्ण और नटराज शंकर एक ही (संगमयुगी) व्यक्तित्व के दो नाम हैं; अतः दोनों नामों को भक्तिमार्ग में ज्ञान-डांस की वरीयता प्रदान की गई है। कृष्ण का ज्ञान-डांस महाभारी महाभारत युद्ध का महाविनाश कराता है; जबकि शंकर का प्रलयंकारी तांडव नृत्य (चतुर्थ विश्वयुद्ध) तो और भी अधिक प्रसिद्ध है।

(8) घोड़ागाड़ी चलाने वाला कोचमैन कृष्ण :-

महाभारत युद्ध में कृष्ण (अर्थात् आकर्षणमूर्त शिवबाबा) को 4 श्वेत अश्वों वाली घोड़ागाड़ी का कोचमैन बना दिया है जिसका वास्तविक रहस्य इसी प्रकार है कि देवता-स्लामी-बौद्धी-क्रिश्चियन- इन चार प्रमुख धर्मों की मूल बीजरूप आत्मा रूपी अश्व क्रमशः राम-भरत-लक्ष्मण और शत्रुघ्न हैं जो महाविनाश के समय चारों दिशाओं में ज्ञान योग के अस्त्र-शस्त्रों से दिग्विजय प्राप्त करती हैं। शास्त्रों में इस प्रक्रिया को 'अश्वमेध अविनाशी रुद्र ज्ञानयज्ञ' नाम दिया गया है। ब्रह्मा की आत्मा ही रुद्रावतार 'शंकर' नाम-रूपधारी राम (अर्जुन) के संगमयुगी शरीर रूपी घोड़ागाड़ी में प्रवेश करके, इन चारों ही (नं.वार) सच्चे (सात्विक) मन-बुद्धि वाले आत्मा रूपी सफेद (बने) अश्वों को नियंत्रित करती है। इसीलिए बाबा ने भी 6.10.73 पृ.2 की मु. में कहा है • "सुनाते क्या हैं? यही कृष्ण भगवानुवाच्य। घोड़ागाड़ी आदि दिखाते हैं। सो भी कृष्ण को कोचमैन बना दिया है। अब ऐसे तो गीता (रूपी मुरली) नहीं पढ़ी जाती।" यह तो एक रूपक है जिसका अर्थ है कि (बच्चा बुद्धि) कृष्ण की सम्पूर्ण (सूक्ष्म शरीरी) बनी आत्मा किसी ऐसे शरीर रूपी गाड़ी में बैठकर मुरलियों रूपी सच्ची गीता पढ़ती या (समझो) व्याख्या करके सुनाती है जिससे देहधारी आत्मा (राम) के अलावा तीन और भी आत्मा रूपी अश्वों का सम्पर्क-सम्बंध बना ही रहता है। (कलाबद्ध) कृष्ण की आत्मा-ब्रह्मा बाबा ने उन्हीं चार प्रमुख सहयोगी रूपी भुजाओं की सहायता से कल्प (40 वर्ष) पूर्व भी सिध में यह (द्वितीय विश्वयुद्ध की थोड़ी-2) महाभारत लड़ाई (भा+रत ने ही अकेले) लड़ी थी। जिसकी यादगार शिवबाबा ने बंगाल में 4 (संगठित मन और मुखों वाले) घोड़ों की गाड़ी के फैशन रूप में इस प्रकार बताई है •"वहाँ त्रेता में तो राम को 4 भाई होते नहीं" (वास्तविक बात संगमयुग की है ता. 23.9.72) • "(विष्णु की तरह) कृष्ण को भी 4 भुजाएँ दिखाते हैं" (ता. 19.2.75 पृ.2) • "आगे बंगाल में भी 4 घोड़ों की गाड़ी का फैशन था। राजाएँ चढ़ते थे। कृष्ण को 4 घोड़ों की गाड़ी पर दिखाते हैं।" (ता.1.11.73 पृ.2 का मध्यांत) यहाँ खास बंगाल में 4 घोड़ों की गाड़ी का फैशन इसलिए बताया गया कि राम की आत्मा पूर्वजन्म में प्रजापिता थी जिसका शरीर रूपी रथ बंगाली रहा था। [सीढ़ी के चित्र में सतयुग की सीढ़ियों से पहले इन्हीं 4

आत्मा रूपी अश्वों को 4 नौजवान कुमारों के रूप में दिखाया गया है।]

(9) 'गाँवड़े का छोरा' फुल बैगर टू फुल प्रिन्स संगमयुगी कृष्ण

राम की आत्मा अपने संगमयुगी दूसरे जन्म में गाँव में रहने वाले किसी अत्यंत गरीब ब्राह्मण का पुत्र बनती है। बाद में ज्ञान गर्भ में आने पर सम्पूर्ण बनी ब्रह्मा की आत्मा (भी) उस ग्रामीण बालक में प्रवेश करके संगमयुगी कृष्ण का पार्ट बजाती है। यही कारण है कि चित्रों में ब्रह्मा को वयोवृद्ध और कृष्ण को कुमार के रूप में दिखाते हैं। बाबा ने भी कहा है • "ब्रह्मा को हमेशा बड़ा (बूढ़ा) दिखाते हैं और कृष्ण को छोटा।" चूँकि वृद्ध ब्रह्मा ही शरीर छोड़ने के बाद इस देहाती गरीब छोकरे में प्रवेश करके बैगरी पार्ट बजाता है; अतः शिवबाबा ने कहा है • "अभी तुम समझते हो जो श्रीकृष्ण सतयुग का प्रिस था सो फिर 84 जन्मों के बाद (अब स्वर्ग के 21 जन्मों में से पहले जन्म में) बैगर (भी) बना है।" (ता.10.9.76) • "गाँवरे का छोरा तो गरीब होगा ना।" (ता.8.2.75) • " कृष्ण भगवान है नहीं। वह तो सबसे जास्ती पूरे 84 जन्म लेते हैं। इस समय कहाँ होगा? ज़रूर बैगर होगा।" (ता.21.9.74) • "मैं तुमको (अर्थात् हम बच्चों में किसी एक को बैगर से) प्रिस बनाता हूँ जो स्वर्ग का फर्स्ट प्रिस (भी बना) था वह अब 84 जन्म लेकर आय बैगर बना है।" (ता.20.8.76) • " कृष्ण पूरे 84 जन्म लेकर गाँवड़े का छोरा बना है वह (सतयुगी) श्रीकृष्ण बैकुण्ठ का मालिक था। उनकी आत्मा 84 जन्मों के बाद फिर गाँवड़े का छोरा बनी है.....तत् त्वम्।" (अर्थात् राम की आत्मा भी गाँवड़े का छोरा बनी है क्योंकि दोनों का शरीर रूपी रथ तो एक ही है) (ता.16.11.76) सारे भारत का (भावी) प्रतिनिधि यह बैगर से प्रिस बनने वाला संगमयुगी कृष्ण सीढ़ी के चित्र में सबसे नीचे विदेशियों से भीख माँगते हुए नीच-ते-नीच पतित अवस्था में दिखाया गया है; जबकि इसी चित्र में ऊपर सतयुगी सीढ़ियों के दाईं ओर सबसे ऊँची स्टेज में विश्व विजय की माला पहनने वाले संगमयुगी बेहद के प्रिस-कृष्ण को भी दिखाया गया है।

ओमक्रान्तिः ॥ ओमशान्तिः ॥

॥ॐ शान्ति ॥ । **।ॐ ॥ परम+आत्मा प्रत्यक्षता बॉम्ब ॥ ट्रा. ॥** **नगाड़ा नं. 9**

कल्पवृक्ष

झाड़ का चित्र साक्षात्कार के द्वारा बनाया गया है। पुराना चित्र 30x40 इंच के आकार में छपाया गया है, और इस चित्र में उल्टे वृक्ष को सीधा करके दिखाया है। गीता में थोड़ा इशारा है। भक्ति मार्ग में भी इशारा है। ऊपर को जड़ें हैं और नीचे को शाखाएँ फैली हुई हैं। (आधारमूर्त) जड़ें ऊपर को हैं, माना ऊर्ध्वगामी हैं और शाखाएँ नीचे को हैं इसका मतलब है वो (नारकीय) हिस्सा है। वह पतनोन्मुखी हैं। इस वृक्ष को यहाँ सीधा करके दिखाया गया है। जड़ों का भाग भल नीचे दिखाया गया है और (मुख्य) जड़ों के साथ (बाकी) जड़ें तो बाद में निकलती हैं, जड़ों के पहले बीज होते हैं। बीज पहले अपने को खाक में मिलाता है। शिवबाबा बोलते हैं व अ.वा. में भी बोला है- "अब देखेंगे- राख कौन बनते हैं? और कितने बनते हैं? और कोटों में से एक, लाखों (पुरुषार्थियों) में से एक कौन निकलते हैं, वो भी देखेंगे।" तो जड़ों के साथ जड़ों से पहले ज़रूर बीज भी है। बीज अपने को मिट्टी में मिला देता है। ये कहावत है कि 'दाना ख़ाक में मिलकर गुले-गुलज़ार होता है।' ये बाग कब बनता है, जबकि

उसका बीज अपने को मिट्टी में मिला देता है। तो (अर्श में) इस वृक्ष की जो शाखाएँ (गीता में) नीचे को दिखाई जाती हैं वो यहाँ (संसार वृक्ष को) समझाने के लिए ऊपर (आत्मलोक में) दिखाई गई हैं। जहाँ जड़ों का हिस्सा भी दिखाया गया है, जो (गीता में) ऊर्ध्वगामी है। ऊर्ध्वगामी का मतलब है (पु.) संगमयुग में ही (भगवान के आत्मलोक से आने पर जड़ों की) चढ़ती कला होती है। (बीज और) जड़ों का हिस्सा जो इस वृक्ष में दिखाया गया है ये हमारी चढ़ती कला का युग है। इस(झाड़) में जड़ (और बीज) के रूप में आधारमूर्त (और उद्धामूर्त) आत्माओं की भी चढ़ती कला है। उन जड़ों को जन्म देने वाले (उन विदेशी या विधर्मी) बीजों के भी बीजरूप आत्मा (प्रजापिता आदम) की भी चढ़ती कला का युग है। तो (सृष्टि-) वृक्ष के इस तरह 5 भाग दिखाए गए हैं। चार युगों के चार भाग- सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग और पाँचवा भाग है ये जड़ों का हिस्सा जहाँ (संगमयुग में) बीजारोपण होता है, जहाँ (सभी) धर्मों का फाउंडेशन (स्टोन भी) डाला जाता है। फाउंडेशन माना (ही) जड़ें। अनेक प्रकार के राज्यों का भी फाउंडेशन यहाँ (संगम में) पड़ता है। अनेक प्रकार के धर्मों का भी फाउंडेशन यहाँ पड़ता है और फिर देवी-देवता सनातन धर्म का भी फाउंडेशन परमपिता+परमात्मा (स्वयं ही) डालता है। अनेक (दैहिक) धर्मों का फाउंडेशन ज़रूर देहधारी मनुष्यों के द्वारा पड़ता है। ब्राह्मण भी मनुष्य ही हैं। इसलिए भारतीय परम्परा में ब्राह्मणों की नौ कुरियाँ मानी गई हैं। 9 गोत्र माने गए हैं। कहते हैं 9 (पवित्र) ऋषि थे जिनसे ब्राह्मणों के (नं. वार) 9 कुल उत्पन्न हुए। अब यह बात समझ में आती है कि आदि ब्रह्मा की औलाद जो (नं. वार) अष्ट-नव रत्न हैं, उन नव रत्नों से ही सृष्टि (के अनेक धर्मों) का सारा विस्तार होता है। उनमें मोस्ट वैल्युएबल रत्न भी हैं तो नॉन वैल्युएबल भी हैं। लेकिन वो नवरत्न स्वयं भी प्राप्ति (नं. वार ही) करते हैं और अपने फॉलोअर्स को भी (वैसी ही) प्राप्ति कराते हैं, (या) कराने के निमित्त बनते हैं। लेकिन (झाड़ में) तो जड़ों के (निचले) भाग पर (8 बीजरूप मनुष्य-आत्माएँ) बैठी हुई दिखाई देवे? चार जड़ें दाईं ओर और चार जड़ें बाईं ओर (जिन) पर बैठी हुई चार-चार मनुष्य-आत्माएँ (हैं) और बीच में जो जड़ प्राय:लोप ही दिखाई गई है, उनमें दो प्रमुख आत्माओं के रूप में मात-पिता बैठे दिखाए गए हैं। यहाँ बाबा ने बनियन ट्री का मिसाल दिया है। बाइप्लॉट जड़ें तो हैं; लेकिन जो मूल जड़ है वो सड़ गई है। देवी-देवता धर्म का जो मूल फाउंडेशन है वो प्रायःलोप हो जाता है। एक बड़ का ही झाड़ ऐसा है। और भी झाड़ हैं जिनकी (लकड़ी भी) दूध वाली होती हैं। और उनकी लकड़ी पानी में डालने के बाद भी सड़ती नहीं। लेकिन इस झाड़ के लिए दिखाते हैं, कलकत्ता में जो बनियन ट्री है और वैसे भी जो बरगद के झाड़ होते हैं, उनमें नीचे का हिस्सा सड़ जाता है; लेकिन जिस हिस्से को पानी नहीं मिलता, नमी नहीं मिलती अर्थात् ज्ञान जल नहीं मिलता वही हिस्सा सड़ जाता है; लेकिन जड़ का वो हिस्सा जो कि नीचे गहराई तक नमी के अन्दर रहता है, वो नहीं सड़ता। तो ऐसी भी (विशेष 'जगतं-पितरं वंदे वाली') आत्माएँ हैं जो गहरे फाउंडेशन में रहने वाली हैं वो (ही) हैं देवी देवता सनातन धर्म की । आखरीन कलियुगांत में जो प्राय: लोप हो जाती हैं। पूरा लोप नहीं होतीं। कुछ-न-कुछ जड़ बची ज़रूर रहती है। तो वो नौ/दस धर्म की दस आधारमूर्त आत्माएँ यहाँ दिखाई गई हैं। जड़ों के ऊपर बैठे हुए दस धर्म कौन-2 से हैं? इन धर्मों की विशेषता क्या है अगर इस विशेषता को पहचान लिया जाए तो उस धर्म की विशेष जो आत्माएँ पार्ट बजाने वाली हैं, उनको भी बड़ी आसानी से पहचाना जा सकता है। तो हर

एक धर्म की विशेषता को हम यहाँ देखेंगे।

(1) सनातन धर्म -

पहला है (नर अर्जुन जैसों से नारायण बनाने वाला) आदि सनातन देवी-देवता धर्म। देवी-देवता सनातन धर्म का मुख्य गुण व विशेषता क्या है जो उन आत्माओं में दिखाई देगी और विशेषताएँ तो उनकी दिखाई पड़े या न पड़े; लेकिन एक ऐसी विशेषता है जो सर्वगुणों का राजा है। वो विशेषता उनमें ज़रूर दिखाई देती है क्योंकि देवताओं से ज़्यादा गुणवान तो कोई और धर्म की आत्माएँ होती ही नहीं। ऐसी आत्माएँ हमारे ब्राह्मणों की दुनिया में हर सेंटर में एक/दो ज़रूर मिलेंगी। वो (सर्व गुणों का राजा) गुणधर्म है सहनशीलता, उनमें जितनी सहन करने की शक्ति होगी उतनी और किसी धर्म की आत्माओं में नहीं होगी। जैसे कहते हैं- "धरत परिये पर धरम न छोड़िये" तो ये उनकी धर्म रूपी धारणा है कि वो कैसी भी परिस्थिति में अपनी सहनशीलता को छोड़ेंगी नहीं- **सहनशीलता** उनका सहज और स्वाभाविक गुण है।

(2) क्षत्रिय धर्म-

देवता धर्म के बाद दूसरा है क्षत्रिय धर्म। और क्षत्रिय धर्म का विशेष गुण धर्म है, **सामना करने की शक्ति और समाने की शक्ति।** (विश्वामित्र जैसे) क्षत्रियों ने क्या किया? भारत की हिस्ट्री में विशेषकर कौन राजाएँ हुए? कौन-से धर्म की आत्माओं ने, कौन-सी जाति विशेष की आत्माओं ने राज्य किया? क्षत्रियों ने। ऐसे दूसरे धर्म के भी हुए हैं, लेकिन विशेषकर भारत में (प्राय:) क्षत्रिय वर्ण की आत्माएँ ही राजाई के निमित्त बनीं। तो उनमें जो राजाई के विशेष संस्कार हैं, उन संस्कारों में ये सामना करने की शक्ति कूट-2 कर भरी हुई है। जितना बड़ा राजा बनने वाली आत्मा होगी उतना विकराल से विकराल परिस्थितियों का मुक़ाबला करने की शक्ति ज़रूर होगी। अ.वाणी में बोला है "सागर ज्ञान की लहरों से बड़े-2 तूफानों का सामना करता है; लेकिन अंदर से शांत रहता है।" ऊपर-2 भले कितनी भी लहरें ऊँची से ऊँची आती हैं। ऐसा लगता है जैसे सागर में बहुत अशांति फैली है। वास्तव में वो आत्माएँ अंदर से शांत होती हैं और बाहर से मुक़ाबला करती हैं-अर्थात् संघर्ष करती हैं। संघर्ष करते हुए भी उसके अंदर से कोई अशांति जैसा वातावरण नहीं होता है। जैसे भारत के वीर राजाएँ हुए हैं। उन्होंने युद्ध में जाते समय अपनी अवस्था को कभी दुःखी नहीं दिखाया। हँसते-2 उन्होंने संघर्ष किया। तो इन आत्माओं की ऐसी विशेषता देखने में ज़रूर आएगी।

सामना करने के साथ-2 क्षत्रियों में (सागर जैसी) समाने की शक्ति भी होगी, विदेशी धर्मों की क्रूर आत्माएँ, (राक्षसी) आत्माएँ, आततायी मनुष्य-आत्माएँ, अत्याचारी मनुष्य-आत्माएँ भारत में आईं, और उनको भी भारत के राजाओं ने अपने राज्य में समा लिया अर्थात् शरण दे दी; क्योंकि भारत मात-पिता का देश है; क्योंकि राम बाप को (सूर्यवंशी) कहा जाता है और त्रेतायुगी राम वाली आत्मा का ही राज्य चलता है। रामराज्य का (ही) विशेष गायन है। सतयुग में तो (कलाबद्ध) कृष्ण अर्थात् नारायण वाली आत्मा का राज्य होता है तो राम वाली आत्मा क्षत्रिय धर्म की (भी) है, उस जैसी जितनी भी विशेष- रुद्रमाला की 108 आत्माएँ हैं -उन सबमें अनेक जन्मों के राजाई के संस्कार भरे हुए होंगे; लेकिन ऐसे भी नहीं कह सकते कि उनमें सहनशीलता नहीं है। सहनशीलता होती

है; लेकिन जिसके पास सामना करने की शक्ति होती है वो सहनशीलता को क्यों यूज़ करे? हाँ, स्नेह के सामने झुक सकते हैं, प्यार का बदला प्यार में दे सकते हैं; लेकिन अगर कोई टेढ़ी नज़र उठाकर बात करे तो उनका सामना करना उनके लिए ज़रूरी है। राजा अपने राज्य में किसी से दबकर नहीं रह सकता। और जो दबकर रहता है उसका राज्य ज़्यादा समय नहीं चलता । तो ये थे उन विशेष आत्माओं के गुण। सामना करना और कैसा भी दुश्मन क्यों न हो, अगर शरण में आया है तो भयंकर से भयंकर दुश्मन को भी शरण दे देते हैं ।

(3) इस्लाम धर्म-

इस्लाम धर्म में मुख्य विशेष गुणधर्म काम वासना का समाया हुआ है। ये साधारण कामी नहीं होते, महाकामी होते हैं। एक कामी मनुष्य होता है अपनी स्त्री से ही वासना की पूर्ति करने वाला , उसे भी कामी कहा जाता है; लेकिन ये हैं महाकामी अर्थात् एक से संतुष्ट होने वाले नहीं। जब तक इनकी व्यभिचारी वासना की पूर्ति न हो तब तक अपने जीवन में संतुष्टि नहीं मिलती। तो इनमें व्यभिचार-वृत्ति होती है। यही इनकी (कमजोरी) है। (हिस्ट्री में मुसलमानों की) इस व्यभिचार वृत्ति के कारण ही संसार की आबादी बड़ी तीव्र गति से द्वापर में बढ़ी है।

(4) बौद्ध धर्म-

महात्मा बुद्ध का (ब्रह्मा देव की तरह) विशेष गुणधर्म 'अहिसा परमोधर्म' (लेकिन) जब भारत में बड़े-2 यज्ञ होने लगे और उन यज्ञों में पशु बलि ही नहीं दी जाती थी, बल्कि मनुष्यों को भी काट-2 करके डाला जाता था, जिसे नरबलि कहते थे। बच्चों को भी काट कर डाला जाता था। फिर उनका मांस भूनकर खाते थे- ऐसे हिसक हो (गए) थे। उस समय महात्मा बुद्ध आए और उन्होंने अहिसा का पाठ पढ़ाकर बौद्ध धर्म का प्रचार किया। ऐसी अहिसा का पाठ पढ़ाया कि बड़े-2 राजाएँ भी हिसावृत्ति को छोड़कर अहिसावादी बौद्धी बन गए। बौद्धियों की (ऐसी) अहिसा ही परमोधर्म है; लेकिन ऐसी अहिसा नहीं जो बाबा ने सिखाई है। (शिव)बाबा ने तो डबल अहिसा का पाठ पढ़ाया- (1) किसी को शारीरिक दुःख भी नहीं देना और (2) काम कटारी की हिसा भी नहीं करनी है; लेकिन बौद्धियों को काम कटारी की हिसा का ज्ञान नहीं था। हालांकि ये इतने कामी भी नहीं होते थे। आरम्भ में बौद्ध धर्म में इतनी काम वासना नहीं थी। अपनी स्त्रियों के साथ बड़े मेलजोल के साथ रहते थे; लेकिन बाद में जब बौद्ध विहार बनने लगे, उन विहारों में स्त्री-पुरुष को इकट्ठा रखना शुरू कर दिया। तभी से व्यभिचार फैल गया और यह व्यभिचारी होने लगे। (जिससे) बड़ी तीव्रता से इनमें पतन आया। जो बौद्ध धर्म, बड़ी तेजी से फैला था, वो तेजी से नष्ट (भी) होने लगा। तो इनमें ही संन्यास वृत्ति भी (पहले पहले) आई। बाबा ने मुरली में बोला है- "संन्यासी कब आते हैं? क्रिश्चियन के कुछ पहले आते हैं।" जबकि (सशक्त) संन्यास धर्म तो द्वापर के अंत में क्रिश्चियन के बाद आता है; लेकिन वो तो रियल संन्यासी हैं (की पैदाइश)। बौद्धी तो पहले गृहस्थी (भी) होते हैं। बाद में संन्यासवृत्ति का आरोपण हुआ। तो इनका गुण **अहिसा और (फिर) साथ-2 पवित्रता।** ये उतने अपवित्र नहीं होते थे; इसलिए ये बड़े हेल्दी भी होते थे।

(5) क्रिश्चियन धर्म-

अगला धर्म है क्राइस्ट का क्रिश्चियन धर्म। इस धर्म की विशेषता है- क्रोध वासना। ऐसे नहीं कि ये कामी नहीं

होते। इनमें काम वासना भी है तो व्यभिचार भी है। अनेक तलाक़ देने की प्रथा और अनेक शादियाँ करने की प्रथा इनके धर्म में नूँध है; लेकिन (इनका) ठण्डा मुल्क है। ये धर्म यूरोपिय-अमेरिका आदि ठंडे देशों में फैला है, इसलिए काम वासना ज़्यादा नहीं फैलती; लेकिन क्रोध वासना बहुत है, वो भी ठंडा क्रोध। शंकरजी जैसा क्रोध नहीं कि तीव्रता से क्रोध आया(और), गया एकदम प्रसन्न हो गए, थोड़ी अर्चना पूजा में। नहीं। (क्रिश्चियंस) का क्रोध तो ऐसा है जो अंदर ही अंदर सुलगता रहता है और बाहर से पता भी नहीं लगने देते कि हमारे में क्रोध है और अंदर ही अंदर (कोई-2) ऐसा घातक प्लान बना लेते हैं कि एटम-बम्ब जैसी घातक चीज़ों का निर्माण (भी) कर लिया। ये भी नहीं सोचा कि अपने ही पैर पर (भी) कुल्हाड़ी मार रहे हैं। ऐसी (महा विनाशकारी) चीज़ से हमारे (यादव) कुल का ही संहार होगा। क्रोध में आकर (महा)क्रोधी व्यक्ति अपने घर में ही आग लगा लेता है। तो ऐसे ही इनके अंदर अंदरूनी ठंडा क्रोध रहता है। तो ये क्रिश्चियन हैं महाक्रोधी। इतने तो क्रोधी हैं कि जब दुनिया का (चतुर्थ विश्वयुद्धीय) विनाश होगा तो **उस**में इनका (ही) सबसे बड़ा हिस्सा होगा। ये एटम-बम्बों का विस्फोट करेंगे और (भौतिकवादी) निर्माण भी इन्होंने (ही) किया है ।

(इस प्रकार) इनमें एक और गुण विशेष है, वो है **पॉम्प एण्ड शो**। पॉम्प एण्ड शो की विशेष वृत्ति है- प्रदर्शन की वृत्ति। प्रदर्शन करने की वृत्ति, एडवरटाइज करने की वृत्ति ये भारतीय वृत्ति नहीं। भारत में तो अगर योगी भी हुए हैं, रिद्धि-सिद्धि अल्पकाल की प्राप्ति कराने वाले जो भी हुए हैं, उन्होंने अपने को गुप्त रखने का प्रयास किया; लेकिन इस धर्म में ये विशेषता नहीं है। तो इस धर्म में क्रोध और दूसरा प्रदर्शन की वृत्ति विशेष समाई हुई है।

(6) संन्यास धर्म-

(पावरफुल) संन्यास धर्म भी भारतीय धर्म है। भारत में ही फलता-फूलता है, द्वापर (के अंत) से लेकर कलियुग के अंत समय तक । सिर्फ लास्ट के 50-60 वर्षों में जब ये वैज्ञानिक चमत्कार ज़्यादा हुए, तब से ये विदेशों में फैल जाते हैं। (क्योंकि) भारत में इनकी पोलपट्टी खुलने लगती है। तो इस धर्म का विशेष गुण क्या है? कायरता वाली पवित्रता। जैसे कोई 5-10 साल जेल में रहे और बाहर निकलने पर कहे कि मैं 5-10 साल पवित्र रहा हूँ। मैंने कितना त्याग किया है; लेकिन यह तो मजबूरी है। तो ऐसे ही इनमें ये विशेष बात है कि ये दूर (-दूर जंगल में) रहकर पवित्रता का पालन करने में ये सक्षम (रहें) हैं, (स्त्री) के साथ में रहकर अपने को विकारों से बचा नहीं सकते। ये कायरता वाली पवित्रता इनके अंदर है; परंतु (फिर भी) ये पवित्र तो रहते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं- अगर ये संन्यासी न होते तो मध्यांत द्वापर तक पहुँचते-2 भारतवासी जो (एक ही भारी भूल से महाभोगी) कृष्ण की उपासना करते-2 इतने अंधे हो गए कि उनकी बुद्धि में ये आने लगा कि कृष्ण को 16 हज़ार रानियाँ थीं तो हमको 50,100, 200 क्यों नहीं रह सकतीं ? (भारतीय) राजाओं ने (भी) ऐसा व्यभिचार शुरू किया। तो यथा राजा तथा भारत की प्रजा भी व्यभिचारी बनने लगी। राजाओं के पास तो बहुत ऐश्वर्य होता है, धन-सम्पत्ति होती है। वो तो खुलेआम अनेकों शादियाँ करके व्यभिचार में रत रह सकते थे; लेकिन आम पब्लिक के पास इतना ऐश्वर्य नहीं होता। तो उन्होंने फिर चोरी-छिपे व्यभिचार करना शुरू कर दिया। इस तरह भारत में जब तेज़ी से व्यभिचार फैलने लगा, भारत का पतन होने लगा तब (आदि) शंकराचार्य आत्मलोक से आए, फिर

उन्होंने आकर ऐसा ज्ञान दिया कि भारत के राजाएँ अपना घर-घाट, राज-पाट और रानियों को त्यागकर पवित्र जीवन जंगल में जाकर बिताने लगे। उनके साथ उनकी प्रजा भी साथी बन गई। तो संन्यासियों ने वैरागी बनाया। अगर उस समय संन्यासी न आए होते तो भारत काम विकार में जल-भुन करके राख हो गया होता। इनमें दूर रहकर पवित्रता को पालन करने की विशेष शक्ति है। साथ-2 इनमें अहंकार भी ज़्यादा होता है। त्याग और पवित्रता का बहुत अहंकार आ जाता है और उस अहंकार के कारण ही ये फिर तेजी से नीचे गिरने लग पड़ते हैं। जितना अंहकार संन्यासियों में देखा जाता है उतना अहंकार (नास्तिकों या और धर्म) किसी में नहीं होता। नास्तिक धर्म की आत्माओं में ही इनकी टक्कर का अहंकार हो सकता है; लेकिन थोड़ा-बहुत अंतर है, ये कम-से-कम निराकार भगवान को तो मानते हैं। चलो शिवोऽहम् कह देते हैं; लेकिन परमात्मा के गुणों को तो मानते हैं; लेकिन इनमें जो अहंकार है वो इतना ऊपर चढ़ जाता है कि अपने को ही भगवान समझकर बैठ जाते हैं। ये बात ही बहुत घातक है।

(7) मुस्लिम धर्म-

मुस्लिम धर्म (खास) मोहम्मद के द्वारा फैला, जब अरबियंस अर्थात् इस्लामियों की मूर्तिपूजा की अंधश्रद्धा बहुत अति को पहुँच चुकी थी। पहले ये स्लामी मूर्तिपूजक थे। तो इस अंधश्रद्धा का मोहम्मद ने आ करके खंडन कर दिया और जितने भी इस्लामी थे, ज़्यादा से ज़्यादा मोहम्मद को फॉलो करने लग पड़े; क्योंकि इस्लाम धर्म मनुष्य के द्वारा (ही) स्थापित किया हुआ धर्म है; इसलिए मनुष्य के द्वारा स्थापित किया हुआ धर्म ज़्यादा सात्विक स्टेज में नहीं रह सकता। तो उसका अंधश्रद्धा, अंधविश्वास,व्यभिचार और काम वासना के आधार पर तेज़ी से पतन हुआ। (बाद में) उसको नया रूप देने के लिए मोहम्मद ने आकर मुस्लिम धर्म स्थापित किया। ऐसे नहीं कि मुस्लिम धर्म में काम वासना नहीं रही। काम वासना तो दिन दुनी, रात चौगुनी और बढ़नी है, न कि घटनी है। तो खून तो वही है (कामी स्लामी) अरबियंस वाला (है)। एक बात हुई हिस्ट्री में कि ये जो अरबियंस (का) देश है वहाँ रेगिस्तानी इलाका है। वहाँ कुछ पैदाइश नहीं होती। अभी भी नहीं होती। अभी तेल के भंडार निकल पड़े हैं तो इसके कारण ये (अब अंत में) बहुत धनवान हो गए। नहीं तो पहले बहुत गरीबी हो गई थी; और जब तेज़ी से जनसंख्या बढ़ी तो वहाँ का रेगिस्तानी इलाका इनको (उतना भरपूर) ऐशो आराम नहीं दे सका और जब यह गरीब होने लगे तो इनकी अय्याशी, ऐशो-आराम की ज़िन्दगी बिताने की पूर्ति में बाधा आ गई। तो उसकी पूर्ति करने के लिए इनकी नज़र खुशहाल भारत देश के ऊपर गई और इन्होंने लाखों की तादाद में इकट्ठे होकर बड़ी-2 सेनाएँ बनाकर भारत के ऊपर हमला करना शुरू कर दिया। लुटेरों की तरह इन्होंने भारत वर्ष को लूटा। हिस्ट्री में भारत के ऊपर किए गए इनके आक्रमण प्रसिद्ध हैं। तो दुनिया में हिस्ट्री के अंदर ये धर्म कामी तो हैं ही; लेकिन साथ-2 लोभी-लालची (और स्लीलंपट) भी हैं। लोभ जितना इनके अंदर समाया हुआ है उतना लोभ दुनिया के किसी धर्म में समाया हुआ नहीं है।

(8) सिक्ख धर्म-

मुसलमानों के (आक्रमण और) अत्याचार द्वापर के अंत यानी कलियुग के आदि से ही शुरू हो चुके थे।

पहला-2 आक्रमण मुहम्मद बिन कासिम के द्वारा कलियुग के आरम्भ में हुआ। उस समय से ले करके मध्य कलियुग तक आते-2 मुसलमानों का वर्चस्व इतना हो गया कि करीब-2 सारे भारत में मुसलमानों का राज्य फैल गया और इन लोगों के अत्याचार भी इतने बढ़ गए कि जो सीमा से बाहर थे। ज़बरदस्ती तलवार की नोंक से इन्होंने हिंदुओं को मुसलमान बनाया। तो उस अत्याचार का प्रतिकार करने के लिए (आखरीन) परमधाम से एक ऐसी आत्मा आई जिसने भारत के उन सोए हुए राजपूतों (में से कुछ) को जगाया और उनको ऐसा ज्ञान दिया कि हट्टे-कट्टे राजपूत, जिनमें थोड़ी ऐसी हठ होती थी, कि वो अंग्रेजों और मुसलमानों से (लगातार) टक्कर लेते रहे। उन्होंने जितनी टक्कर ली है विदेशियों से (और) विदेशी आक्रमणों से, जितने बलिदान सिक्खों ने दिए हैं उतने हिंदुओं ने भी नहीं दिए हैं। तो सिक्ख धर्म ने हमेशा भारत का सहयोग किया है। ये जितने भारत के सहयोगी रहे, भारतीय परम्परा, (और) भारतीय सभ्यता के उतना कोई दूसरा धर्म भारत का सहयोगी नहीं बन सका। बौद्धी भी आदि में सहयोगी तो रहे; अहिंसा का पाठ पढ़ाया लेकिन बाद में इनमें कायरता भरी अहिंसा के कारण कमज़ोरी आ गई। विदेशी आक्रांताओं ने इनके ऊपर आक्रमण किए तो ये झुक गए और ये उनके सहज रूप में आधीन हो गए। अपने बीबी, बाल-बच्चों को भी (आक्रान्ताओं को ही) सौंप दिया। तो बौद्धी आधीन हो गए; इसलिए भारत के (पूरे) सहयोगी नहीं बन सके। बाक़ी रहे संन्यासी, उन्होंने तो दुनिया को ही छोड़ दिया, गृहस्थ जीवन को ही छोड़ दिया। बिना गृहस्थ जीवन के भला राजाई कैसे चल सकती है? तो उनका भी (ब्रह्मचर्य व्रत में) सहयोगी होना न होना बाद में बराबर हो गया। जब तक सतोप्रधान थे तो संन्यासी भारत को (थमाने में कुछ) सहयोगी बने; लेकिन जब तमोप्रधान बने तो इनका कोई सहयोग नहीं रहा। एक सिक्ख धर्म ही ऐसा है कि जब से ये धर्म उदय हुआ आज से 5-600 वर्ष पहले से लेकर अंत तक ये भारत के सहयोगी रहे। (क्षत्रिय राजा) राम की परम्पराओं के पक्षपाती रहे। भले ही निराकार को मानने वाले रहे; लेकिन साथ में देवी-देवताओं की भी उपासना इनमें (चालू) रही। कभी (प्रवृत्तिमार्गी दैवी देवों की) ग्लानि नहीं की। यही एक ऐसा धर्म है जो बाबा की मुरली (अनुसार) प्रवृत्तिमार्ग का दूसरे नं. का (भारतीय) धर्म है। पहला नं. देवी-देवता धर्म, प्रवृत्तिमार्ग का अव्वल नं. का और दूसरे नं. का धर्म है सिक्ख धर्म। तो नई दुनिया की फाउंडेशन (में) सब धर्मों के मुक़ाबले कौन-सा धर्म है जो देवी-देवता सनातन धर्म का फाउंडेशन बनाया जाता है; क्योंकि जो देवी-देवताएँ थे वो तो संग के रंग में आकर बिल्कुल ही भ्रष्टाचारी बन गए। उनको तो इतनी अक्ल ही नहीं रही। बिल्कुल तमोप्रधान बन जाते हैं; लेकिन सिक्ख धर्म कोई (इतना) पुराना धर्म नहीं है, बाद में आता है। तो जो धर्म बाद में उदय होता है वो न ज़्यादा तमोप्रधान बनता, न ज़्यादा सतोप्रधान बनता है। तो अंत में भी इनमें कम-से-कम इतनी तो अक्ल है कि कमा करके अर्थात् मेहनत करके खाना है, हराम की कमाई नहीं खानी। तो ये आज भी बड़े मेहनतकश हैं। (इसलिए) ये सिक्ख धर्म ही है जो (दैवी-देवता सनातन धर्म का) फाउन्डेशन बनाया जाता है। देवी-देवता धर्म का सहयोगी धर्म तो है, हालाँकि सिक्ख धर्म की आज थोड़ी से आत्माएँ ऐसी भी हैं जो विदेशियों के प्रभाव से प्रभावित होकर आतंकवादी बन गईं हैं। वो तो (दुनियाँ) हर धर्म (हर जड़-चेतन) लास्ट में पहुँच कर तमोप्रधान बनता ही है। तो ये ड्रामा (ही ऐसा) बना हुआ है।

(9) आर्यसमाजी-

आर्यसमाजी का विशेष गुण धर्म है- **प्रजा के प्रति मोह।** जनसंख्या की वृद्धि हो जाए। ज़्यादा से ज़्यादा लोग हमारा (वोट देने वाले) फॉलोअर्स बन जाएँ। हमारी नेतागिरी के अंदर ज़्यादा से ज़्यादा लोग बने रहें। यानी ज़्यादा से ज़्यादा वोट बनाने की परम्परा इन्हीं आर्यसमाजियों में है। इसलिए मुरलियों में इनडायरैक्टली इन आर्यसमाजियों को बाबा ने 'कौरव' कहा है। है तो भारतीय धर्म। (महाभारत के) कौरव भी भारतीय थे; लेकिन ये अर्धनास्तिक हैं। अर्ध नास्तिक किस हिसाब से? ये निराकार को तो मानते हैं। यज्ञ परम्पराओं की (अंधश्रध्दायुक्त स्वाहा-2 वाली) यज्ञ-प्रक्रियाएँ भी करते हैं; लेकिन साकार (स्वर्ग के) देवी-देवताओं को नहीं मानते हैं। उनका कहना है- इसी (वर्तमान) दुनिया में स्वर्ग है और इसी दुनिया में नर्क है। तो आर्यसमाजियों का विशेष गुणधर्म है- प्रजा के प्रति मोह। कैसे? जब से महर्षि दयानंद आए तब से उन्होंने एक ऐसा रास्ता भारत के अंदर खोल दिया, जिसमें दुनिया के कोई भी धर्म की आत्मा हो, कोई भी नीच-से-नीच जाति का व्यक्ति हो, उसको उन्होंने हिंदू बनाना शुरू कर दिया। ये नहीं देखा कि हम क्वालिटी बना रहे हैं या संख्या बढ़ा रहे हैं। क्वालिटी भले गिर जाए; लेकिन तादाद बढ़ जानी चाहिए। बुद्धि में ये बात नहीं आएगी कि शेर जैसा एक बच्चा पैदा करना ज्यादा श्रेष्ठ है या गीदड़ों जैसे अनेक बच्चे पैदा कर देना, ये ज़्यादा श्रेष्ठ है? तो अन्जाम क्या हुआ? भारत वर्ष की देवी-देवता सनातन धर्म की जो (कच्ची) आत्माएँ टाइम टू टाइम दूसरे धर्मों में कन्वर्ट होती रही थीं; क्योंकि (हिस्ट्री में) हिंदू ही दूसरे-2 धर्मों में कन्वर्ट हुए हैं। दूसरे धर्म की आत्माएँ कभी हिंदू नहीं बनीं और न (भारतीयों ने) उन्हें (पहले कभी) अपने में कभी मिक्स किया। तो (हिन्दू ही) दूसरे धर्मों में कन्वर्ट होते रहे। इस्लाम धर्म आया तो इस्लाम धर्म में चले गए। इस्लाम धर्म में जब उनको सुख नहीं मिला (और फिर बौद्धि)। क्रिश्चियन धर्म में भी सुख नहीं मिला तो मुस्लिम धर्म में कन्वर्ट हो गए। तो ऐसे एक से दूसरे, दूसरे से तीसरे धर्म में जहाँ-जहाँ अवसर देखा सुख पाने का , वहाँ-2 (नए-2) सतोप्रधान धर्म में घुसते चले गए; लेकिन गीता में जैसा बताया "स्वधर्मे निधनं श्रेय:परधर्मो भयावह" (अर्थात्) बाबा ने बताया "अपने धर्म में मर जाना अच्छा है। दूसरे का धर्म दुःख देने वाला है।" तो इनकी हमेशा ये ही वृत्ति रही कि हमारा अपना कोई निश्चित पक्का धर्म नहीं है। जो आया उसी धर्म को अपनाते रहे। जैसे अवसर देखा वैसे कन्वर्ट हो गए। जैसे आज के नेताएँ अवसरवादी हैं। जहाँ देखी तवा बरात, वहाँ अपने को चेन्ज कर लिया। तो ऐसी जो आत्माएँ हैं, उन्होंने जब भारत में महर्षि दयानंद के द्वारा ऐसी धर्म (निरपेक्षता) की स्थापना की बात सुनी तो वो फट से ललचायमान हुए; क्योंकि इनके (आत्मा के) अंदर (भी कुछ) संस्कार भरे हुए हैं, भारत के स्वर्गीय सुख भोगने के। जितने उन्होंने भारत में सुख देखे, उनकी आत्मा ने अनुभव किए, उतने (स्वर्गीय) सुख तो वो किसी (मानवीय) धर्म में अनुभव कर ही नहीं पाए। धर्म कन्वर्ट करने से कहीं सुख थोड़े ही हो सकता है

जहाँ पक्का धर्म होता है, वहीं शक्ति होती है और शक्ति से ही सुख भोगा जाता है। (रिलीजन इज़ माइट कही जाती है) जहाँ आदमी में शक्ति नहीं होती तो सुख क्या भोगेगा? अंदरूनी (मानसिक) शक्ति हो, चाहे बाहरी (शारीरिक) शक्ति हो। जहाँ (किसी नं.वार) धर्म के प्रति मान्यता (या आस्था) नहीं, वहाँ शक्ति भी नहीं। माइट

भी नहीं रह सकती। तो जो हर धर्म में कन्वर्ट होती हुई आत्माएँ अपने को बिल्कुल कमज़ोर कर बैठी हैं, तो कमज़ोर हुई आत्माएँ ही फिर आ कर (अंत के) भारत में आर्यसमाजी हिन्दु बन गईं। जो धर्म की इतनी कमज़ोर आत्माएँ हैं कि (स्थिर) राजसत्ता चलाने के क़ाबिल हैं नहीं। इनके राज्य में तो वो हिसाब होगा जो गायन है "टका सेर भाजी टका सेर खाजा, अंधेर नगरी चौपट राजा"। प्रजा के ऊपर प्रजा के शासन को बाबा ने बताया है बेकायदे राज्य। अनलॉफुल, अनराइटियस राज्य। तो ये (दुनियाँ का सबसे अंतिम) धर्म भारत का सबसे नीचा गिरा हुआ धर्म है। तामसी स्टेज का धर्म है। अंतिम (सिर्फ) 100 वर्षों (तक)-में पनपने वाला (भी नहीं) है। जब नास्तिक (कहे गए अधर्म) की बढ़ोतरी होती है जो (वो दुनियाँ का) लास्ट धर्म है, उसी समय (ये) अर्धनास्तिक (आर्यसमाजी) भी आते हैं। एक तरफ महर्षि दयानंद ने आ करके आर्यसमाज धर्म चलाया और दूसरी तरफ़ रशिया में लेनिन और स्टालिन ने आ करके (टोटल) नास्तिकवाद का आरोपण किया। जितने भी वहाँ (एशिया) के बड़े-2 जार राजाएँ थे, उनका क़त्लेआम करवा दिया। ये दो धर्म दुनिया के, जो राजाई को पसंद नहीं करते, न ही राजाओं को पसंद करते। अंग्रेज गवर्मेंट के समय थोड़े से राजाएँ थे जिनको उन्होंने पेंशन और उपाधि वगैरह देकर कम-से-कम उनका नाम तो क़ायम रखा; लेकिन जब से कौरव (और ये नास्तिक) गवर्मेंट आई है तब से ये हाल हुआ है कि (सारी दुनियाँ से) राजाओं का नाम-निशान भी गुम हो गया।

(10) नास्तिकवाद-

ये न आत्मा को मानते हैं, न परमात्मा को मानते हैं, न स्वर्ग को मानते, न नर्क को। ये सिर्फ़ देह (के भौतिक सुख) को ही सब-कुछ मानते हैं। देह के विश्लेषण में ही इनकी बुद्धि गई है। देह माने मिट्टी। तो मिट्टी के अणु-अणु का इन्होंने बुद्धि से विश्लेषण कर डाला और अणु-बम्ब, एटम-बॉम्ब बना डाले। दुनिया के लिए ख़तरा पैदा कर दिया। और अपने लिए भी ये आत्माएँ कन्सट्रक्शन करने वाली नहीं हैं; लेकिन डिस्ट्रक्शन करने वाली आत्माएँ हैं। परमात्मा के कार्य में ये सहयोगी नहीं बनती हैं; लेकिन परमात्मा भी चतुरसुजान है (तामसी दुखदाई कलियुगी दुनियां के) डिस्ट्रक्शन के स्थूल कार्य में ऐसी ही आत्माओं को निमित्त बनाता है। एक तरफ़ परमात्मा आता है ज्ञान का बीजारोपण करता है, भारत में विशेष (देव-) आत्माओं को निमित्त बनाता है और दूसरी तरफ़ रूस में एटमिक एनर्जी का निर्माण (भी) शुरू हो गया। ये ईजाद भी इन्हीं लोगों की है। योरोपियंस ने तो इसको बाद में अपनाया है। तो ये (एशियंस) हुए अहंकारी। इन सिद्धांतों के आधार पर कोई भी आत्मा (धर्म) पहचाना जा सकता है। वृक्ष में ये ऊपर का हिस्सा जो वृक्ष का अंतिम हिस्सा है, वो काटकर नीचे कलम लगाया गया है। इसका मतलब है कि (कलियुगांत से) हर धर्म की चुनी हुई कुछ विशेष आत्माएँ हैं वो (ब्रह्मा द्वारा) ब्राह्मण धर्म में आरोपण कर दी गई हैं। तो (वे नं. वार भारतीय जो) दूसरे-2 धर्मों से कन्वर्ट होकर आत्माएँ आईं और (संगम में ब्रह्मा की औलाद) ब्राह्मण बनीं (थी); तो निश्चित है कि एक जैसी नहीं होतीं। उनके तीन ग्रुप हैं मुख्य जो यहाँ (संगम) से फैले हैं। जड़ों के भाग में (भी) ये तीन ग्रुप हैं। ऐसे ही डालियों के भाग में भी ये तीन मुख्य ग्रुप हैं। पहला ग्रुप है देवी-देवता सनातन धर्म का पक्का, जिनके मुखिया के रूप में मात-पिता ('जगत पितरं') बैठे हुए दिखाए गए हैं। पिता के रूप में (प्रजापिता+) ब्रह्मा बिठाए गए हैं और माता के रूप में मम्मा को बिठाया गया है;

इसलिए यह नहीं समझना है कि ये ही मम्मा-बाबा हैं। क्या समझना है? सृष्टि के मात-पिता, जगतअम्बा और जगतपिता, एडम और ईव बैठे हैं, जिनके ही द्वारा नई सृष्टि का फाउंडेशन लगाया जाता है। तो निश्चित है कि पिता वाली आत्मा अव्वल (नं. सनत्कुमार के सनातन) धर्म से होती है।

देवी-देवता सनातन धर्म के भी दो रूप हैं। जैसे हर धर्म की दो मुख्य डालियाँ हो गईं। इस्लाम धर्म के साथ मुस्लिम धर्म जुड़ा हुआ है। क्रिश्चियन धर्म के साथ (रशिया-चीन का) नास्तिक (अ)धर्म साथ में जुड़ा है। ऐसे ही जो देवी-देवता सनातन धर्म है वो तो पक्का प्रवृत्ति मार्ग वाला है। तो उसमें प्रवृत्ति किसकी है? देवता धर्म और क्षत्रिय धर्म की। अंतिम धर्म क्षत्रिय धर्म की जो विशेष पार्ट बजाने वाली आत्मा है, वो राम(बाप) वाली आत्मा वो हो गई प्रजापिता(आदम) के रूप में पार्ट बजाने वाली। एडम के रूप में पार्ट बजाने वाली और देवता होते (ही) हैं मृदुल स्वभाव वाले। तो उनका जो मुखिया है कृष्ण (चन्द्र) वाली- मीठी (और शीतल स्वभाव की चंद्रमा जैसी) आत्मा। वो हो गई माता के रूप में पार्ट बजाने वाली (ब्रह्म+माँ की) आत्मा, जगतमाता अर्थात् जगत् अम्बा। ये जो देवी-देवता सनातन धर्म का मुख्य भाग है बीच वाला (थुर भाग), ये आदि से लेकर कलियुग अंत तक इस तरह की आत्माएँ हैं जिसको फालो करने वाली (भी) अपने धर्म में पक्की रहती हैं। अपने जीवन में तो कभी भी अपने धर्म को छोड़ (दाएँ-बाएं धर्मों की डालियाँ में जाने) वाली नहीं बनतीं। इसलिए बाबा बोलते हैं (कि) तुम बच्चे हो आदि सनातन देवी-देवता धर्म के पक्के। मतलब, कभी दूसरे धर्म में कन्वर्ट न होने वाले (बाकी जो दूसरे) आस-पास ब्राह्मण बैठे हुए हैं, बाईप्लॉट जड़ें दिखाई दे रही, उनमें राइटियस साइड की जो बाइप्लॉट जड़ें हैं वो भारतीय (वि)धर्मों की जड़ें हैं, वो जड़ें ऐसी हैं जो ऐसा (अधूरे ज्ञान का) रस लेती हैं जिनसे (द्वापुर-कलियुग में) भारतीय (विपरीत) धर्मों का (ही) पोषण होता है। भारतीय धर्म की डालियाँ राइट साइड में दिखाई गई हैं। उनको रस कहाँ से मिलता है? उन महात्मा बुद्ध , शंकराचार्य, गुरूनानक, महर्षि दयानंद ये सभी जितने भी (वि)धर्म हैं वो पवित्रता को विशेष महत्व देने वाले (तो) हैं। इसलिए राइटियस सभी हैं। ये पवित्रता को महत्व देने वाले जो राइटियस धर्म कहे जाते हैं इनको रस कहाँ से मिलता है? इनको ज्ञान का रस मिलता ही है इन राइट साइड की (आधारमूर्त) जड़ों से और जड़ों को (भी) जन्म देने वाले कोई बीज (रूप इनके पितर) होते हैं। जो यज्ञ के आदि (ॐ मण्डली) में बीज बन कर इन जड़ों में बीजारोपण किया था । तो ये दूसरा हिस्सा हुआ और तीसरा (सृष्टिवृक्ष का) हिस्सा है लेफ्ट साइड का। बाइप्लॉट की, जो लेफ्ट साइड की जड़ें हैं वो ऐसी जड़ें हैं, संगमयुग में ऐसा फाउंडेशन लगाती है या यज्ञ के अन्दर ऐसा फाउन्डेशन लगाने वाली ब्राह्मण आत्माएँ हैं, जो (अंतिम 7 कुरी के ब्राह्मण) धर्मों से, लेफ्टिस्ट धर्मों से आई हुई हैं। लेफ्टिस्ट धर्मों (की डालियों) में कन्वर्ट होकर अनेक जन्म रही हुई हैं। तो वो आत्माएँ जब (संगम में) ब्राह्मण धर्म में आती हैं तो वो अपने (विदेशी) गुणधर्म को सहज नहीं छोड़ पातीं। कौन-सा गुण धर्म? (जल्दी से) कामुक वृत्ति को नहीं छोड़ पातीं, क्रोध वृत्ति को नहीं छोड़ पातीं, लोभ की वृत्ति को नहीं छोड़ पातीं, अंहकार की वृत्तियों को (भी) नहीं छोड़ पातीं। तो ये (झाड़ के) तीन ग्रुप दिखाए गए हैं। वृक्ष के तीन मुख्य हिस्से हैं- एक है (मध्य का) थुर भाग देवी-दे. स.धर्म का पक्का और दूसरा है राइट साइड का भारतीय (विपरीत) धर्मों का भाग। हैं तो ये स्वदेशी धर्म, विदेशी नहीं हैं; लेकिन विधर्मी हैं। दे.दे.सनातन धर्म का

(सीधा) थ्रु तो ऊपर जा रहा है; लेकिन उन्होंने विपरीत दिशा देवी-देवता सनातन धर्म के विपरीत यानी विरोधी दिशा पकड़ ली है। तीसरा है- लेफ्ट साइड वाले। ये विधर्मी के साथ-2 विदेशी भी हैं। राइट साइड वाली आत्माएँ विदेशी नहीं हैं ये न (नं.वार पक्के) स्वदेशी हैं और न स्वधर्मी हैं। दे.दे.सनातन धर्म को (इन विदेशियों) से जास्ती नुक़सान पहुँचा है। जितना इन्होंने नुक़सान पहुँचाया है उतना राइट साइड वालों ने नहीं पहुँचाया। जड़ों से ही ये बात साबित हो जाती है कि ऊपर के जो भी धर्म हैं, वो इन जड़ों से ही रस लेने वाली आत्माएँ हैं। परमात्मा संगमयुग में सबको ज्ञान का रस तो दे ही रहा है; लेकिन उस रस को अपने-2 तरीके से मनमत (या मानवमत) के आधार पर और अपने गुरुओं की मत के आधार पर ये बाइप्लॉट जड़ों पर बैठी हुई आत्माएँ उसको अपनाने के लिए मजबूर हैं। परमात्मा की बताई गई धारणा को सीधे-2 नहीं अपनाएँगे। ये अपने (दैहिक) गुरुओं के थ्रू अपनाएँगे। जैसे गुरू इनको डायरैक्शन देंगे, उस डायरैक्शन के आधार पर अपनाएँगे। (एक ईश्वर की) श्रीमत को डायरैक्ट अपनाने वाले नहीं होंगे।

इस तरह से ये बात क्लीयर हो जाती है कि ब्राह्मणों की दुनिया में जब (1937से) से शिवबाबा आए और आ करके (ज्ञान) यज्ञ की स्थापना की, उसी समय से स्थापना करने वाली आत्माओं के साथ-2 नं.वार डिस्ट्रक्शन करने वाली आत्माओं का यज्ञ के अंदर प्रवेश होने लग पड़ता है। इसलिए अ.वाणी में बाबा ने बोला था कि "यज्ञकुण्ड से स्थापना के साथ-2 विनाश ज्वाला भी प्रज्वलित हुई। तो विनाश ज्वाला को प्रज्वलित करने वाले कौन? ब्रह्मा, बाप और (नं. वार) ब्राह्मण बच्चे।" माँ-बाप के बीच में अगर बच्चे दख़लंदाज़ी करने लगे तो उन दख़लंदाज़ी करने वाले बच्चों को विदेशी (ही) कहा जावेगा या (पक्का) स्वदेशी? निश्चित रूप से वो विदेशी बच्चे ऐसे यज्ञ में प्रवेश कर गए जिन्होंने माँ-बाप के बीच में फ्रिक्शन डलवा दिया। बाबा ने कहा है–"(दस शीश) रावण जब से आते हैं तब से (अनेक मतों-धर्मों-राज्यों भाषाओं आदि के द्वैतवाद से) भारत में लड़ाई शुरू होती है।" तो द्वापरयुग से रावण आया(ना)। तो भारतवासी (भी) आपस में (ही) लड़ गए। ऊपर से आने वाली इस्लाम धर्म की आत्माओं ने जिन आधारमूर्त जड़ों में प्रवेश किया, तो उनकी दृष्टि-वृत्ति को व्यभिचारी बना दिया। दृष्टि-वृत्ति को व्यभिचारी बनाने वालों का जिन-2 ने सहयोग दिया वो हैं- आर्यसमाजी, नास्तिक वगैरह। सहयोग लेने वाले आधारमूर्त (सिद्धार्थ-जीसिस जैसी) इस्लामादि धर्मों में कनवर्टिड आत्माएँ और उनके फॉलोअर्स भी हैं । उनकी दृष्टि-वृत्ति का करप्शन ब्राह्मण धर्म की जो पक्की और क्षत्रिय धर्म की (भी) द्वापुर के आदि में पक्की थीं, उन्होंने करप्शन स्वीकार नहीं किया, वो उनसे भिड़ गई और खदेड़ करके अरब देशों तक भगा(दिया)। अरब में जाकर वो एकदम स्वतंत्र हो गए और ही व्यभिचार करने लगे। इतने तो ये व्यभिचारी होते थे कि अपनी सगी बहनों से भी शादी कर लेते थे। यज्ञ के अंदर किसी भी प्रकार के विघ्न आते हैं तो उसका मूल कारण अपवित्रता है- ऐसा बाबा ने मुरली में बोला है।(अभी संगम में) ये ब्राह्मणों की दुनिया में (भी) काम महाशत्रु है। इसका प्रभाव किस ग्रुप की आत्माओं के थ्रू आता है? (विदेशी) इस्लाम (आदि धर्मों) की आत्माओं के थ्रू आता है। और जो (कनवर्टिड हिन्दू ही) इनके सहयोगी बनते हैं वो सब उस (व्यभिचारी) वायब्रेशन को फैलाने के निमित्त बन जाते हैं और (सनातनी) भारत के दुश्मन बन जाते हैं। भारत की प्रवृत्ति को तोड़ देते । राम और सीता को जुदा करने वाले कौन हुए? (यही विदेशी

बने खास) रावण का विशेष कार्य है। यज्ञ के अंदर आदि से ही वो (राक्षसी) रावण घुस गए। कहते हैं स्वर्ग में कौन गया? कुत्ता गया पांडवों के साथ-2। तो वही कामी कुत्ते द्वापरयुग से फिर अपना प्रभाव प्रत्यक्ष रूप में दिखाते हैं। जब मम्मा-बाबा शरीर छोड़ देते हैं तो ये (विदेशियों में कनवर्टिड हिन्दुओं सहित) सारी यज्ञ की सत्ता को अपने सहयोगियों के साथ हाथ में समेट कर बैठ जाते है; क्योंकि रावण का सर अकेला नहीं होता। काम विकार के बाद क्रोधी भी सहयोगी बनेंगे, लोभी, मोही, अहंकारी भी सहयोगी बनेंगे। तो (संगम में ज्ञान-) यज्ञ के अंदर पतन होता है तो इन (ही ब्रह्मावत्स बने दिखावटी) धर्म गुरुओं के द्वारा सबसे जास्ती पतन होता है।

ऐसे नहीं कि राइट साइड की जड़ें वो भारत की सहयोगी धर्म वाली हैं। नहीं, वो भी विपरीत आचरण करने लग पड़ती हैं। इसका कारण है- जो भारतीय (वि)धर्म हैं वो इस्लाम (आदि) धर्मों के मुक़ाबले कमज़ोर हैं; क्योंकि (मुख्य विदेशियों के) बाद में आने वाले हैं। जैसे क्रिश्चियन धर्म के मुक़ाबले संन्यास धर्म (कलियुगांत में) कमज़ोर है। इसलिए वृक्ष में संन्यास धर्म की जड़ (आदि में तो) मोटी (ही) दिखाई गई है; इनका आधार (फिर भी) पवित्रता है। कलियुग के अंत में संसार में क्रिश्चियन्स का अंतिम 250 वर्ष में बहुत फैलाव हो जाता है। ये संन्यासी (भी) विदेशों में जाकर इन के आधीन हो जाते हैं, विदेशी संस्कृति को पूरा ही अपने जीवन में ढाल लेते हैं और (मनसा में भी) बहुत ही व्यभिचारी बन जाते हैं। जितने ये पवित्र होते उतने ही दूसरे धर्म वालों से कहीं ज़्यादा अपवित्र हो जाते। सिर्फ़ एक रजनीश की बात थोड़े ही है, सभी संन्यासियों का ये हाल है। नहीं तो (पहले) जंगलों में रहते थे। शहरों में घुसने की दरकार क्या थी? तो ये विदेशी धर्म (तो) नहीं है; फिर भी ये विपरीत आचरण करने वाले (हो जाते) हैं। शास्त्रों में दिखाया है- दानव देवताओं के मुक़ाबले हमेशा पावरफुल रहे। अगर भगवान देवों का सहयोगी न बने तो देवताएँ कभी दानवों से जीत नहीं सकते, हमेशा (विधर्मियों के) आधीन ही बने रहते। ये राइट साइड के जितने भी धर्म हैं वो बड़ी आसानी से आधीन हो जाते हैं। (इनमें) एक सिक्ख धर्म (ही) प्रवृत्तिमार्ग का धर्म है, अंत तक प्रवृत्ति को मानने वाले हैं, 'एक नारी सदा ब्रह्मचारी' ये गायन सिक्खों में है और प्रैक्टिकल जीवन में भी देखा जा रहा है। तो राइट साइड के सिक्ख धर्म को छोड़कर बाक़ी जितने भी राइट (साइड के) धर्म हैं वो लेफ्टिस्ट धर्मों के आधीन हो जाते हैं। बौद्धियों में तो कायरता वाली अहिसा है। जब विदेशियों के आक्रमण हुए, इन्होंने फट से अपने हाथ उठा दिए, अपने शस्त्र छोड़ दिए। (विदेशी) बीबी, बच्चों को भले उठाकर ले गए, तो भी इन्होंने 'अहिसा परमोधर्म' इस बात का (झूठा) नारा लगाया और आधीन हो गए, (बीबी-बच्चे) दास-दासी बन गए। तो भारत के दुश्मन हुए या दोस्त? ये भी दुश्मन हो गए। संन्यासी की बात अभी बताई। ये आरम्भ में तो सतोप्रधान होते हैं; लेकिन बाद में ये बड़ी तेज़ी से नीचे गिरते हैं और जितने भी भारतीय कुल की परम्पराओं को, त्याग और तपस्या को पहले अपनाने वाले होते थे, उतने ही ये ज़्यादा संग्रह करने वाले बन जाते हैं। जितने गृहस्थियों के पास वैभव नहीं होंगे उससे कहीं अनेक गुने, बल्कि 1000 गुने वैभव इनके पास इकट्ठे हो जाते हैं। भारत के कोई-2 ऐसे गृहस्थी होंगे जिनके पास हवाई जहाज होंगे; लेकिन यहाँ के संन्यासी ऐसे भी हैं जिनके पास हवाई जहाज, हेलिकॉप्टर्स भी हैं। तो इतने संग्रही बन जाते हैं। जितने ये तपस्वी थे उतने (गुप्त) भोगी बन जाते हैं। गृहस्थियों की भोग-वासना को तो फिर भी पकड़ा जा सकता है; लेकिन ये तो इतने चालाक होते हैं कि भोगी

भी बनते हैं तो पकड़ में भी नहीं आते। तो ये (भी) हैं (कड़े) दुश्मन, इसलिए ये (भी पक्के) विधर्मी हैं।

आर्यसमाजी तो (किसी) धर्म को मानते ही नहीं। जब धर्म को ही नहीं मानते अर्थात् किसी धारणा को ही नहीं मानते, एक धर्म से दूसरे, दूसरे से तीसरे धर्म में कन्वर्ट होते रहते हैं। तो इनकी जो भारत में आज भी नीति है कौरव, काँग्रेसी गवर्मेंट की है। इनके फॉलोअर्स की वो नीति है (कि) धर्मनिरपेक्ष राज्य हमें चाहिए। हमें ऐसा राज्य चाहिए जिसमें हमें किसी धर्म की अपेक्षा नहीं। धर्म क्या चीज़ होती है- इससे राज्य का कोई कनेक्शन नहीं। तुम धर्म की बातें अपनी अलग करो। तुम्हारा राज्य सत्ता से क्या मतलब? धर्म को जब राजनीति से अलग कर दिया जाता है तो न धर्म में ताकत रहती, न राजनीति में ताकत रहती है। अंग्रेजों से तो हिदुओं ने अर्थात् हिदुस्तान ने छुटकारा पा लिया। गांधी जी ने क्या किया? अंग्रेजों से तो मुक्ति दिलाई; लेकिन इन कौरव-काँग्रेसियों के पंजों में हमको अच्छी तरह फँसा दिया। नाम रख दिया 'कौरव'। 'कौ' माना कौआ, 'रव' माना शोरगुल। कौओं की तरह शोरगुल भाषणबाजी बहुत करते हैं- हम इतनी सुख-समृद्धि लाएँगे, टेलीविजन में, रेडियो में, पब्लिक में भाषणबाजी, हम इतने (डेम) नलकूप लगाएँगे, इतने गाँवों में हमने (बिजली) पानी की व्यवस्था कर दी है और पानी की व्यवस्था कहीं पर भी सही नहीं है। गरीब पब्लिक को ज़्यादा परेशानी है। तो कौ+रवों की तरह शोरगुल ज़्यादा करते हैं। जैसे कौए गंद खाने वाले होते हैं, वैसे ये भी गंद खाने के लिए बड़े-2 (5स्टार) होटल तैयार कर(वाते) हैं। 5 स्टार होटल, नाम कितना बुलन्द; लेकिन उन होटलों में जितना गंद चलता है वो किसी को पता ही नहीं। तो न इनके पास प्योरिटी और ना प्रॉस्पेरिटी रह सकती है। इनके राज्य में प्रजा सुखी रह नहीं सकती; क्योंकि अनलॉफुल (दस मतों वाले दसशीश का) राज्य है।

तो ये लेफ्ट साइड के और राइट साइड के बाइप्लॉट जितने भी धर्म हैं, वो कमजोर होने के कारण भारतीय परम्पराओं के विपरीत गति अपनाने लग पड़ते हैं । कमजोर क्यों हुए? क्योंकि जब परमपिता परमात्मा आ करके ज्ञान का बल देता है, उस ज्ञान को (इनके आधारमूर्त जड़े) अपनी मनमत के आधार पर मिक्स कर देते हैं, अपने (मनुष्य) गुरुओं की मत के आधार पर चल पड़ते हैं। इस्लाम का इन सबके ऊपर (विशेष) प्रभाव पड़ता है। (अर्थात्) जो कुप्रवृत्तियाँ हैं उनमें काम वासना प्रधान है। तो जिसके कारण वह बुद्धि विकारी बनती है, तो उनमें से ज्ञान निकल जाता है। तो ज़रूर यज्ञ के आदि से ही कोई ऐसी आत्माएँ यज्ञ के अंदर प्रवेश कर गईं जो कामी इस्लामी धर्म की बीज और आधारमूर्त जड़ें थीं। इनके प्रवेश करने के कारण ही मात-पिता में संघर्ष हुआ और दोनों (आपस में) जुदा हो गए। अंजाम? हार्टफेल या अकाले मौत हो गयी और यज्ञ की शासन सत्ता कामी, क्रोधी, लोभी, मोही, अहंकारी(यों) के हाथ में आ गई। जो भारतीय राइटियस धर्म की आधारमूर्त और बीजरूप आत्माएँ थीं, वो इन (हिसक विदेशियों) के मुक़ाबले कमज़ोर पड़ती हैं। तो वो भी आधीन हो जाती हैं। मात-पिता में भी माता जब पति के मरने पर असहाय हो जाती है या पति जब संन्यास धारण कर लेता है तब माँ बच्चों के आधीन हो जाती है तो ब्रह्म+माँ (माता रावण जैसे) ब्राह्मण बच्चों की दुनिया में आधीन होकर रही।

"पराधीन सपने सुख नहीं", सहन तो किया वो सहन करना जैसे (अपने औरस बच्चों साथ) खुशी-2 सहन करना चाहिए और खुशी-2 उसका अंजाम होना चाहिए, वो नहीं हुआ। आख़िर में हार्टफेल हुआ और दुःख-दर्द

लेकर शरीर छोड़ गए। जैसे बिच्छु-टिण्डन होते हैं तो बिच्छु जब पैदा होते हैं तो अपनी माँ का पेट फाड़ करके पैदा होते हैं। तो ऐसे ही जो (आधारमूर्त और बीजरूप कच्चे ब्राह्मण) यज्ञ के अंदर घुसे हुए हैं, तो वो बिच्छओं की तरह लम्बे डंक वाले हैं। जहाँ देखते हैं ये कोमल स्वभाव का है, हमारे प्रभाव में आ जाएगा तो उसको डंक ज़रूर मारेंगे और अपना काम बनाएँगे। स्वार्थ का पोषण करेंगे; लेकिन दूसरी आत्माओं को दुःख ज़रूर देंगे। इसलिए बाबा ने मु. में बोला है- "विधर्मियों के प्रति शक्ति स्वरूप बनना है।" अगर शक्ति स्वरूप न बने लूज बने रहे, सिद्धांतों में ढील देते रहे तो तुम्हारे ऊपर हावी हो जाएँगे। ये देवी-देवता सनातन धर्म की स्थापना में सहयोगी बनने वाले नहीं हैं। ये विपरीत आचरण करने लग पड़ेंगे। इसलिए माँ भी आधीन हो जाती है; क्योंकि बाप का साया उसके ऊपर तो है (रहा ही) नहीं। देवी-देवता सनातन धर्म वाली जो सहनशील आत्माएँ हैं, उनके ऊपर बाप जैसी सशक्त (सूर्यवंशी) आत्माओं का हाथ रहता नहीं है। बाप गुप्त हो जाता है और वो आसुरी बच्चे कोमल स्वभाव वाले कृष्ण (चन्द्र) की सोल को ही सर्वे-सर्वा बना देते हैं (कृष्ण ही) कृष्ण गीता का भगवान है; क्योंकि पोलाइट स्वभाव का है। ये हमको डंक मारने देता है। जो डंक मारने दे, भगवान हो गया। जो सामना करे उसको तुम (सर्वव्यापी बनाय) गुम कर दो। जब ऐसा होता है और उसकी अति हो जाती है तब उस गुप्त पार्ट बजाने वाले परमात्मा को संसार में प्रत्यक्ष होना ज़रूरी हो जाता है, "जब-जब होये धर्म की ग्लानि, बाढ़े असुर अधम अभिमानी तब-तब धरि प्रभु मनुज शरीरा"। ब्रह्मा का शरीर छूट जाता है तो (सन् 1976 से) किसी और तन में कार्य तो करता है; लेकिन गुप्त रूप में कार्य करता है। ब्रह्मा का (सीदा-सादा) पार्ट था माँ का। वो तो टेढ़ा पार्ट था ही नहीं। तो पहचानने का कोई प्रश्न ही नहीं था। 'वक्र चंद्रमा ग्रसे न राहू,' टेढ़े चंद्रमा को राहू नहीं पकड़ पाता। जब चंद्रमा सीधा हो जाता है अर्थात् सम्पूर्ण हो जाता है तब राहू भी उसके ऊपर हमला बोल देता है। इसलिए तो गायन है "टेढ़ी अंगुली किये बगैर घी भी नहीं निकलता"। जब तक विधर्मियों के साथ शक्ति स्वरूप नहीं बनेंगे तब तक ये सुधरने वाले नहीं हैं अर्थात् ब्रह्मा की 100 साल आयु पूरी होने के बाद राम बाप ही विकराल रूप धारण करता है। ये क्षत्रिय धर्म की सशक्त आत्मा है। जन्म-जन्मांतर की राजा बनने वाली विशेष आत्मा है। जब (प्रत्यक्षता में) आती है तो ये चोर भागते हैं। जैसे कि प्रदर्शनी अंक में दिखाया गया है कि कैसे चोर ज्ञान सूर्य के प्रगट होने से भाग रहे हैं।

तो एक ही धर्म ऐसा रह गया जो परमात्मा का पहला-2 सहयोगी बनता है वह है 'सिक्ख धर्म'। आदि सनातन धर्म के भी दो छेड़े हैं (वो हैं देवता धर्म और क्षत्रिय धर्म) और क्षत्रिय धर्म की भी (तीव्र स्वभावी किन्तु ढीढ) हेडिड वाली आत्माएँ होती हैं जो सिक्ख धर्म में कन्वर्ट हो जाती हैं। सिक्ख धर्म कलियुग का लास्ट (आस्तिक) धर्म है। तमोप्रधान (कलियुगांत) समय में आया हुआ है। वो तो विदेशियों से, असुरों से मुक़ाबला करने के लिए (खास) निमित्त बनता है। इसलिए बाबा ने बोला है- "त्रिमूर्ति के चित्र में शंकर की जगह मम्मा को बिठाने से बात सहज हो जाती है"; क्योंकि असुर संहारिणी का गायन है। असुर संहारी देवता का गायन नहीं है। शक्तियाँ ही असुरों का संहार करती हैं, जब वो शक्तियाँ शिव की (शक्ति) बन जाती हैं। किसी मनुष्य की शक्ति बनकर नहीं रहतीं, तब उन असुरों का संहार करती हैं।

सिक्ख धर्म की जो विशेष आत्मा है, जिसको फाउंडर बनाया जाता है, वो (जगत की) माता के रूप में बनती है। ब्रह्मा की जो विशेष आत्मा है, शरीर छोड़ने के बाद पहले-2 तो वो (सूक्ष्म शरीर से) गुप्त रूप में पार्ट बजाती है; लेकिन प्रत्यक्षता तब होती जब जगदम्बा का पार्ट प्रत्यक्ष रूप में बजाने वाली आत्मा सम्पन्न बन जाती है 'ब्रह्मा सो विष्णु'। यज्ञ के आदि में कोई एक माता नहीं थी यज्ञ को कण्ट्रोल करने वाली (दो) थी। मुरली में बोला हुआ है "अच्छी-2 बच्चियाँ जो मम्मा-बाबा को भी डायरेक्शन देती थी, ड्रिल कराती थी, टीचर बन करके बैठती थी, हम समझते थे- ये तो बहुत अच्छे नं. माला में आएगी, वो भी गुम हो गए। उनमें बाबा प्रवेश करते थे।" यानी ऐसी बच्चियां भी थीं, जिनमें (निराकार शिव) बाबा का प्रवेश होता था। बाबा कन्या के तन पर सवारी नहीं करते। इससे साबित है वो कन्याएँ नहीं थीं, वो माताएँ थीं। तो उनमें से एक माता के लिए तो अ.वाणी में बोला हुआ है- "भारत माता (शिव) शक्ति अवतार ये अंत का नारा है।" सन् 76 में बाप का प्रत्यक्षता वर्ष मनाया गया, विदेशियों ने बाप को पहचाना और प्रत्यक्ष किया। विदेशी ही तो बाप को प्रत्यक्ष करते हैं। (जो) बीजरूप विदेशी हैं वो बाप को प्रत्यक्ष करते हैं। तो माँ के बिगर (असुर) ज्ञान-यज्ञ की तरफ़ आकर्षित नहीं हो सकते; क्योंकि आसुरी प्रभाव व संस्कार जो हैं वो लक्ष्मी के पीछे फिदा होते हैं, अमृत के पीछे फ़िदा नहीं होते हैं। जब अमृत कलश बांटा गया तो असुरों की नज़र कहाँ लगी हुई थी? मोहिनी रूप के ऊपर और (वे) अमृत पीना भूल गए। उस (लक्ष्मी के) चम्बे में आ गए। मोहिनी रूप के (बहकावे) में उन्हें जो पाना था वो पा नहीं सके। वो बातें कहाँ की हैं? ब्राह्मणों की (संगमयुगी) दुनिया की ही बात है। कोई तो हैं कुखवंशावली और कोई मुखवंशावली। कोई तो ऐसे हैं जो ब्रह्मा के मुख से ज्ञान सुन करके अपने जीवन को चेन्ज करने लग पड़ते हैं और (वे) ज्ञान मुख से (सुनाने वाली) के प्रति आकर्षित (तो) नहीं होते हैं; लेकिन (ब्रह्मा की) गोद के प्रति आकर्षित होते हैं, देह के प्रति आकर्षित होते हैं। चाहे तो वो ब्रह्मा की चिकनी-चुपड़ी देह हो और चाहे ब्रह्माकुमारियाँ की हो, वो देह के प्रति आकर्षित (ज़रूर) होते हैं। ज्ञान के प्रति उनका लगाव नहीं होता। ऐसे जन्म-जन्मांतर के उनके अंदर (आसुरी) संस्कार भरे पड़े हैं। तो ऐसी आसुरी आत्माएँ हैं जो परमात्मा के कार्य में सहयोगी नहीं बन सकती हैं? वो स्थापना का कार्य करेंगी या यज्ञ के अंदर घुसकर जैसे आस्तीनों के साँप जैसे दिखाए जाते हैं (वैसे ही है)। यज्ञ पिता रुद्र किसे कहा जाता है? शंकर को। उसकी बाँहों में घुसे हुए सर्प दिखाए जाते हैं। आस्तीन के साँप अंदर घुसकर बैठते हैं और उनकी दृष्टि-वृत्ति परखी भी नहीं जा सकती। कोई सहज परख भी नहीं सकता। लेकिन उनका लक्ष्य अच्छा नहीं होता। तो 'जैसा लक्ष्य वैसे ही उनके अंदर लक्षण' आते हैं। वो ईश्वरीय यज्ञ के सहयोगी बनने के बजाय असहयोगी बन जाते हैं। (ज्ञानसूर्य) परमात्मा बाप को प्रत्यक्ष करने के बजाय (रात के सितारें की तरह) अपने को प्रत्यक्ष करने लग पड़ते हैं। परमात्मा बाप को गुप्त कर देते हैं। (मंदिरों में यादगार बच्चा) कृष्ण (रचना) को आगे कर देते हैं, रचयिता (बाप) को छुपा देते हैं।

देवी-देवता सनातन धर्म के बाद (त्रेतांत में) जब इस्लाम धर्म की स्थापना हुई जो लेफ्ट साइड की फर्स्ट जड़ है। जिस पर बैठा हुआ (आधारमूर्त) ब्रह्माकुमार जन्म लेते-2 जब द्वापुर के आदि तक पहुँचता है तो उसमें इब्राहीम की सोल प्रवेश करती है और उसकी दृष्टि-वृत्ति को करप्ट कर देती है और उसके जितने भी फॉलोअर्स होते हैं उसके (ही) पीछे चले जाते हैं। उसके (सहित) जितने भी ब्राह्मण वत्स बाइप्लॉट जड़ों पर बैठे हैं वो सब सतयुग के नारायण बनने की योग्यता वाले हैं। जो कम कलाओं के नारायण बनते हैं। ये आत्माएँ कम जन्म लेने वाली हैं

और कम कलाओं वाली हैं। इसलिए भारतवर्ष में (अंतिम) 7 नारायणों की पूजा नहीं होती। लक्ष्मी-नारायण और बिरला मंदिर आदि में भी (सिर्फ़) दो प्रकार के नारायणों की मूर्तियाँ पूजी जाती हैं। उनकी मूर्तियाँ बनी हुई हैं जिनको नर ना. व लक्ष्मी ना. (का) मंदिर कहते हैं। इन मंदिरों में एक तरफ़ विष्णु की मूर्ति रखी हुई है जिसको नर ना. कहा जाता है और दूसरी सतयुगी ना.। यह नारायणों की दो मूर्तियाँ (ही) पूजनीय हैं, महिमावंत हैं। बाक़ी जितने भी नारायण हैं वह महिमा वाले नहीं हैं। उनकी न पूजा होती है, न मंदिर बनते हैं। ये गिरती कला वाले हैं। (द्वापुर से) खुद भी गिरती कला में जाते हैं और (फालोअर्स) को भी ले जाते हैं। अकेला इब्राहीम थोड़े ही उतरता है। इब्राहीम के साथ-2 उसके और फॉलोअर्स और आत्माएँ भी उतरती हैं। वो भी किसी-न-किसी (कम कला देवात्मा के) शरीर में प्रवेश करती हैं।

बाबा ने बोला हुआ है "ऊँच-ते-ऊँच बाप को ज़रूर ऊँच-ते-ऊँच में प्रवेश करना पड़े।" जितना ऊँचा धर्मपिता उतने ऊँचे आधार में उसको प्रवेश करना पड़ेगा। तो ये नियम बन जाता है कि सबसे ऊँचा धर्मपिता शिव परमात्मा तो ऊँच-ते-ऊँच प्रजापिता (आदम) में प्रवेश करता है। उसके बाद जो भी नं.वार धर्मपिताएँ ऊपर से आने वाले हैं, वो ज़रूर अपने (उस) ही नं. के देवता में प्रवेश करेंगे। तो सतयुग में 8 गद्दियाँ हैं। संगम (के नर-ना.) की मिलाकर नौ गद्दियाँ हैं। तो राम-कृष्ण वाली आत्माओं में तो (परमपिता) परमात्मा शिव का प्रवेश होता है। परमात्मा जिस (मुकर्रर) तन में प्रवेश करता है उसको कोई भी प्रभावित नहीं कर सकता। वो किसी के प्रभाव में बँधने वाला नहीं है। इसलिए बोला है- "राम बाप है एक, बाक़ी सब हैं सीताएँ" माना आधीन होने वाली आत्माएँ ।" बाकी ब्रह्मा की सोल (भी) बच्चों के अधीन हो जाती है।

इब्राहीम सेकिड धर्मपिता (सतयुगी) सेकिड नारायण में प्रवेश करता है, महात्मा बुद्ध सतयुग के थर्ड नारायण (सिद्धार्थ) में, क्राइस्ट फोर्थ ना. (जीसिस) में प्रवेश करता है। इसी तरह जो जिस नं. का धर्म का धर्मपिता उसी नं. के नारायण में प्रवेश करता है; लेकिन नौवे नं. का धर्मपिता (अर्ध) नास्तिक धर्म का है। न वो बाप को मानता है, न परमात्मा रचयिता को मानता, न उसकी रचना (देवी-देवताओं) को। उनके लिए तो प्रजा प्रति मोहभरा सुख ही उनका आधार है। उनका लक्ष्य ही दैहिक सुख पाने का होता है। तो ऐसी आत्माएँ जो न (साकार) रचयिता को मानतीं, न उसकी रचना को मानती, तो उन्हें बाप से राजाई का (अल्पकालीन) वर्सा ही मिलता (है); क्योंकि (भारत) का (अर्धनास्तिक) नास्तिक धर्म है जो (राजाई का) वर्सा नहीं ले पाता। आर्यसमाजी जो अर्धनास्तिक हैं, रचयिता को भले ही न मानें; लेकिन उसकी रचना (प्रजा वर्ग) को तो मानते हैं। तो बाप को आशा रहती है कि कम से कम प्रजा की तो (कुछ) परवरिश करेगा। चलो मेरे को नहीं मानता तो कोई बात नहीं। उनको भी नाममात्र का (अल्पकालीन 2-5 साल का मर्तबा) मिल जाता है।

परमात्मा की दृष्टि में सब विकार माफ़ है। कामी-इस्लामी, क्रोधी-क्रिश्चियन, लोभी-मुस्लिम, मोही-महर्षि भी माफ़; लेकिन अहंकारी को कभी माफ़ नहीं करते। अहंकारी को परमात्मा से प्राप्ति नहीं होती। संगमयुग का जो नारायण है वो (जगत्पिता या जगन्नाथ) तो ताजधारी होता ही नहीं। जीवनभर उसको संघर्ष ही करना है। तो वो होना न होना दुनियावी दृष्टि से बराबर है। (कलाबद्ध) आठ नारायण में जो फर्स्ट नारायण है वो तो सोलह कला

सम्पूर्ण है। उसमें परमपिता शिव की प्रवेशता तो हुई; लेकिन वो (पु.संगम में) सफल तब होता है जब उसको अपने प्रवृत्तिमार्ग का जोड़ा (जीवन-)सहयोगी के रूप में मिल जाता है। यानी (प्रजापिता की) सौ वर्ष की आयु जब पूरी होती है तो वो (16 कला ना.की) आत्मा उसमें प्रवेश करके प्रवृत्ति मार्ग वाली बन जाती है। तो उसको सही निर्देशन मिल जाता है कि हमें क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए। सतयुग का फर्स्ट नारायण जो देवी-देवता सनातन धर्म का पक्का है ही। बाकी सेकिण्ड ना. से आठवें नं. ना. तक सात (कम कलाएं होने विपरीत) धर्मों के आधारमूर्त हैं।

लास्ट धर्म नास्तिक का लेनिन। लेनिन जिस में प्रवेश करता है, वो आधारमूर्त ब्राह्मण में प्रवेश करता है। झाड़ में वो सबसे छोटी और सबसे टेढ़ी लेफ्टिस्ट जड़ दिखाई देती है। यूँ तो परमात्मा का पार्ट बजाने वाले के सबसे नज़दीक बैठी हुई दिखाई देगी; लेकिन क़रीब में होना और बुद्धि से क़रीब होना, ये कोई ज़रूरी नहीं है। कोई कंधे पर सवार हो करके (भल) हर समय करीब रहे; लेकिन कोई ज़रूरी नहीं है कि परमात्मा बाप अंदर से उसको पसन्द करते हैं; क्योंकि बाप के अंदर के प्यार और बाहर के प्यार की बड़ी (भारी) युक्ति होती है। जो दुनियावी तरीके से पावरफुल है; लेकिन अहंकारी है। उन अहंकारियों को बाप पसंद नहीं करता। बुद्धिवानों की बुद्धि तो परमात्मा स्वयं ही है तो किसी के दिमाग़ को क्या पसंद करेगा? नास्तिकों ने (ईश्वरीय रचना) राजाओं को क़त्लेआम करवा दिया था। उन्हें राजाई पसंद नहीं थी। तो अपने आगे किसी की राजाई नहीं देख सकते। जैसे परमात्मा राजाओं को ही पसंद करता है। दुनिया का बड़े-ते-बड़ा राजा है, परमात्मा, उसका आधार लेता है। नास्तिक विरोध करते हैं (जो)। तो अपनी आँखों से (और) किसी की राजाई नहीं देख सकते- इतने अहंकारी हैं। हमारे ब्राह्मणों की दुनिया में कोई ऐसा डुप्लीकेट ना. होगा जो यज्ञ के अंदर घुस करके अच्छा-ख़ासा व्यभिचारी बनने वाला होगा। जैसे कम्युनिस्ट में (कोई) माँ नहीं, (बेटी नहीं) बहन, बहन नहीं। वहाँ तो राष्ट्र के लिए ही सारी सम्पत्ति अर्पण हो जाती है। बच्चे भी अर्पण हो जाते हैं। बच्चा पैदा हुआ, शिशुघर में डाल दिया गया। माँ स्वस्थ हुई वो अपने काम में चली गई। बच्चा, शिशु केंद्र में थोड़ा बड़ा हुआ प्राइमरी स्कूल में डाल दिया गया, हॉस्टल में पल रहा है, फिर बड़ा हुआ उसको कॉलेज+होस्टल में डाल दिया गया। और बड़ा हुआ ट्रेनिग-सेंटर में, और उसके बाद डायरैक्ट चला जाता है, गवर्मेंट की प्रॉपर्टी बन (नौकरी-धंधे में) जाता है। तो उस बच्चे को ये ही नहीं मालूम कि मेरी माँ कौन है और मेरी बहन कौन है। वो बच्चा बड़ा हो गया। होटलों में खाना खा रहा है, कारखानों में काम कर रहा है। (बैरक) में जब (जवान होकर) रह रहा है तो जो भी साथ में संगिनी आ जाए उसके साथ रात बिताएगा। तो वो ही उस दिन उसकी पत्नी हो गई, जो हो सकता है उसकी बहन (या) माँ भी (रही) हो। उसको क्या पता? तो जानवरों की ज़िंदगी हो गई ना! खून खराब हुआ ना! तो ये तो दुनिया की सबसे जास्ती भ्रष्ट (व्यभिचार की पाशवी धारणा है)।

ऊपर से आने वाले धर्मपिताएँ जो कि (पहले जन्म में नं. वार) पवित्र आत्माएँ होतीं; इसलिए गर्भ से जन्म नहीं ले सकतीं। पहला जन्म उनको गर्भ से नहीं मिलेगा। पहले जन्म में वो किसी (सिद्धार्थ-जीसिस जैसे) में प्रवेश करके सुख (ही) भोगती हैं, दुःख नहीं भोग सकतीं। इसलिए बाबा ने कहा कि, "500 करोड़ मनुष्य-आत्माओं में

से प्रत्येक को परमात्मा बाप आकर सद्गति दे देते हैं। एक जन्म की सद्गति तो सबको देते हैं। बाक़ी फिर जिस (पुराने पतित) तन में प्रवेश किया उसके संग का रंग उसको तेज़ी से लगता है; क्योंकि जो बहुत पतित हो जाते हैं, उन्हीं देवात्माओं में ऊपर (आत्मलोक) से आने वाली सोल प्रवेश करती हैं। जैसे इब्राहीम आए, जिन्होंने ब्राह्मण (सो देवात्माओं के) जीवन में सबसे जास्ती दृष्टि-वृत्ति को करप्ट किया। बाबा ने (किसी ब्रह्मा-वत्स को) कभी भी नहीं कहा कि जात-2 की दृष्टि-वृत्ति का लेन-देन, ये योग है; लेकिन जो (अनेक जन्म के) व्यभिचारी (आत्मा) होंगी उनका स्थूल कर्मेंद्रियों का व्यभिचार बंद किया जाएगा तो (राजयोग के नाम से) सूक्ष्म दृष्टि का व्यभिचार शुरू कर देंगे। वे व्यभिचार के बिगर रह नहीं सकते। जितना सूक्ष्म व्यभिचार होगा उतना उस आत्मा के वायब्रेशन ख़राब होते जाएँगे और तेज़ी से पतन होता जाएगा। अहिल्या पत्थरबुद्धि बन गई। गौतम ऋषि की पत्नी (थी) गौ कहते हैं इन्द्रियाँ को, तम माने सबसे जास्ती इन्द्रियों का सुख जिसने भोगा। वही इब्राहीम की (निराकारी) सोल द्वापर (आदि) में जड़ों पर बैठे ब्रह्मावत्स में प्रवेश करती है, जो (सतयुग का) सेकिण्ड ना. बनता है, वही (संगमयुग में) सबसे जास्ती इन्द्रियों का सुख भोगता है। उसकी पत्नी (शास्त्रों में प्रसिद्ध) अहिल्या सहयोगिनी होती है। सेकिड ना. हो गया गौतम। (ऐसे अंतिम) 7 नारायणों का ही सप्त ऋषियों के रूप में गायन है। उनमें गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या पत्थरबुद्धि इसलिए बन गई; क्योंकि विकारी(व्यभिचारी) को यज्ञ में ले आई। उसका विकारियों से कनेक्शन (रहा) होगा। नहीं तो (ज्ञान-)यज्ञ में बाप के सामने विकारियों को लाने का क्या मतलब? बाप तो कहते हैं- पवित्र बन करके भूँ-2 करो और (मूतपलीती) कीड़ों को भ्रमरी बनाकर ले आओ। वो तो जिससे लगाव लग गया, उसी को उठा करके ले आई। तो पत्थर बुद्धि बन गई। मुरली में बोला है- "कोई पूर्वजन्म की वेश्या है, भले ही इस जन्म में ब्राह्मण बन जाए; लेकिन फिर भी वो अपने पूर्वजन्मों के संस्कारों के अनुसार फिर वेश्या बन जाएगी।" (मु.ता.14.5.73 पृ.3 मध्य) भले ही ब्राह्मण बन गई, ज्ञान ले लिया; लेकिन पूर्वजन्मों के अनेक जन्मों के व्यभिचारी इस्लाम धर्म में कन्वर्ट होने के संस्कार हैं ना! तो वे सब थोड़े ही खतम हो जाएँगे।

(झाड़ में) देवी-देवता सनातन धर्म का जो थूर (सीधा तना) है (उसमें) तो सबसे जास्ती सुधरे हुए (सूर्यवंशी ही हैं)। लेफ्ट साइड (धर्मों की डालियों) के जन्म-जन्मांतर तक उनसे कम सुधरे हुए हैं और जो लेफ्ट साइड के (धर्मों की डालियाँ) हैं वो उनसे (भी कम/जन्म-जन्मान्तर के बिगड़े) हुए हैं। जो लेफ्ट साइड के हैं वो लेफ्टिस्ट (वाममार्गी) धर्मों वाली आत्माएँ (हैं) वो जन्म-जन्मांतर तक लेफ्टिस्ट धर्मों में (ही) कन्वर्ट होकर रही हैं। वो तो सबसे जास्ती बिगड़ गईं। तो आदि सनातन देवी-देवता धर्म के थुर भाग के पक्के हैं वो (ज़रूर) पहले सुधरेंगे, जो राइटियस हैं। उसके बाद और फिर लेफ्ट साइड के; क्योंकि इनकी दृष्टि-वृत्ति, स्वभाव-संस्कार ज़्यादा बिगड़ा हुआ है। ये सिर्फ़ ज्ञान सुनने-सुनाने से मानने वाले नहीं। इनके साथ सख़्ती से पेश में आया जाएगा तब सुधरेंगे; क्योंकि ब्राह्मण बनने के बाद भी (लम्पट) वेश्या, (या) गणिकाएं बन जाती हैं। जो गीत तो भगवान के गाती हैं और भोग (-विलास) करती दूसरों के साथ। उनको कहते हैं गणिकाएं जो गणिकाएँ भगवान के गुण गाएँगी, भजन गाएँगी बहुत अच्छे-2। तो ये सारे चरित्र हैं कहाँ के? इन गणिकाओं, भीलनियों, अहिल्याओं, कुब्जाओं के, जिनका बैकबोन बापदादा टूट गया। बापदादा उनमें प्रवेश (भी) न करे और उनमें प्रवेश करके सेवा भी नहीं कर सकता।

वैसे बाबा कहते हैं (कि)–मैं सब बच्चों में प्रवेश करके सेवा करता हूँ; लेकिन उन में प्रवेश कर सेवा नहीं कर सकता। (परन्तु) मुरली में बोला है- "वेश्याएँ भी माला का दाना बनेंगी।" उन दुनियावी वेश्याओं की तो बात ही नहीं। वो कोई विजयमाला का दाना नहीं बनेंगी। रुद्रमाला के अंदर कोई ऐसी (नीची कुरी की ब्राहमण) आत्माएँ हैं जो वेश्या बन करके रहती हैं और भारत का पतन करने के लिए निमित्त बनती हैं। (फिर पु.संगम में) उन्हीं को माला का दाना बनना है। सुधरेंगी तभी तो माला का दाना बनेंगी। दे.दे.सनातन धर्म की जितनी भी आत्माएँ हैं, 8-10 करोड़, त्रेता के अंत तक, उनमें सबसे जास्ती पतित आत्मा (स्लाम धर्म) की आधारमूर्त हैं। उनमें ऊपर से आने वाली (नई शक्तिशाली) सोल कमज़ोर आत्मा में अधिकार जमा लेती है। मज़बूत को नहीं पकड़ती। जैसे बिच्छू डंक कहाँ मारता है? जहाँ नरम देखेगा वहीं डंक मारेगा, कठोर वस्तु में, पत्थर में डंक नहीं मारेगा। बीज है (धर्म का) बाप और आधार है रचना (रूपी प्रजा)। बीज की रचना है जड़ ।

(साकारी) बीजरूप आत्माएँ रुद्रमाला के मणके हैं। कोई (माला में) लेफ्ट साइड के मणके, कोई राइट साइड के मणके और कोई देवी-देवता सनातन धर्म के पक्के बीज भी हैं। ऐसे नहीं कि रुद्रमाला में सारे ही विधर्मी हैं, सारे ही विदेशी हैं। नहीं, पक्के स्वदेशी भी हैं। यानी दुनिया के हर धर्म के बीज रुद्रमाला में समाए हुए हैं। ये तीसरी दुनिया है। ये जो बीजरूप आत्माएँ हैं ये बड़ी सशक्त और (रुद्राक्ष जैसी) जटिल आत्माएँ हैं। स्वभाव-संस्कार की भी बड़ी जटिल हैं। ये उन आधारमूर्त जड़ों से भी कहीं ज़्यादा पावरफुल हैं। उन नारायणों से भी ज़्यादा पावरफुल हैं जो सतयुग में जाकर नारायण बनते हैं। इनके ऊपर जो (द्वापुर-कलियुगी) देह-अभिमान का छिलका चढ़ा हुआ होता है, वो सिवाय परमात्मा बाप के धर्मराज बने बिगर छिलका उतर ही नहीं सकता। जैसे मूसल होता है, और धान होता है, ओखली होती है तो उस मूसल और ओखली के बीच में कूट-2 कर पिट-2 कर उनका देह-अभिमान का वो छिलका उतरता रहता है। एक तरफ ओखली, दूसरी तरफ़ मूसल, फिर पवित्र आत्मा रूपी चावल मस्तक पर लगाने योग्य बन जाते हैं। ये तो (माया का) अहिसक युद्ध है। परमात्मा की ये टेक्निक है। (वह) बहुत रमतू-रमजबाज़ है। अरे! कृष्ण की ओखली भूल गए? ओखली से कृष्ण को बाँध दिया था। यशोदा ने क्या किया था? जब कृष्ण बहुत शैतानी करने लगा तो ओखली से बाँध दिया। जैसे माँ-बाप देखते हैं कि बच्चा बहुत शैतान है तो उसकी शादी कर देते हैं। ऐसे ही यशोदा मैया ने ओखली से बाँध दिया। अब जितनी भी शैतानी करो, तो एक तरफ़ मूसल और दूसरी तरफ़ हो गई ओखली और बीच में जितने आकर पड़े, वो सब (देहभान रूपी छिलके वाले) दाने। तो वो तो समझ लो कि ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डरना? खूब रात-2 भर जागो और शिवरात्रि जागरण मनाओ तो सर अर्थात् उनकी (देहांकर-भरी) बुद्धि भच्चा (पिस) जाती है और सारे पाप (उतर) जाते हैं।

गायन है- 'मुट्ठी भर चावल सुदामा ने दिए।' और कुछ था ही नहीं उनके पास। तो 108 (रुद्रमाला की) आत्माएँ एक मुट्ठी और 108 (विजयमाला की) आत्माएँ दूसरी मुट्ठी में अर्थात् रुद्रमाला और विजयमाला का (सम्मिलित प्रवृत्त मार्गी) संगठन बना करके भगवान के गले में अर्पण कर दिया। झाड़ के चित्र में ये माला दिखाई गई है।

धर्मपिताएँ जिनमें प्रवेश करते हैं वो हो गए आधारमूर्त जड़ें और जड़ों को जन्म देने वाले हो (गए रुदाक्ष के)

ये बीजरूप आत्माएँ और बीजों को भी जन्म देने वाला हो गया प्रजापिता(आदम)। **ओमशान्ति।**

सावधान! **नगाड़ा नं. 9** **दुर्गा नौमी सन् 1979**

18 जनवरी सन् 69 से हम ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में :-

(यज्ञ में) भक्तिमार्गीय रावण-राज्य की (प्रत्यक्ष) शूटिग

अ.बापदादा ने ता.30.5.73 की 'अव्यक्त वाणी' पृ.78 पर कहा है • "84 जन्मों की चढ़ती कला (रामराज्य) और उतरती कला (रावणराज्य)- दोनों के संस्कार इस (संगम के) समय आत्मा में भरते हो।" स्पष्ट है कि ब्रह्मा बाबा के मुकर्रर रथ द्वारा साकार बनकर वाणी चलाने वाले एकमात्र सद्गुरू शिवबाबा ही 21 जन्मों की सद्गति अर्थात् चढ़ती कला की शूटिग कराते हैं, जबकि मम्मा-बाबा के शरीर छूटने के बाद सन् 69 से कुछ समय के लिए ब्राह्मण वत्सों को अपनी अवस्था का साक्षात्कार कराने हेतु वानप्रस्थी हुए ज्ञान सूर्य शिवबाबा के छिप जाने से ब्रह्मा की अज्ञान अंधेरी रात अर्थात् रावण राज्य शुरू हो जाता है। चूंकि ज्ञान यज्ञ में वाणी से परे चले जाने के कारण (सदा) सम्पूर्ण आत्मा-शिव का शासन तो रहता नहीं, अतएव अनेकानेक अधूरे ब्राह्मणों की साकारी शासन-सत्ता में 'यथा राजा तथा प्रजा' के नियमानुसार 63 जन्मों की दुर्गति अर्थात् उतरती कला की शूटिग हो जाती है।

शिवबाबा ने ता. 13 और 14.2.74 की मुरलियों में कहा है •"वास्तव में गुरू तो एक ही होता है सद्गति के लिए, बाक़ी सब हैं दुर्गति के लिए।" • "यह ढिढोरा पिटवाते रहो- **एक सद्गुरू निराकार द्वारा सद्गति। अनेक मनुष्य गुरुओं द्वारा दुर्गति।"** ता. 22.4.72 और 77 पृ.3 की मुरलियों में कहा है • "भगवान के योग सिखाने से स्वर्ग और मनुष्यों के योग सिखाने से नरक बन गया।" • "मनुष्य योग सिखाकर रोगी बना देते हैं। बाबा के (पाक+स्तानी में) योग सिखाने से हम एवर हेल्दी बन जाते हैं।" (ता.1.5.73) बाबा ने कहा है •"पाक+स्तान स्वर्ग को कहेंगे।" यही कारण है कि कराची की स्वर्गीय शूटिग वाली भट्ठी में साकार सद्गुरू के संग का लगातार रंग लगने से तत्कालीन ब्रह्मावत्सों की शारीरिक-मानसिक अवस्था और आज की रोगी और तामसी शारीरिक-मानसिक अवस्था में रात और दिन का फर्क पड़ गया है।

रावणराज्य की शूटिग कब से चल रही है? -

संगमयुगी देहधारी धर्मगुरुओं द्वारा द्वापर-कलियुगी नारकीय रावणराज्य की 'विशेष सामूहिक शूटिग' तो ब्रह्मा बाबा के शरीर छोड़ने पर ही शुरू हुई थी, फिर भी 'सामान्य सामूहिक शूटिग' ज्ञान की अधिष्ठात्री शिवशक्ति सरस्वती के 24 जून सन् 65 को शरीर छोड़ने के बाद से ही शुरू हो चुकी थी, क्योंकि सरस्वती को विशेष रूप से यज्ञमाता के रूप में कन्याओं-माताओं की सम्भाल के लिए रखा गया था, किंतु उनके न रहने पर भी साकार बाप शिव के ब्रह्मा तन में उपस्थित रहने के कारण किसी को रावणराज्य की भासना नहीं हो सकी। जबकि जड़-मूर्तियों के मंदिरों में अल्पकाल के लिए दुःख और अशांति का लोप हो जाता है, तो जहाँ साक्षात् परमात्मा शिव ब्रह्मा के साकार तन में विराजमान हों, वहाँ दुःख की लेशमात्र अनुभूति कैसे हो सकती है?

मम्मा-बाबा के बाद हम ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में मनुष्य-गुरुओं द्वारा चलाई गई भक्तिमार्गीय

रावणराज्य की शूटिग के अकाट्य और प्रत्यक्ष प्रमाण इस प्रकार हैं :-(देखिए 30"x40" वाला पुराना सीढ़ी का चित्र)।

(1) त्रेता-अंत का अर्ध विनाश :- बाबा ने ता. 9.2.70 की मुरली में कहा है •"वाममार्ग में जाने पर ही स्वर्ग नष्ट होकर धरतीकम्प होता है। छोटी प्रलय होती है रावणराज्य के शुरू में।" ज्ञान की अधिष्ठात्री सरस्वती और अति स्नेही ब्रह्मा बाबा के शरीर छोड़ने के समय देहाभिमानी और अज्ञानी मनुष्य-गुरुओं द्वारा, सच्चे किंतु कच्चे ब्राह्मण वत्सों को पहले की तरह भरपूर ज्ञान और स्नेह की प्राप्ति नहीं हुई। उस समय प्रत्येक ब्राह्मण के दिल और दिमाग के अंदर मुरलियों में बताई हुई मम्मा-बाबा की आयु को लेकर माया के भूकम्प अर्थात् संशय उठ रहे थे जिनका सही समाधान, तत्कालीन अज्ञानान्धकार फैलाने वाले मनुष्य-गुरुओं के पास नहीं था। अतः द्वापरयुग की शूटिग के शुरूआत में सन् 65/66 से 68 के बीच ढेर-के-ढेर ब्राह्मण-वत्सों की ज्ञान यज्ञ से अकालमृत्यु हो गई।

(2) सोमनाथ-स्थापना :- द्वापरयुग (की शूटिग) में लगभग 100 वर्ष बीतने पर राजा विक्रमादित्य की आत्मा (ब्रह्मा) के निमित्त आदेश द्वारा अपार (मधुबनी) धनराशि लगाकर गुजरात में, (ज्ञान) सागर के कंठे पर (अर्थात् मधुबन के सबसे नज़दीक) 'सर्व सेंटर्स के बीजरूप अहमदाबाद' शहर में सच्चे सोमनाथ मंदिर (प्रभुपार्क पा+लड़ी सेवा केंद्र) की स्थापना कराई गई। संगमयुगी शूटिग में यह कार्य ज्ञान की देवी सरस्वती के शरीर छोड़ने के ठीक 1 वर्ष (=100 वर्ष) बाद मई सन् 66 में अज्ञान के सागर पंडे-पुजारियों के हाथों सम्पन्न हुआ था। स्वयं ब्रह्मा बाबा उस (सोमनाथ मंदिर के) सेंटर में कभी नहीं जा सके। सिर्फ उनका स्थूल धन और मंसा संकल्प का भरपूर बीजमात्र ही उस सेवाकेंद्र में लग सका, जबकि अन्यान्य सभी वर्तमानकालीन 3-4 सौ सेवाकेंद्रों की स्थापना के निमित्त धनदाता दूसरे (ब्रह्मा-वत्स) हैं।

(3) जड़चित्रों की प्रदर्शनी का भक्तिमार्गीय पॉम्प एण्ड शो :- द्वापरयुग (की शूटिग) के कोई 500 वर्ष (=सन् 65-66 से 70 तक के 5 वर्ष) तक खास माया की नगरी बम्बई की तरफ़ (अजन्ता-एलोरा-एलिफैंटा आदि की गुफाओं और मंदिरों आदि में) ढेर-के-ढेर जड़-चित्रों मूर्तियों आदि का निर्माण होता है। (इसीप्रकार) बम्बई में पहली (दिखावटी जड़) प्रदर्शनी का निर्माण मनुष्य-गुरुओं द्वारा सन् 65से हुआ था। उस समय ज्ञान की देवी सरस्वती मृत्युशैया का आलिगन कर रही थी। बाबा ने ता.13.6.72 की मुरली में कहा है •"प्रदर्शनी की राय बाबा ने थोड़े ही निकाली। यह रमेश बच्चे का इन्वेंशन है।" स्पष्ट है कि ढेर-के-ढेर बनावटी चित्र मनमत और मनुष्यमत पर बनाए गए हैं। शिवबाबा की श्रीमत पर नहीं बनाए गए। अतः बाबा ने ता. 7 और 8.5.74 की मुरलियों में कहा है •"आसुरी मत पर ढेर-के-ढेर चित्र बनाए हैं।" • "भक्ति मार्ग के सारे (जड़) चित्र झूठे और बनावटी हैं।" (ता.28.9.69)

(4) गीता का भगवान :- रावणराज्य के शुरू में (सन् 65 से 68 के बीच) दुनिया की सबसे बड़ी भूल यह हुई कि निराकारी "शिव" रचयिता बाप की जगह 84 के चक्र में आने वाले देहधारी बच्चे 'श्रीकृष्ण' रूपी रचना-ब्रह्मा-का नाम "पिताश्री" सच्ची गीता (मुरलियों) के फ्रंट पेज पर डाल दिया गया। जो खुद ही भूले हुए हैं वे दुनियावी

धर्मगुरुओं की भूल कैसे सुधारेंगे? 'पहले घर (ब्राह्मण-परिवार) का सुधार फिर पर (दुनियाँ) का सुधार।'

(5) **शास्त्र-निर्माण** :- द्वापर के मध्यांत काल (की शूटिग सन् 70) के आसपास ढेर के ढेर चित्रों के दर्शन और प्रदर्शन करने से व्यभिचारी बन जाने के कारण ईश्वरीय ज्ञान के साथ अपनी मनमत में भिन्न-भिन्न मनुष्यमत का भ्रष्टाचार करके 'भविष्य पुराण' (की तरह 'विश्व का भविष्य') अथवा 'योगवशिष्ठ' (की तरह 'योग की विधि और सिद्धि') जैसे मोटे-2 ग्रंथ-शास्त्र मान-सम्मान और धन कमाने की स्वार्थबुद्धि से लिखे जाते हैं। इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण इन गद्दीनशीन धर्म गुरुओं का इतना अथाह व्यक्तिगत बैंक-बैलेंस हैं जितना किसी भी (धनीमानी) गृहस्थ ब्राह्मण परिवार के पास भी नहीं होगा।

(6) **बाप की बायोग्राफी में बच्चे का नाम** :- इसी समय लिखी गई निराकार बाप शिवबाबा की बायोग्राफी-'श्रीमद् भागवत् कथा'-अर्थात् गोपियों को भगाने की कहानी (की तरह 'एक अद्भुत जीवन कहानी') के प्रथम पृष्ठ पर (मंदिरों में यादगार बने) देहधारी बच्चा बुद्धि श्रीकृष्ण रूपी रचना- (ब्रह्मा)-का नाम और रूप ('पिताश्री') डाल दिया गया। क्या सिध-हैदराबाद में 3/4 सौ कन्याओं-माताओं को भगाने का अद्भुत कार्य बूढ़े दादा लेखराज (पिताश्री) ने किया था? या करन-करावनहार निराकार शिवबाबा ने यह कार्य सम्पन्न किया था?

(7) **पतित-पावन आओ** :- द्वापर के आरम्भ (सन् 69) से ही 'बिचारे' भक्तजन 'ज्ञान की कमी और (शिवबाबा की) पहचान की कमी' रह जाने के कारण मम्मा-बाबा के जड़-चित्रों के सामने बैठ 'पतित-पावन आओ' की मनसा-वाचा रटन लगाकर परमपिता परमेश्वर (बापदादा) को (संदेशियों द्वारा) बार-2 आने का निमंत्रण देते रहते अर्थात् अर्जी डालते या बुलाते रहते हैं। (जैसे गीत भी गाते रहते-"आ जाओ ब्रह्मा बाबा हम बच्चों के आगे") 69 से पहले रामराज्य की शूटिग काल में ब्रह्मा के तन में शिवबाबा को बुलाने या निमंत्रण देने की दरकार नहीं पड़ती थी। वे बिना बुलाए ब्रह्मा तन में मुरली चलाने आ जाते थे। और अब (घोर) रावणराज्य की शूटिग में तो (शिवबाबा) बुलाने पर भी नहीं आते। सिर्फ सूक्ष्म शरीरधारी ब्रह्मा की सोल द्वारा संगमयुगी भक्त-प्रवर पंडे-पुजारियों को साक्षात्कार कराने के लिए भावना का अल्पकालीन भाड़ा दे दिया जाता है। उस साक्षात्कार से कोई फ़ायदा या प्राप्ति विशेष तो होती नहीं। दिन-प्रतिदिन (मानसिकता) और ही नीचे गिरते जाती हैं।

(8) **विकारी राजा (अर्थात् प्रशासक-प्रशासिकाएँ) ही वज़ीर रखते हैं** :- स्वर्ग की शूटिग करने वाले मम्मा-बाबा ने कभी किसी मनुष्य को अपने पास बुलाकर राय नहीं ली, क्योंकि जिसके तन में स्वयं परम पवित्र-बुद्धिमानों की बुद्धि परमात्मा विराजमान हो उसे किसी विकारी मनुष्य से राय लेने की क्या ज़रूरत? परंतु ब्रह्मा बाबा के देह-अवसान के बाद यज्ञ में अपने को सेवाधारी के बजाय प्रशासक-प्रशासिका समझने वालों ने (ईश्वरीय महावाक्यों पर) निश्चयबुद्धि न होने के कारण बड़े-2 रायबहादुर (मंत्रियों) को मधुबन हेड ऑफिस में निमंत्रण पर बुलाकर सलाह-मशविरा लेना शुरू कर दिया। बाद में धीरे-2 कौरव गवर्मेंट की तरह ढेर-के-ढेर मंत्रियों (के हुजूम) को इकट्ठा करके घड़ी-2 मधुबन में मीटिग्स होने लगीं। जबकि बाबा ने ता.20.5.77 पृ.1 की वाणी में कहा है •"मुरली द्वारा सर्व समस्याओं का हल मिल सकता है।" फिर भला इतने लोगों को टाइम-मनी और इनर्जी वेस्ट करने के लिए क्यों इकट्ठा किया जाता है? यह भी ड्रामा में कलियुगी शूटिग की भावी। इस (शूटिग के) क्र

भी कोई-न-कोई तो (M.आबू में) निमित्त बनना ही चाहिए। बाबा ने मुरलियों में साफ़ कहा है • "ज़रूर (मुरली का राज़ समझने की) अक्ल नहीं है। तब तो वज़ीर रखते हैं न-एडवाइज देने के लिए।" • "राय लेते हैं बेवकूफ, क्योंकि उनमें (श्रीमत समझने का) अपना अक्ल नहीं है।" • "बेवकूफ बनने पर राजाओं ने वज़ीरों से राय ली।" (देखिए ता. 8.8.69, 4/3.10.74 आदि।)

(9) राज्यसत्ता-धर्मसत्ता अलग-2 हाथों में :- हम ब्रह्माकुमार-कुमारियों के लिए रावणराज्य-(शूटिंग) की यह एक परमप्रसिद्ध निशानी है जिसे हम प्रदर्शनी के चित्रों में भी रामराज्य के कन्ट्रास्ट में दिखाते रहे हैं, परंतु महाबहिर्मुखी वृत्ति होने के कारण इस बात को भी अब तक हमने दुनिया वालों पर ही लागू करना सीखा है, लेकिन अपनी संगमयुगी दुनिया के ब्राह्मण परिवार पर लागू नहीं किया। सारे राष्ट्र या देश को अपनी मुट्ठी में धर बैठने वाली धृतराष्ट्री और "अंधे (धृतराष्ट्र) की औलाद अंधों" ने कल्पपूर्व भी अपने घर-परिवार के दोषों पर कभी दृष्टिपात नहीं किया था।

ध्यान रहे कि रामराज्य की शूटिंग काल मम्मा-बाबा के ज़माने में देश के सभी सेवाकेंद्रों का संचालन मधुबन हेड-ऑफिस से अकेले ब्रह्मा-सरस्वती द्वारा किया जाता था, परंतु बाद में, ब्रह्मा बाबा को देहत्याग किए 1 वर्ष भी नहीं बीता कि बाप के द्वारा दी गई अंतिम समय की सारी शिक्षाओं को ठुकराते हुए, अपनी ही कमज़ोरी और आपसी भेदभाव के कारण देश के सेवाकेंद्रों का संचालनसूत्र अलग-2 ज़ोनल (राज्यों के) इंचार्जों के हाथों में सौंप दिया गया। एक देश तो क्या, सारे विश्व (500 करोड़) का शासनसूत्र एक विश्वमहाराजन के हाथों सौंपने का अंतिम लक्ष्य भुला दिया गया। या यों कहें कि विश्व-महाराजन बनने का लक्ष्य कथनी तक ही सीमित रहा, करनी में नहीं। **बाबा ने ता.8.8.74 की मुरली में स्पष्ट शब्दों में कहा है •"रावण जब से (सत्ता में) आते हैं तो पहले-2 घर में से लड़ाई शुरू होती है। उसमें ही लड़ मरते हैं। अपना-2 प्रोविस अलग-अलग कर देते हैं।"**

(10) युगल देवताओं की व्यभिचारी पूजा :- मम्मा-बाबा के रहते स्वर्गीय शूटिंग में हरेक सेवाकेंद्र पर याद करने के लिए सामने की ओर (एकमात्र) शिव-बाबा का (यादगार) चित्र ही लगाया जाता था; परंतु मम्मा-बाबा के देहत्याग के बाद सन् 69/70 में ढेर-के-ढेर (भक्तिमार्गी) चित्रों और शास्त्रों के हिमायती (व्यभिचारी भक्त) होने से व्यभिचारी याद की शूटिंग करने वाले भक्तप्रवर पंडे-पुजारियों ने भविष्य में युगलमूर्त ल.ना. बनने वाले मम्मा-बाबा के बड़े-2 जड़ चित्र लोगों के दर्शन-स्मरण और महिमा करने के लिए सर्वप्रथम (M.आबू) मधुबन में स्थापित करा दिए। बस, फिर क्या था। 'यथा राजा तथा प्रजा' के नियमानुसार सभी सेवाकेंद्रों में मम्मा-बाबा के इन युगलमूर्त जड़चित्रों की स्थापना हो गई, जबकि ख़ास देहरूपी जड़मूर्ति(यों) से बुद्धियोग तुड़वाने के लिए अवतरित शिवबाबा ने मुरलियों में यह सख़्त डायरैक्शन दिया है • **"समझाने के लिए त्रिमूर्ति (आदि चित्रों) में तो ब्रह्मा का चित्र है ही। अलग से रखने की कोई दरकार नहीं।" • "इस ब्रह्मा के पास तो कुछ भी नहीं है। इनका चित्र भी देखने की दरकार नहीं।"** (ता. 27.2.75)

बाबा ने ता.28.2.74 की मुरली में भक्तिमार्ग की निशानी बताते हुए कहा है • **"भक्तिमार्ग में मनुष्यों की बुद्धि में अनेकों की याद आती रहती है। अब शिव के (यादगार) मंदिरों (अर्थात् सेवाकेंद्रों और संगमयुगी**

भक्तों के घर-2) में जाओ तो वहाँ और भी ढेर (जड़) चित्र रखे हुए होंगे। तो व्यभिचारी ठहरे न। सबके आगे सिर झुकाते रहते हैं। (मम्मा-बाबा-दीदी-दादी आदि देहधारी) गुरुओं की भी मूर्ति बनाकर रखते हैं।"

(11) सिगल देवताओं की व्यभिचारी पूजा :- युगलमूर्त देवताओं की अपेक्षा विपरीत लिंग वाली अकेली मूर्ति देह-अभिमानियों को अधिक आकर्षित करती है। अतः जैसे द्वापर के मध्यांत तक सिंगल देवता कृष्ण की उपासना का आरम्भ हो गया। ठीक वैसे ही हमारे स्त्रीबहुल यज्ञ में पुरुष आकृति वाले ब्रह्मा की उपासना अधिक होने लगी। प्रत्येक सेवाकेंद्र से मम्मा का चित्र या तो हटा दिया गया या बहुत छोटे साइज में इधर-उधर रख दिया गया, ताकि कृष्ण बनाम ब्रह्मा की उपासिकाओं के लिए सौतिया डाह पैदा करने वाली (मम्मा) की यादगार भी न रहने पाए।

ध्यान रहे कि सीढ़ी के चित्र में युगलमूर्त देवताओं के भक्तों को ही ज़िम्मेवारी का ताज दिखाया गया है, जबकि सिंगल देवताओं (हनुमान-गणेश) के उपासकों को ताजहीन दिखाया गया है, क्योंकि उन्होंने संगमयुग में भी पवित्रता का ताज धारण करने के नियमों का उल्लंघन खुद किया था और दूसरों से भी कराया था। इसलिए बाबा ने उन्हें ता.7.3.74 की मुरली में सीढ़ी के चित्र में चित्रित दैत्य कहा है। •"कनिष्ठ हैं दैत्य। कनिष्ठ मनुष्य बैठ उत्तम मनुष्यों की महिमा गाते हैं। फिर मंदिर बनाकर (पवित्रता के) ताज वाले को (देवी-देवों) बिगर ताज वाले नमन करते हैं। सीढ़ी में शायद कुछ ऐसा है चित्र है।"

(12) कम कला वाले (अधूरे) देवताओं की (भी) पूजा :- द्वापर-अंत (की शूटिंग) में कम (14) कलाओं वाले युगलमूर्त (राम-सीता जैसे) देवताओं की उपासना दिखाई गई है। यहाँ ध्यान रहे कि राम-सीता के अलावा सतयुग की अंतिम सात गद्दियों के सारे ही युगलमूर्त ल.ना. फेल होकर कम कलाओं वाले देवता बनते हैं। राम-सीता सहित ये सभी फेलियर देव-आत्माएँ किसी-न-किसी नाम-रूप से हमारी संगमयुगी दुनिया के मन-मंदिरों में, घर-गृहस्थ रूपी मंदिरों (गीता पाठशालाओं) या सेवाकेंद्रों में भगत बने नामधारी ब्राह्मणों के द्वारा भगवान की तरह अभी भी पूजी जा रही हैं। भक्तों के लिए उनकी मनमत भगवान की श्रीमत है और उनके वाक्य भगवान के महावाक्य हैं।

(13) हनुमान-उपासना और गणेश-पूजा :- जिनकी कमर में स्थूल काम विकार की निशानी पूँछ और जिनके मुख में दृष्टि-वृत्ति की चंचलता रूपी देहभान की निशानी सूँड (या नशीली आँखे) प्रत्यक्ष रूप में दिखाई पड़ती हैं-ऐसे जानवरों का सा खूँख़ार स्वभाव धारण करने वाले हाफकास्ट ब्राह्मणों को मंदिरों रूपी सेवाकेंद्रों में बिठाकर उनकी भगवान की तरह पूजा-उपासना और महिमा की जाती है। यह अज्ञान का महामोहान्धकार अन्धश्रद्धालु और अंधविश्वासी भक्तजनों द्वारा कलियुग-आरम्भ की शूटिंग सन् 73/74 (के मेले-मलाखडों) से शुरू होता है।

(14) मनुष्य द्वारा (दाढ़ी-मूँछवाले विकारी) मनुष्य की पूजा :- साधारण से साधारण ज्ञानरंग से रंगा हुआ रंगीला मनुष्यगुरू, जिसे कोई गद्दी (संदली) न भी मिली हो, वह यदि किसी व्यक्ति को स़फेदपोश ब्रह्माकुमार बनाने में सफल हो जाता है तो वह भी भगवान (या गुरुजी) की तरह अपनी पूजा करवाने में नहीं चूकता। यहाँ तक कि उस तथाकथित भगवान का पुजारी निमित्त बनी टीचर की ही नहीं, बल्कि अपने उस रंगीले गुरू की भेंट में सद्गुरू शिवबाबा की मुरली रूपी महावाक्यों की भी खुलेआम अवहेलना करता रहता है। सीढ़ी के पुराने चित्र में चित्रित इस तरह की 'व्यभिचारी भक्ति' की पराकाष्ठा वाला गुरू-चेले का चोली-दामन का साथ हर सेवाकेंद्रों में देखने को

मिलेगा।

(15) पाँच तत्वों की पूजा माना भूतपूजा :- कलियुग मध्यान्त की शूटिग में अग्नि-जल-जड़ वृक्ष (मिट्टी) आदि जड़ तत्वों की पूजा दिखाई गई है। 5 तत्वों के संघात (समूह) का सर्वश्रेष्ठ नमूना मनुष्य का शरीर है। इन 5 तत्वों से बने जड़ शरीर रूपी मूर्ति की पूजा (मालिश आदि करवाने) को बाबा ने भूत पूजा कहा है। यज्ञ की सामूहिक सेवा करना दूसरी बात है, परंतु किसी से व्यक्तिगत सेवा लेना या देना श्रीमत के विपरीत है। चाहे वह कपड़ा धोने-बर्तन मलने -खाना बनाने या तेल-मालिश करने आदि किसी भी प्रकार की व्यक्तिगत सेवा क्यों न हो।

शिवबाबा ने ता.26.10.76 की मुरली में साफ़ कहा है •"कई हट्टी-कट्टी ब्राह्मणियाँ कपड़े भी धुलवाती हैं। बर्तन भी साफ़ करवाती हैं। वास्तव में उनको सभी कुछ अपने हाथ से करना है। तबीयत की बात अलग है। यहाँ सभी सुख ले लेंगे, तो वहाँ (अब आने वाले संगमयुगी 21वें हीरे तुल्य सर्वश्रेष्ठ जन्म में) सुख गँवा देंगे। यहाँ ही नवाब बन जाती हैं।" प्रायः करके गद्दीनशीन देहधारी धर्मगुरुओं द्वारा सेवाकेंद्रों में भोली-भाली माताओं और घर-गृहस्थ छुड़वाकर आधीन बनाई गई (गरीब परि.की) कन्याओं से यज्ञसेवा के नाम पर इस प्रकार की जोर-ज़बरदस्ती वाली भूत (प्रेत) पूजा कराई जा रही है जिसका सर्वथा बहिष्कार होना ही चाहिए। क्योंकि बाबा ने ता. 17.9.70 की मुरली में कहा है •"शरीर पूजा का मतलब हिरण्यकश्यप की पूजा।"

ओमक्रांति। ओमशांतिः।

विजयदशमी का नगाड़ा नं. 10

सावधान! सन् 73-74 से हम ब्राह्मणों के संगमयुगी यज्ञ में :-

रावणराज्य की कलियुगी तामसी शूटिग

हम ब्राह्मणों के यज्ञ में चलने वाली भक्तिमार्गीय रावणराज्य की कलियुगी तमोप्रधान निशानियाँ इस प्रकार हैं :-

(16) सच्चे सोमनाथ की लूट :- द्वापरयुग की शूटिग सन् 66 में जो गुजरात का सबसे पहला प्रभुपार्क पालड़ी सेवाकेंद्र रूपी सच्चा सोमनाथ मंदिर राजा विक्रमादित्य की आत्मा ब्रह्मा द्वारा, (M.आबू) मधुबन ज्ञान सागर के कंठे पर अढरक धन-सम्पत्ति लगाकर बनाया गया था, वही भारत का जगप्रसिद्ध मंदिर कलियुग के आरम्भ की शूटिग सन् 74 में भारत के पुराने दुश्मन मुसलमानी रावण-सम्प्रदायों के द्वारा लूट लिया जाता है। लगातार मुसलमानी आक्रमणों की चोट सहन करते-2 भयंकर तोड़-फोड़ के बावजूद भी <u>आज</u> तक किसी तरह (कुछ) एक साधारण मंदिर जैसी (तत्कालीन) गीता-पाठशाला(ओं) के रूप (कुछ समय) में उनका अस्तित्व बना हुआ रहा; क्योंकि उसी एकमात्र मंदिर (सोमनाथ) की स्थापना में जगतपिता शिवबाबा और जगतमाता ब्रह्म+माँ के धन और संकल्प शक्ति का भरपूर अविनाशी बीज पड़ा हुआ है जो मिट नहीं सकता।

(17) गुड्डी-पूजा डूबीजा की शूटिग :- जैसे भक्तिमार्ग में चलने वाले सारे ही कर्मकांड रूपी आडम्बर संगमयुग की यादगार हैं, अर्थात् हम ब्राह्मणों ने जो कर्म किए हैं उन्हीं की यादगार है; ठीक वैसे ही गुड्डियों की पूजा करके उन्हें डुबो देने की दर्दनाक प्रक्रिया भी संगमयुगी भक्तों द्वारा चैतन्य गुड़ियों रूपी ब्रह्माकुमारियों के साथ की गई हमारी

शर्मनाक करतूत की ही यादगार है।

कितना विचित्र ड्रामा है कि सिर्फ़ पतित होने से बचाने के लिए जिन कन्याओं-माताओं को गृहस्थी रूपी कलियुगी कीचड़ से उठाकर आश्रमों रूपी सजे-सजाए मंदिरों में लाकर रखने के लिए जो संगमयुगी भक्तजन निमित्त बनते हैं, वे अपनी ही अंधश्रद्धा के कारण अनावश्यक रॉयल्टी से भरपूर भोजन-वस्त्र और तीमारदारों की व्यवस्था करके उन कन्याओं-माताओं को ज़रूरत से ज़्यादा सर-माथे पर चढ़ाने की भारी भूल कर बैठते हैं। वे अल्पकाल के लिए साक्षात् भगवती-देवी का रूप धारण करने वाली इन गुड़ियों की पूजा में लाखों रुपये बरबाद करते हुए इतने अलमस्त हो जाते हैं कि अपनी गृहलक्ष्मी और बाल-गोपालों की दुर्दशा का भी ध्यान नहीं रखते।

ता.19.10.75 की अ.वा. पृ.201 में बाबा ने कहा है •"गुड़ियों के खेल में इतने मस्त कि यदि कोई (बाप के) घर (AIVV) का सही रास्ता बतावे, तो कोई सुनने के लिए तैयार नहीं।" परंतु आख़िरीन धूम-धड़ाके से प्रत्यक्ष होने वाले ज्ञान सागर बाप के ज्ञान दर्पण में जब उन देवियों के वेष में जन्म-जन्मांतर की छिपी साक्षात् दैत्यओं का प्रत्यक्ष रूप उनके भयंकर चेहरों के साथ प्रत्यक्ष होता है, तो उनका सारा पद-मान-मर्तबा उन देवी-पूजा करने वाले भक्तजनों द्वारा ज्ञान सागर के ज्ञानजल में डुबो दिया जाता है। यहाँ तक कि यदि वे गुड्डियाँ साधारण प्रयत्न से नहीं डूबतीं तो बुद्धि रूपी पाँव से ज़बरियन दबाकर डुबो दिया जाता है।

(18) पतित-पावनी जय मेरी गंगा मैया (का दैहिक स्नान) :- (संगमयुगी) भगत लोग (चैतन्य ज्ञान-) सागर की (गुप्त होने वाली) अनुपस्थिति में (चैतन्य ज्ञान-) नदियों (गंगा-यमुना आदि) को ही पतित-पावनी समझ बैठते हैं। बाबा ने ता.22.2.76 पृ.3 के शुरू में कन्याओं-माताओं को (ज्ञान-)नदी कहा है। जब कभी किसी नगर (अर्थात् उस सेंटर) के नज़दीक से कोई नामी-ग्रामी (चैतन्य ज्ञान-) नदी गुज़रती है, तो कलियुगी (शूटिग करने वाले भक्तजन (ज्ञान-) सागर (बाप की मुरलियों) के शुद्ध बरसाती (ज्ञान-) जल को भी छोड़ जाते हैं, और जाति-जाति के तमोप्रधान मनुष्यों (की दृष्टि-वृत्ति और कृति) का कचड़ा (अपने अंदर ही बहाने) वाली उन नदीयों को (ही) पतित-पावनी समझकर गऊ-मुख- (हरिद्वार-प्रयाग आदि) का स्नान करने के लिए सच्चे-2 शिवालय (अर्थात् सेवाकेन्द्रों) को भी श्मशान-घाट बना देते हैं।

बाबा ने ता. 11.6.74 की मुरली में साफ़ कहा है •"उन (चेतन ज्ञान-जल की) नदियों में तो गंदे नालों (रूपी भ्रष्टाचारी मनुष्यों की गलीज दृष्टि-वृत्ति) का गंदा कचड़ा पड़ता रहता है। स्वच्छ होकर (आबू जैसे) पहाड़ों से आती हैं। फिर (मेले-मलाखड़ों से) मलेच्छ होकर (चेतन ज्ञान-) सागर में जाती हैं।"

(19) कुम्भ के मेलों में मैला :- महाकामी और क्रोधी होने के कारण जिनकी कामेन्द्रिय (से की गई गंदी हरकतों) का आवरण प्रायः करके सब (ब्रह्मा-वत्सों) के सामने खुला रहता है ऐसे धक्कड़ी अर्थात् (यज्ञ में) धाक जमाने वाले बेपरवाह नागाओं द्वारा कुम्भ के मेलों की शुरूआत तमोप्रधान कलियुग (की शूटिग सन् 73 के अंत) में (रूहानी) गवर्मेंट के लाखों रुपये के खर्चे से कराई जाती है। इसीलिए ता.7.1.77 पृ.1 की मुरली में बाबा ने कहा भी है •"जो कुम्भकरण की अज्ञान नींद में बहुत जास्ती सोए हुए हैं, वही कुम्भ का मेला मनाते रहते हैं। यह नागे साधु लोग कुम्भ का मेला लगवाते हैं.....उन्हों की फिर मीटिगे होती है।"

भक्तिमार्गीय रावणराज्य में ही (चैतन्य ज्ञान-जल की) नदियों के किनारे प्रायः नामी-ग्रामी शहरों में घड़ी-2 मेले-मलाखड़े लगते रहते हैं। स्वर्गीय रामराज्य की शूटिग काल मम्मा-बाबा के जमाने में ऐसा नहीं होता था। वहाँ तो नदियों की बजाय चैतन्य ज्ञान-सागर के किनारे-मधुबन 'स्वर्ग आश्रम' में आत्मा-परमात्मा का सच्चा मिलन-मेला होता था जिससे आत्मा (के विकारों) की कट उतरती थी। जबकि मेलों में आने वाले ढेर-के-ढेर तमोप्रधान मनुष्यों (की गंदी दृष्टि-वृत्ति) का कचड़ा ढोने वाली (चेतन ज्ञान-जल की) नदियों में स्नान करने से लोग और ही गंदे हो जाते हैं। इसलिए बाबा ने ता. 17.1.74 की मुरली में साफ़ कहा है •"यह (M.आबू मधुबन में) है आत्माओं और परमात्मा का मेला। उन (नदियों के) मेलों में तो मैले हो पड़ते हैं।" जब सन् (73-) 74 में जोर-शोर से ब्राह्मणों द्वारा मेलों का आयोजन शुरू हो चूका था उसी समय 4 मई सन् 74 की मुरली में बाबा ने कहा है- •"अभी (अर्थात् कलियुगी शूटिग में) तो भक्ति की कितनी धूमधाम हो गई है। मेले-मलाखड़े भी लगते हैं, तो मनुष्य जाकर 'दिल बहला' आवे।"

(20) तीर्थ यात्राएँ :- शिवबाबा और उनके रूहानी पंडे अर्थात् सच्चे पांडव तो बुद्धिरूपी पाँव से बेहद की मधुरता और वैराग्य वृत्ति से भरपूर स्वीटहोम अर्थात् रूहानी मधुबन (परमधाम) की यात्रा करना सिखाते हैं; जबकि जिस्मानी अर्थात् देहाभिमानी पंडे-पुजारी जिस्मानी भरण-पोषण के लिए आबू तीर्थ की जिस्मानी यात्राएँ कराते हैं।

शिवाचार्योवाच भी है •"बाबा थोड़े ही तुमको कहेंगे कि जिस्मानी (M.आबू मधुबन की तीर्थ-) यात्रा पर चलो या जाओ।" ता.13.5.73 •"यह (संगमयुगी शूटिग के) गुरू आदि जो भी हैं जिस्मानी यात्रा पर ले जाने वाले हैं।" ता. 21.10.73 • "जिस्मानी पंडों (टीचर्स) को (मधुबन आदि) तीर्थ कितने याद पड़ते हैं, क्योंकि घड़ी-घड़ी जाते रहते हैं।" ता. 4.9.73 • "परमात्मा कोई (आबू) पहाड़ पर तो बैठा नहीं है।(मम्मा-बाबा के) जड़ चित्रों का दर्शन करने जाते हैं।" (ता. वही) • " जो (तीर्थों के) धक्के खाते हैं, वे मुझे नहीं जानते हैं। तुम (यज्ञ से देश निकाला पाए हुए P.B.K. पांडव) अभी धक्के खाने से छूट गए हो। उन (जिस्मानी गुरू-भक्तों) को पता नहीं है कि बाप (पढ़ाई) पढ़ाकर वर्सा दे रहे हैं।" (वर्सा पाने के लिए तीर्थों में गुरुओं के धक्के खाने की दरकार ही नहीं) ता.2.6.73

(21) (दृष्टि-वृत्ति का) व्यभिचार और भ्रष्टाचार :- सन् 66 से पहले निराकार राम बाप के राज्य में भरपूर शुद्ध और सहज ही (ब्रह्मा द्वारा ईश्वरीय दृष्टि की योगरूपी) खुराक मिलती थी; जबकि इस माया रूपी रावण के राज्य में हठपूर्वक कठोर पुरुषार्थ करने पर भी लोगों को सड़ी-गली कचड़े वाली बुद्धिरूपी खुराक भी पेट भर नहीं मिल पाती; क्योंकि प्रजा के आधारमूर्त बन बैठे फूड मिनिस्टर्स रूपी योगमास्टर्स ही दृष्टिगत भ्रष्टाचार फैलाने के निमित्त बन पड़ते हैं।

ध्यान रहे कि शिवबाबा ने कभी किसी मुरली में यह नहीं कहा कि 16-20-25 वर्ष की नौजवान कन्याओं/माताओं के द्वारा, सामने बैठे जाति-जाति के पुरुषों(दुर्योधन-दुशासनों) को इन जिस्मानी आँखों से घंटों दृष्टि का दान देना ही सहज राजयोग है। शिवबाबा ने तो मुरलियों में बार-2 इस बात का विरोध ही किया है; कोई माने या न माने यह दूसरी बात है। क्योंकि बाबा ने कहा है •"इन गुह्य बातों को जो इस (हट्टी आदि सनातनी) कुल

के होंगे, वे मानेंगे और जो ईश्वरीय कुल के न होंगे, वे विघ्न डालेंगे.....लड़ेंगे। कहेंगे यह तो (मम्मा-बाबा से दृष्टि देने की) रसम चली आ रही है।"

पुराने सीढ़ी के चित्र में "हाय बचाओ शिवबाबा" के नाम की गुहार लगाने वाली द्रौपदी रूपी (सच्ची) ब्रह्माकुमारी का लज्जा रूपी आवरण खींचते हुए कोई सफ़ेदपोश भेषभूषा वाला दुःशासन रूपी परम प्रसिद्ध झूठा ब्रह्माकुमार दिखाया गया है जिसने शरीर रूपी वस्त्र को गंदा करके उस द्रौपदी को पतित अवस्था में डाल रखा है। उस दुःशासन के बुद्धि रूपी हाथ में नैन कटारी दिखाई गई है जिसका तात्पर्य है कि दृष्टि-वृत्ति को विकारी बनाने के लिए प्रायः करके वे कीचक स्वरूप पुरुष ही ज़िम्मेवार हैं जो ईश्वरीय सेवा के बहाने से (श्रीमत के बरखिलाफ़) अपना घर-बार छोड़कर मंदिरों रूपी आश्रमों के एकांत वातावरण में हर समय द्रौपदी रूपी ब्रह्माकुमारियों का संग करने के लिए पीछे पड़ जाते हैं। वरना क्या अपने घर-गृहस्थ में रहकर ईश्वरीय सेवा में सम्पूर्ण समर्पण नहीं हुआ जा सकता? ख़ास ऐसे पुरुषों ने ही ब्रह्माकुमारी आश्रमों में सहज राजयोग के नाम पर शिवबाबा की श्रीमत के बरख़िलाफ़ नैनकटारी चलाने का व्यभिचारी धन्धा चलाया हुआ है, क्योंकि शिवबाबा ने कहा है कि • सब पुरुष दुःशासन हैं। कन्याएँ-माताएँ प्रायः करके द्रौपदियाँ हैं। काम-विकार के लिए पुरुष ही पहल करता है। स्त्रियों में लज्जा और भावना रहती है।

यहाँ सीढ़ी के चित्र में चित्रित दुःशासन ने अपने बुद्धि रूपी पाँव से द्रौपदी के बुद्धि रूपी पाँव को दबोच रखा है जिसका तात्पर्य है कि विकारी बुद्धि पुरुष वर्ग ही भोली-भाली कन्याओं–माताओं की सहज बुद्धि पर हावी होकर मनमानी एक्टीविटी करने पर उतारू हो जाता है। कितना विचित्र ड्रामा है। कन्याओं–माताओं की रक्षा के लिए रखे जाने वाले रक्षक (Guard) ही तमो-प्रधान कलियुगी शूटिग में भक्षक बन जाते हैं। शायद इसीलिए अ.बापदादा ने सावधानी भी दी थी कि •"पाण्डवों को शक्तियों का गार्ड (रक्षक) बनकर रहना है। गाइड नहीं बनना है। गाइड एक शिवबाबा है। पांडवों के गाइड बनने से यज्ञ में गड़बड़ पड़ेगी।" (अ.वा.2.4.70 पृ.235)

(22) नेति-नेति की शूटिग :- शिवाचार्योवाच है कि ईश्वरीय ज्ञान के मूँझे हुए गहन प्रश्न किए जाने पर सन् 51 से 68 तक 18 वर्ष नित्यप्रति 18 अध्यायी सच्ची गीता-मुरलियाँ सुनने वाले 40 वर्ष) प्राचीन ऋषि-मुनि जो शास्त्रों (रूपी मुरलियों) की अथॉरिटी होते हैं, वह रचयिता और रचना के आदि-मध्य और अंत को नहीं जानते।

• "कहते हैं नेति-नेति, तो नास्तिक ठहरे न।" बाबा ने अभी राज़ नहीं खोला है- ऐसा कहकर बाप का नाम ही बदनाम कर देते हैं जबकि अ.बापदादा ने साफ़ कहा है कि बाप ने अपने पास कुछ भी नहीं रखा है • "भक्त लोगों को कोई काम मुश्किल अनुभव होता है तो भगवान के ऊपर रख देते हैं सहज में स्वयं, मुश्किल में भगवान। अब तो बाप ने सर्वशक्तियों का, सर्व कर्तव्यों का निमित्त बना दिया है- जो बाप की जिम्मेदारी, वह अब बच्चों की हैं।" (अ.वा.ता.24.4.74 पृ.30)

(23) पितर-प्रवेश :- मम्मा-बाबा या अ. बाप-दादा ही (अभी) हमारे इस बेहद ब्राह्मण परिवार के पितर हैं। इन पितरों की आत्मा का हम ब्राह्मणों में प्रवेशता का पार्ट, पतन की ओर जाने वाले भक्तिमार्गीय रावण राज्य की शूटिग में क्रमश: कम होते होते घोर कलियुग अंत की शूटिग (-काल 2017) में ब्राह्मणों के महाव्यभिचारी बन

जाने के कारण बिल्कुल बंद हो जाता है। बाबा ने ता. 17.4.70 की मु. में कहा है •"(आबू आदि) तीर्थों में पहुँचकर आत्माओं को बुलाकर बहुत पूछते थे, परंतु अब तो आत्माओं के तमोप्रधान होने से (मम्मा-बाबा जैसी) आत्माओं की प्रवेशता नहीं होती।"

सर्वविदित है कि सन् 66 से 72-73 तक द्वापरयुगी शूटिग में किसी में मम्मा और किसी में बाबा की 'पधरामनी' के समाचार मिलते ही रहते थे। बाद में यह पार्ट बंद हो गया। ऐसे ही अ.बापदादा की 'पधरामनी' भी पहले बहुत होती थी। बाद में धीरे-2 कम होते-2 अब पिछले 2 वर्षों से सिर्फ एक ही सीजन में उनका आना होता है। ता. 17.5.69 को अ.बापदादा ने कहा भी था •"अव्यक्त मिलन भी धीरे-धीरे अब समाप्त हो जावेगा।"

(24) दूध की जगह खून की नदियाँ ;- जहाँ (निराकार) राम-राज्य में मुफ़्त (ज्ञान) दुग्ध की शुद्ध नदियाँ बहती थीं, वही माया रूपी रावणराज्य में भारी कीमत चुकाने पर भी (रूहानी) बच्चों के लिए शुद्ध दूध (रूपी मुरलियों) में कटौती होने के कारण (बुद्धि रूपी पेट का) समुचित आहार न मिलने से (व्यर्थ संकल्पों के) खून की नदियाँ बहा करती हैं।

(25) पुराने शास्त्र-चित्र-भंडार-नाश :- कलियुग की शूटिग में मुसलमानों, इसाइयों और अंधश्रद्धालु भक्तों द्वारा प्राचीनतम शास्त्र-चित्र-मूर्तियों आदि के भंडार या तो समूल नष्ट कर दिए जाते हैं, या फिर मनमाने ढंग से काट-छांट दिए जाते हैं। यहाँ तक कि घोर कलियुगी शूटिग काल में गुह्य ज्ञान के राज़ खुलने पर प्राचीन शास्त्र अर्थात् मुरलियाँ चित्रादि अति दुर्लभ हो जाते हैं।

(26) स्वर्ण-नियंत्रण और चोर बाजारी :- इसी माया रूपी रावणराज्य में शिवाचार्योवाच है कि खुले आम-सच्चे सोने के (एडवांस ज्ञान) गहने पहनने पर रूहानी गवर्मेंट प्रतिबंध लगा देती है। पहनने वालों की गुप्त जाँच-पड़ताल और धर-पकड़ होने से फिर बड़े-2 महारथियों द्वारा अंदर ही अंदर चोर बाजारी और तस्करी चलती रहती है। (ता.8.10.74)

(27) भाषाभेद और मतभेद :- कलह+युग की शूटिग में भाषाभेद और आपसी मतभेद यहाँ तक बढ़ जाते हैं कि खुले आम कलहयुगी कलह-क्लेश, मुक़दमेबाज़ी और तानाशाही शासन की चर्मसीमा आ जाती है। परिणामस्वरूप छोटे-2 रजवाड़ों अर्थात् सेवाकेंद्रों का स्वतंत्र अस्तित्व कायम हो जाता है। यहाँ तक कि कलियुग अंत में प्रजा का प्रजा पर प्रजातंत्र शासन हो जाता है।

(28) धर्म-सत्ताधीशों और राज्य-सत्ताधीशों की (अलग-2) सभाएँ :- चित्र में एक ओर अंदर-बाहर से रंगे हुए धर्म गुरुओं को तथा दूसरी ओर सफ़ेदपोश बगुला पुरुषार्थियों के रूप में यज्ञ की राज्य सत्ता सम्भालने वाले काँग्रेसियों को जुदा-2 मीटिग करते हुए दिखाया गया है। अपने को ज्ञान की अथॉरिटी समझने वाले धर्मगुरू लोग तो मोटे-2 धर्मग्रंथ-शास्त्र-चित्र आदि छपाने और उनका प्रचार-प्रसार आदि करने के दुनियावी साधनों का संग्रह करने के लिए धर्म-सम्मेलनों सभा सोसाइटी आदि का निर्माण करने में जुटे हुए हैं, जबकि अपने को सदाकालीन राजाई की अथॉरिटी समझने वाले (यज्ञ के) सफ़ेदपोश राज्य सत्ताधारी अपनी हिलती हुई गद्दियों को जमाए रखने के लिए बार-2 प्रमुखों की मीटिग्स चुलाकर बालू के ढेर पर खड़े हुए अपने संगठन रूपी किले को मजबूत बनाने के

सतत असफल प्रयास में लगे हुए हैं। तभी तो ता.6.9.79 को गुलज़ार संदेशी द्वारा मधुबन में लाए गए मासिक संदेश में बाबा ने कहा है कि अब शीघ्र ही दोनों सत्ता वाले अपनी गद्दियाँ छोड़ 'हैंड्स अप' करेंगे क्योंकि सारे के सारे ही अयोग्य हैं। **(29) भिखारी भारत** :- (संगमी ब्राह्मणों की) धर्म और राज्य सत्ता दोनों से ही अलग, देश निकाला पाए हुए तथा सच्चाई-सफ़ाई पूर्वक ईश्वरीय आदेश पर तन-मन-धन और सर्व सम्बंधों की (रुद्रज्ञान-) यज्ञ में बाज़ी लगाने वाले पांडव बनाम राम-सम्प्रदाय के प्रतीक और (खास) प्रतिनिधि के रूप में दिखाया गया हट्टी आदि सनातनी भारत (अर्थात् रामबाप को) काँटों की शैया रूपी (संसार-) जंगल में दीन-हीन दशा में बेहद के विदेशियों (रूद्रगणों) की भीख पर गुजारा करते हुए दिखाया गया है। बाबा ने ता.21.9.74 की मु. में कहा भी था-"इस कलियुगी शूटिग के समय कृष्ण (उर्फ़ ब्रह्मा) कहाँ होगा? ज़रूर बैगर (इसी बैगर में प्रविष्ट) होगा। जैसे क्राइस्ट के लिए सभी समझते हैं कि बैगर रूप में है।"

(30) भारतीयों और विदेशियों की जनसंख्या में युगानुरूप वृद्धि :- कराची स्थित यज्ञ के सतोप्रधान सतयुगी शूटिगकाल में जनसंख्या (पहले तो) अत्यंत सीमित (यानी 9 लाख ही) रही। इसके बाद माउंट आबू आने से लेकर मम्मा-बाबा के जीवित रहने अर्थात् सन् 51 से 68 तक के त्रेतायुगी सतोसामान्य अवस्था की शूटिग में भी यज्ञवत्सों और ब्राह्मण परिवारों की संख्या सीमित ही रही; किंतु बाद में कलियुगी महाव्यभिचारी रावण-राज्य के आरम्भ होते ही प्रदर्शनी सम्मेलन आदि उत्सवों की भरमार होने से कच्चे-पक्के यज्ञवत्सों की देश में ही नहीं, विदेशों में भी बाढ़ आने लगी। इसी तरह कलियुगी शूटिग काल में ही मेले-मलाखड़ों से व्यभिचारी वृत्ति बढ़ने के कारण जनसंख्या-विस्फोट हो पड़ा; जिसे कण्ट्रोल करने के लिए (एडवांस) अंडर ग्राउंड रूहानी मिलिट्री के गुप्त नौजवानों को (सन् 1976 से ही AIVV द्वारा) फैमिली प्लानिग करनी पड़ रही है।

(31) रामराज्य की राजधानी-स्थापना :- ऊपर बताए गए 'फुल बैगर टू फुल प्रिंस' बनने वाले भिखारी भारत अर्थात् रामबाप के संगमयुगी शरीर शंकर द्वारा परमपिता परमात्मा शिव अपने दिलतख़्त रूपी दिल्ली शहर में रामराज्य की राजधानी-स्थापना का अलौकिक कर्तव्य हम बच्चों के बुद्धि रूपी क्षेत्र में कल्प (5000 = 40 वर्ष) पूर्व में हुई सिंध हैदराबाद और कराची की सतयुगी शूटिग की तरह अब सन् 76-77 से फिर सम्पन्न करा रहे हैं। चूँकि यह कार्य रामबाप के संगमयुगी शरीर द्वारा निराकार शिवबाप ही सम्पन्न कराते हैं; अतः शिवाचार्योवाच है - "सतयुग को रामपुरी कहा जाता है। अक्षर कहते हैं परंतु यह नहीं जानते कि राम कौन है?" (ता.6.3.75)- "जिस नाम से (रामराज्य की) स्थापना होती है तो ज़रूर उनका नाम ही रखेंगे ना।" (ता.25.5.74)

(32) सोने की लंका में रावणराज्य का महाविनाश सन् 76 से :- देखिए सीढ़ी के तल्ले में शिवाचार्योवाच है- "रावण राज्य तो ज़रूर ख़लास होना चाहिए। यज्ञ में भी प्योर ब्राह्मण चाहिए ना।" (ता.11.1.75) - "विनाश-ज्वाला इस रुद्र ज्ञान यज्ञ से प्रज्वलित हुई।" (ता. 20.10.73) स्पष्ट है कि सन् 76 से ही ज्ञानयज्ञ-कुण्ड से विनाश-ज्वाला निकलेगी तो यज्ञ कुण्ड के किनारे बैठने वाले कच्चे ब्राह्मणों को ही पहले सेंक लगेगा। दुनिया वालों को विनाश-ज्वाला बाद में लगेगी। "चैरिटी बिगन्स एट होम" के नियमानुसार कचड़े का सफ़ाया भी पहले ब्राह्मण परिवार से आरम्भ होना चाहिए। सारी दुनिया का विनाश तो 100 वर्षीय संगम पूरा होने पर सन् 2037 से

होगा।

भारत सरकार से सन् 66-67 में की गई 10 वर्षीय घोषणा के अनुसार हम ब्राह्मणों की वर्तमान संगमयुगी दुनिया का महाविनाश सन् 76 से आरम्भ हो रहा है। दूसरी ओर 108 प्रथम श्रेणी के विजयी बच्चों सहित ब्रह्मा की 1000 भुजाओं रूपी मददगार बच्चों के बुद्धि रूपी क्षेत्र में सच्चखंड रूपी सत्यज्ञान की संगठित और गुप्त राजधानी की स्थापना भी अब शीघ्र (2027-28 से) सम्पन्न होने जा रही है। अतः सब ब्रह्माकुमार-कुमारियों को दिल्ली राजधानी के दिल तख़्त पर अपना गुप्त राजभाग लेने के लिए ईश्वरीय निमंत्रण स्वीकार हो।

ओमक्रान्तिः।। ओमशान्तिः।।

शंकर समान ज्वालामूर्त संगठन का सार बनाने लिए

राजधानी राजयोग शिविर

(केवल आध्यात्मिक ब्र.कु. जिज्ञासुओं के लिए)

इसी स्तम्भ के अंत में दिए अव्यक्त बाप-दादा के महावाक्यों के आधार पर दिल्ली की एडवांस पार्टी की बाँधेली माताओं के द्वारा दिसम्बर सन् 81 की 27 से 30 ता. को त्रिनगर, दिल्ली-35 में राजधानी राज+योग शिविर के प्रथम अधिवेशन का सफल आयोजन किया गया। इस आयोजन का लक्ष्य था- बीजरूप रुद्रमाला के विशेष प्रिय ज्ञानी आत्माओं को संगठित करने हेतु नम्बरवार मणकों की गुप्त राजधानी प्रख्यात करने के लिए निर्बंधन और निर्भीक ब्राह्मणों का निर्विघ्न और अविनाशी संगठन का सार बनाना।

ड्रामा प्लेन अनुसार सन् 79/80 से सम्पूर्ण भारत के कोने-2 से चुने जा रहे रूहानी पार्लियामेंट के सदस्यों में से आमतौर पर सिर्फ़ उत्तर भारत के 50-55(प्रत्याशी) भाई-बहनों को इस पहले अधिवेशन में उपस्थित होने के लिए दिसम्बर सन् 81 के तीसरे सप्ताह में अचानक ही आमंत्रित किया गया। उनमें से शिविर में ऐसे मौके पर नं.वार उपस्थित होने वाले यज्ञ प्रति ज़िम्मेवार कुल बंधनमुक्त सदस्यों की संख्या निमंत्रण देने वाली दिल्ली की माताओं को छोड़कर 12 थीं। जिनमें 8 यू.पी. से और शेष 4 दिल्ली के स्थानीय सदस्य थे। इन सभी उपस्थित 12 सदस्यों ने अधिवेशन के अंत में ध्वनि सम्मति से एकमत होकर अपने-2 हस्ताक्षर आपस में एक-दूसरे को देते हुए नीचे लिखे 12 प्रस्ताव पास किए, जो इस प्रकार हैं :-

प्रस्ताव नं.1 - ब्रह्मा मुख से माउंट आबू में उच्चारी गई बाप-दादा की प्रमाणिक मुरलियों एवं अव्यक्त वाणियों को ही श्रीमत् कहा जाएगा। अन्य किसी देहधारी द्वारा उच्चारे वाक्यों को श्रीमत नहीं कहा जा सकता **"श्रीमत से सद्गति, मनुष्यमत से दुर्गति।"(मु.ता.** 22.4.72)

प्रस्ताव नं.2 - ब्रह्मा (बड़ी माँ) और प्रजापिता- यह दोनों अलग-2 आत्माएँ हैं।

प्रस्ताव नं.3 - सतयुगी (16 कला) राधा-कृष्ण की आत्माएँ संगमयुग में ब्रह्मा-सरस्वती का और त्रेतायुगी राम-सीता की आत्माएँ संगमयुग में शंकर-पार्वती का प्रैक्टिकल पार्ट बजाती हैं।

प्रस्ताव नं.4 – बाप-दादा द्वारा मुरलियों में की गई पूर्व घोषणा के अनुसार त्रिमूर्ति शिव की दूसरी मूर्ति-शंकर द्वारा ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया का स्पष्ट विनाश अर्थात् विघटन सन् 76 से ही हो रहा है।

प्रस्ताव नं.5 - मम्मा-बाबा के शरीर छोड़ने के बाद (बेसिक) ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में ब्रह्मा और ब्राह्मणों की अज्ञान अंधकार रूपी रात्रि अर्थात् उतरती कला चल रही है।

प्रस्ताव नं.6 - शंकर-पार्वती (ही) संगमयुग के इसी ईश्वरीय जन्म में इसी पुरुषार्थी शरीरों द्वारा नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनते हैं और सतयुग में उनके बच्चे ही राधा-कृष्ण बनेंगे-अर्थात् राम-सीता की आत्माएँ सतयुगी फर्स्ट जन्म में माँ-बाप के रूप में राधा-कृष्ण के फर्स्ट क्लास दास-दासी का पार्ट बजाती हैं।

प्रस्ताव नं.7 - सतयुगी फर्स्ट जन्म के राधा-कृष्ण जैसे सभी (सतत्रेतायुगी) बच्चों के माँ-बाप की कंचन काया इन्हीं युगों के 21 नं. वार जन्मों में गर्भजात शरीरों द्वारा होगी।

प्रस्ताव नं.8 - संगमयुगी राधा-कृष्ण और सतयुगी राधा-कृष्ण का पार्ट अलग-2 है। सन् 76से शंकर-पार्वती ही संगमयुगी राधा-कृष्ण हैं।

प्रस्ताव नं.9 - अंतिम 7 सतयुगी ल.ना. ही विधर्मी (अविनाशी बीजरूप) धर्मपिताओं के (सिद्धार्थ-जीसिस जैसे) आधारमूर्त बनते हैं।

प्रस्ताव नं.10 – सतयुग के कम कलाओं वाले अधूरे ल.ना. (या उनकी प्रजा) का पार्ट बजाने वाले 10 वाममार्गीय आधारमूर्त ब्रह्मावत्स ही संगमयुग में रावण के 10 शीश रावण का साक्षात् पार्ट बजाते हैं।

प्रस्ताव नं.11 - मम्मा-बाबा के शरीर छोड़ने के बाद हम ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में गद्दीनशीन देहधारी गुरुओं द्वारा भक्तिमार्गीय रावणराज्य की शूटिग चल रही है।

प्रस्ताव नं.12 - जिस्मानी आँखों से दृष्टि लेने-देने का धंधा संगमयुगी देहधारी गुरुओं की अपनी मनमत है-शिवबाबा की श्रीमत नहीं। बाबा ने भी तारीख 15.4.74 की मु. में साफ़ कहा है, "बाबा कहते हैं, मैं एक-2 आत्मा को बैठ सकाश देता हूँ। सामने बैठ सर्चलाइट देता हूँ। तुम तो ऐसा नहीं करोगे।"

प्रस्तुत प्रोग्राम सम्बन्धी अव्यक्त बाप-दादा के महावाक्य इस प्रकार हैं :-

(1) प्रोग्राम का लक्ष्य-

(i) एक भी (छोटा सा 8-9 का पावरफुल संगठन तैयार **होने से एक-दूसरे को खींचते हुए (नौ नाथों के 12-12 के ग्रुप मिलकर अंत में 9x12=) 108 की माला का संगठन एक हो जावेगा। (सिर्फ़) एक मत का धागा हो ।** (अ.वाणी सन् 75 **पृ.272)**

(ii) **एक-दो मिलकर 12 हो जावेंगे ऐसा हाई जम्प लगाओ, तब ही बाप समान बेहद के सेवाधारी बनेंगे।.....अलग-2 ग्रुप बनाओ। जैसे शुरू में पुरुषार्थियों के ग्रुप थे। हम शरीक (एक जैसे) पुरुषार्थियों के ग्रुप हों।** (अ.वा.ता.23.11.79 पृ.43)

(iii) पंजाब (में बीज बोने) वालों को 12 ही मास के 12 ही फल देने चाहिए। (7.1.80 अ.वा. पृ.183)

(iv) <u>तुमको</u> रुद्रमाला में पिरोना है। यह है ज्ञानी तू आत्माओं की माला। (ता.8.3.73)

(v) पहले (2027-28 में) रुद्र माला बनती है। (मु.ता.17.12.69)

(vi) नॉलेजफुल स्टेज अर्थात् सारी नॉलेज के हरेक प्वॉइंट के अनुभवी स्वरूप बनना। (अ.वाणी सन् 81 पृ.46)

(vii) "विस्तार तो अच्छा बना रही हो। अब संगठन का सार (8 की माला) बनाना है।.....अब ऐसा (संगठन का) किला मज़बूत करो। इतना किला पक्का हो जो माया उसे तोड़ने की हिम्मत ही न करे।" (28.11.79 पृ.62-63)

(viii) "ऐसा अविनाशी संगठन बनाओ जो कोई भी कम्प्लेण्ट न रहे। वृद्धि बहुत कर रहे हो, सिर्फ़ विघ्न-विनाशक बनो और बनाओ।" (अ.वाणी 3.12.79 पृ.80-81)

(ix) "अब विस्तार ज़्यादा हो रहा है इसलिए वारिस छिप गए हैं। अब उनको प्रत्यक्ष करो। समझा-(जिसके अज्ञान की रात गुज़र गई हो ऐसे) गुजरात को क्या करना है। दूसरे सम्पर्क में लावें, आप सम्बंध में लाओ तो नम्बरवन हो जाएँगे। इस वर्ष का प्लैन भी बता दिया। अभी विस्तार में बिज़ी हो गए हैं। जैसे वैराइटी (ब्राह्मणों का) वृक्ष बढ़ता है तो (सृष्टि का सार) बीज छिप (अंडर ग्राउंड हो) जाता है और फिर अंत (2027-28) में बीज ही निकलता है। विस्तार में ज़्यादा बिज़ी हो गए हो। अब फिर से (राजधानी के संगठित) बीज अर्थात् (8) वारिस क्वालिटी निकालो। जो आदि(ॐ मण्डली) में माला बनाते थे सो अंत में करो।" (अ.वा.21.1.80 पृ.230-31)

(x) "शुरू में भी स्थापना के समय अख़बार में क्या डलवाया था? लोगों ने कहा, 'ओम (अ+उ+म=ब्र.वि.शंकर) मण्डली' गई कि गई और बाप ने डलवाया- ओम मंडली सारे वर्ल्ड में (दि) रिचेस्ट है, मालामाल है, क्योंकि (डायरैक्ट अमरनाथ शिवशंकर से) 'अमर भव' का वरदान मिला हुआ है।" (30.1.79 पृ.252)

(xii) "यह 80 का वर्ष विशेष हर (ज्ञानी तू) आत्मा को यथा योग्य वर्सा देने का वर्ष है।.....इस वर्ष में.....तन-मन-धन आदि जो भी है, सब लगाकर फाइनल सर्व आत्माओं में से सिलेक्ट करो.....जो जिसके योग्य है उसको वैसा ही संदेश दे फाइनल करो। अभी सेवा की फाइल फाइनल करो.....सिलेक्शन की मशीनरी तेज़ करो। देखेंगे, कितने (साल) में फाइल तैयार करते हो? पहले विदेश फाइल तैयार करता है या देश? जिसको जिस धर्म में जाना है- स्टैम्प लगा दो। (अ.वाणी 18.1.80 पृ.219 से 21)

(xii) "ब्रह्मा+बाप के तीव्र पुरुषार्थ को तो जानती हो, आज भी बाबा बोले- अब माला तैयार करो। माला तैयार होना अर्थात् खेल ख़तम।.....100 की माला फिर भी 90 परसेंट बन गई; लेकिन 8 की माला में बदली बहुत थी.....मतलब तो आज ब्रह्मा+बाप को माला बनाने का तीव्र संकल्प था। (अ.वा. 18.1.79 पृ.230-31)

(2) संगठन का जैसा लक्ष्य वैसा लक्षण:-

(i) "निर्बन्धन & एवररेडी, नॉलेजफुल बंधन में कैसे रह सकते? जैसे दिन और रात इकट्ठा नहीं रह सकते।.....जब सच्चे ब्रह्माकुमार-कुमारी बन गए तो बंधन कैसे हो सकता? ब्रह्मा+बाप निर्बंधन है तो बच्चे बंधन में कैसे रह सकते हैं?" (अ.वा.13.3.81 पृ.75)

(ii) "निमित्त मात्र डायरैक्शन प्रमाण प्रवृत्ति में रह रहे हो, सम्भाल रहे हो; लेकिन अभी-2 ऑर्डर हो कि चले आओ तो चले आएँगे या बंधन आएगा? सभी स्वतंत्र हो? बिगुल बजे और भाग आएँ, ऐसे नष्टोमोहा हो? ज़रा भी 5 परसेंट भी अगर मोह की रग होगी तो 5 मिनट देरी लगाएँगे और (नं.) ख़त्म हो जावेगा; क्योंकि सोचेंगे कि निकलें या न निकलें। तो सोच में ही समय निकल जाएगा। इसलिए सदा अपने को चैक करो कि किसी भी प्रकार

का देह का, सम्बंध का, वैभवों का बंधन तो नहीं है? जहाँ बंधन होगा वहाँ आकर्षण (खींचातान) होगी। इसलिए बिल्कुल स्वतंत्र। उसको ही कहा जाता है- बाप समान कर्मातीत स्थिति।" (अ.वा.10.12.79 पृ.104)

(iii) "निर्बंधन आत्मा ही ऊँची स्थिति का अनुभव कर सकेगी। बंधन वाला तो नीचे ही बंधा रहेगा, निर्बंधन ऊपर उड़ेगा। सभी ने अपना पिजड़ा तोड़ दिया है? बंधन ही पिजड़ा है।.....कोई भी मेरापन है तो पिजड़े में बंद हो। अभी पिजड़े की मैना नहीं, स्वर्ग की मैना हो गई।.....जब बाप के बच्चे बने तो बच्चा अर्थात् स्वतंत्र। (अ.वा.5.12.78 पृ.106)

(iv) "जो हर कल्प की अति समीप आत्माएँ हैं ऐसी आत्माएँ सेकंड में पहुँची और बाप की बनीं।.....अभी भी परिवर्तन की मार्जिन है। अभी टू लेट का बोर्ड नहीं लगा है।.....लास्ट चांस है। इसलिए बीती सो बीती करो, भविष्य को श्रेष्ठ बनाओ। इसलिए बापदादा सबको चांस दे रहे हैं, फिर उलहना नहीं देना- हम कर सकते थे; लेकिन किया नहीं, समय नहीं मिला, सरकमस्टांसिज नहीं थे। अभी भी रहमदिल बाप के रहम का हाथ सभी के ऊपर है इसलिए अपने ऊपर भी रहमदिल बनो। (अ.वा.21.12.78 पृ.143 से 145)

(v) निर्भीकता- "शेर की विशेषता है अकेले होते हुए भी अपने को बादशाह समझते हैं अर्थात् निर्भय होते हैं। तो पंजाब के (बीजरूप) निवासी ऐसे निर्भय हैं ना।.....पंजाब ने (राजधानी की) स्थापना के आदि में अपना विशेष शक्ति रूप का दृश्य अच्छा दिखाया। अनेक प्रकार की हलचल में भी अचल रहे हैं; क्योंकि पंजाब की धरनी (माता) विशेष धर्म की धरनी है, ऐसे धर्म की धरनी में आदि सनातन धर्म की स्थापना करना इसमें सामना करके विजयी बने हैं।.....बड़े (संगठित) आवाज़ से ललकार करो, छोटे आवाज़ से करते हो तो छोटा आवाज़ वहाँ के (संगमयुगी) गुरुद्वारों के आवाज़ में छिप जाता है। (अ.वा.19.12.78 पृ.136-137)

(vi) अनेकों में फँसना यह आयरन एज है। अथॉरिटी और सत्यता से बोलो (एक ओंकार), संकोच से नहीं। सत्यता प्रत्यक्षता का आधार है। (बाप की) प्रत्यक्षता करने से पहले स्वयं निर्भय बनो। एक बल, एक भरोसे पर अचल और अटल रहने वाले- यह अनुभव अनेकों को निश्चयबुद्धि बनाने वाला होता है। (अ.वा.23.1.79 पृ.239- 40)

(3) लक्ष्यपूर्ति का तरीका -

(i) "अपने (8) महावीरों का ऐसा विशेष ग्रुप बनाओ जो दृढ़ संकल्प द्वारा जाननहार और करनहार का साक्षात् स्वरूप बन करके दिखाएँ.....यू.पी. जोन विशेष भाग्यशाली रहा.....मेले भी हुए, सम्मेलन भी हुए। अभी कोई नई रूप-रेखा बनाओ।" (अ.वा. 5.12.78 पृ.103 से 5)

(ii) "छोटे-2 ग्रुप बनाकर चारों ओर पहले कुछ अपने सहयोगी बनाओ, फिर उसमें से एक चुना। ऐसे हर स्थान पर छोटे-2 ग्रुप बनें और फिर उन सबका एक स्थान पर संगठन हो।" (अ.वा.14.2.78 पृ.61- 62)

(iii) "देहली निवासियों को तैयार होना चाहिए....अभी से तीव्र तैयारियाँ करने लग जाना है.....देहली पर सबको चढ़ाई करनी है। देहली की धरनी (माताओं) को प्रणाम ज़रूर करना है। देहली का विशेष पार्ट (राजधानी की) स्थापना में है.....**देहली** की **तरफ़ सभी की नज़र है, बाप की भी नज़र है**.....देहली की महावीर पांडवसेना तो

बहुत है। पांडवों को मिलकर हर मास कोई सबूत देना चाहिए; क्योंकि देहली के सपूत मशहूर हैं। सपूत अर्थात् (सेवा का) सबूत देने वाले। देहली से सेवा की प्रेरणा मिलनी चाहिए। जैसे सेंट्रल गवर्मेंट है तो सेंटर द्वारा सर्व स्टेशन को डायरैक्शन मिलते हैं वैसे सेवा के प्लैन्स वा सेवा को नवीनता में लाने के लिए पार्लियामेंट होनी चाहिए। यही (रूहानी संगठन का किला रूपी) पांडव भवन, पांडव गवर्मेंट की पार्लियामेंट है। **तो पार्लियामेंट में सब तरफ़ के सर्व मेम्बर्स की राय से नए रूल तैयार होते हैं। देहली से हर मास विशेष** प्लान्स **आउट** होना **चाहिए तब समाप्ति समीप आवेगी**.....पहले तो प्लानिग पार्टी बनाओ जिसमें चारों ओर के महारथी और शक्तियों का भी सहयोग लो। सेवा के प्रति समय प्रति समय देहली में संगठन होना ही चाहिए।" (अ.वा.26.12.78 पृ.153 से 56)

(iv) सेवा में समय दो। जब तक तैयार नहीं होते हो तब तक राज्य आने में देरी है। सेवा का कोई नया प्लैन बनाया है?.....**ब्राह्मणों का संगठन होना ही, हाज़िर होना ही सेवा है। यह कोई कम बात नहीं है। समय पर हाज़िर होना, एवररेडी होना।**.....संगठित रूप में आवाज़ बुलंद होना- यह भी सेवा है।" (अ.वा.9.3.81 पृ.32)

(v) "हद की प्रवृत्ति में अपना ज़्यादा समय देते हो या बेहद में? बनना है बेहद का मालिक और समय देते हद में, तो क्या होगा? बेहद के मालिक बनने वाले बेहद की सेवा में ज़रूर लगेंगे। हद निमित्त मात्र, सारा अटेंशन बेहद की सेवा में। बेहद में जाकर सेवा करो, सर्विस में नया मोड़ लाओ।" (अ.वा.1.2.79 पृ.261)

(vi) "पर्सनल प्रोग्राम बनाते हो **तो आवाज़ बुलंद नहीं हो** सकती। **अब फिर जब ऐसी (संगठित) सेवा करेंगे तब महायज्ञ की समाप्ति समारोह करेंगे। अभी तो आरम्भ किया है।" (अ.वाणी** सन् **81 पृ.72)**

(vii) "(ईश्वरीय ज्ञान से) वंचित हुई आत्माओं को सम्पर्क और सम्बंध में कैसे लाएँ?.....(राम)बाप का कर्तव्य असम्भव को भी सम्भव करने का है,.....कितनी वंचित आत्माओं को बाप का परिचय दे तृप्त आत्मा बनाने वाली हो?" (अ.वा.3.2.79 पृ.162 से 166)

(viii) "हर ब्राह्मण बच्चों के घर में बाप (की टीचरशिप) का यादगार गीता-पाठशाला ज़रूर होनी चाहिए। जैसे घर-2 में राजा-रानी का फोटो लगाते हैं ना। तो ब्राह्मणों के घर में यह विशेष (बाप के प्रैक्टिकल कर्म की) यादगार हो। जो भी आए उसे (शिव+राम) बाप का परिचय देते रहे।" (अ.वा.14.11.79 पृ.22)

(ix) "शक्तियाँ हैं ही पांडवों के लिए ढाल। ढाल मज़बूत होगी तो वार नहीं होगा। इसलिए माताओं को आगे रखने में पांडवों को खुश होना चाहिए। अगर स्वयं आगे रहेंगे तो डण्डे खाने पड़ेंगे। शक्तियों को आगे रखेंगे तो पाण्डवों की भी महिमा है। (अ.वा.5.12.79 पृ.89)

(4) लक्ष्यपूर्ति में बाप-दादा एडवांस पार्टी के (व्यक्त तन द्वारा) प्रत्यक्ष मददगार हैं।

(i) "आजकल बापदादा फाइनल माला बनाने के पहले मणकों के सिलेक्शन का (नं.वार) सेक्शन बना रहे हैं। तब तो ज़ल्दी-2 पिरोते जाएँगे ना।" (अ.वा.28.1.80 पृ.251)

(ii) "यह भी तिलक का गायन है ना कि भक्तों को भगवान (संगमयुग में प्रैक्टिकल) तिलक लगाने आया। तो इस वर्ष आज्ञाकारी बच्चों को स्वयं बाप आपके सेवा स्थान (गीता-पाठशाला) पर सफ़लता का तिलक देने आएँगे।

बाप तो रोज़ (कहीं-न-कहीं) चक्कर लगाने आते ही हैं। अगर बच्चे सोये हुए हों, यह उनकी ग़फ़लत है।.....तो ज्योति जगाकर बैठो तब तो बाप आएँगे। कइयों को जगाते भी हैं फिर सो जाते हैं। आवाज़ भी अनुभव करते हैं फिर भी अलबेलेपन की नींद में सो जाते हैं।" (अ.वा.6.2.80 पृ.279)

(iii) "बापदादा भी छोटी-2 सभाएँ करते हैं ना। जैसे आप लोग कभी ज़ोन हैड्स की मीटिग करते हो।.....बापदादा भी वहाँ ग्रुप बुलाते हैं।.....पेपर्स को वैरीफाय तो फिर भी (नं.वार) बच्चों से कराएँगे.....भाई, भाई से वैरिफाय तो कराएगा ना।" (अ.वा.16.1.80 पृ.213)

(iv) "पांडव नाम से दिलशिकस्त आत्मा स्वयं को उत्साह दिलाती है कि 5 पांडवों के समान बाप का साथ लेने से विजयी बन जाएँगे। थोड़े हैं तो कोई हर्जा नहीं।.....**बाप के भाग्य को तो आत्माएँ वर्णन करती हैं; लेकिन आप (मणकों) के भाग्य को बाप वर्णन करते हैं। इससे बड़ा भाग्य न हुआ है, न होगा।"** (अ.वा.4.2.80 पृ.267 से 270)

(v) "भक्त, भगवान के आगे परिक्रमा लगाते हैं; लेकिन भगवान अब क्या करते हैं? भगवान बच्चों के (आगे) पीछे परिक्रमा लगाते हैं। आगे बच्चों को करते, पीछे खुद चलते हैं। सब कर्मों में चलो बच्चे, चलो बच्चे कहते रहते हैं। यह विशेषता है ना। बच्चों को मालिक बनाते, स्वयं (सनत्कुमार) बालक बन जाते, इसलिए रोज़ वालेकम सलाम करते हैं।.....जिस समय ऑर्डर करते हो और हाज़िर हो जाते हैं। (अ.वा.18.1.81 पृ.9 अंत, 10 आदि)

(vi) एडवांस पार्टी- "एडवांस पार्टी का कार्य भी कोई कम नहीं है। सुनाया ना वह जोर-शोर से अपने प्लान बना रहे हैं। वहाँ (ऊपर आकाश में?) भी नामीग्रामी हैं।" (25.1.80 पृ.246) • "एडवांस (पार्टी) का ग्रुप, उसमें भी जो विशेष (8) नामी-ग्रामी आत्माएँ हैं उनका संगठन बहुत मज़बूत है। (दिल्ली राजधानी में संगमयुगी कृष्ण का) श्रेष्ठ जन्म, फर्स्ट जन्म दिलाने के लिए (बुद्धि रूपी) धरती तैयार करने का वंडरफुल पार्ट इन आत्माओं द्वारा तीव्र गति से चल रहा है।" (अ.वा.18.1.80 पृ.222)

(5) सन् 81 से ही लक्ष्य पूर्ति का श्रीगणेश

(i) "संगठित रूप का, शांतिकुण्ड का महायज्ञ रचना है।.....इस वर्ष (रुद्रमाला की यादगार विकलांग वर्ष सन् 81 में) निर्बल आत्माओं को बाप के समीप लाओ। ..... इच्छा रूपी एक टांग प्रत्यक्ष रूप से दिखाई दे रही है; लेकिन उन्हें अपनी शक्ति से हिम्मत की दूसरी टांग दो। तब बाप के समीप चल करके आ सकेंगे।.....लंगड़ों को चलाना है।..... इसी वर्ष में.....संगठित रूप में प्रत्यक्षता का, एक बल, एक भरोसे का नारा लेकर सेवा की स्टेज पर आना है।" (अ.वा.20.1.81 पृ.13 से 16)

(ii) "सुनना और सुनाना भी बहुत हो गया। साकार रूप में सुनाया, अव्यक्त रूप में भी कितना सुनाया, एक वर्ष नहीं; लेकिन 13 वर्ष। अभी तेरहवें में तेरा होना चाहिए ना। तेरा हूँ।" (अ.वा.21.3.81 पृ.80) (तो जिस धर्मराज बाप का हूँ, वह आकर हिसाब भी तो लेगा ना; लेकिन) "अभी वह समय नहीं है। अभी तो चल जाता है, कोई हिसाब-किताब लेने वाला ही नहीं है; लेकिन थोड़े समय के बाद अपने-आप को ही पश्चाताप होगा।" (अ.वा.18.1.79 पृ.232) (क्योंकि) "अभी थोड़े समय के अंदर धर्मराज का प्रत्यक्ष रूप अनुभव करेंगे; क्योंकि

अब अंतिम समय है।" (अ.वा.16.12.76 अ.) (iii) "विशेष इस वर्ष (80/81) में रहे हुए गुप्त वारिसों को प्रत्यक्ष करो। अब तक जो किया है वह बहुत अच्छा किया , अभी और भी चारों ओर की आत्माएँ वन्स मोर करें। वाह-2 की ताली बजाएँ- ऐसा विशेष कार्य भी यू.पी. वाले करेंगे।" (अ.वा.12.12.79 पृ.110)

(iv) **"यह है विधि-विधाताओं की सभा.....विधि-विधाताओं की विशेष शक्ति है.....सत्यता अर्थात् रियलिटी.....सत्य बाप का सत्य परिचय मिलने से अथॉरिटी से कहते हो- परमआत्मा हमारा बाप है।** (रुद्रमाला के) वर्से के अधिकार की शक्ति से कहते हो- बाप हमारा और हम बाप के।.....आप पाँच पांडव अर्थात् कोटों में कोई थोड़ी-सी आत्माएँ चैलेंज करते हो.....नए-2 आए हैं ना ! ऐसे तो नहीं समझते हम थोड़े हैं; लेकिन ऑलमाइटी अथॉरिटी आपका साथी है। सत्यता की शक्ति वाले हो। 5 नहीं हो; लेकिन विश्व का रचयिता आपका साथी है। इसी फलक से बोलो।" (अ.वा.11.4.81 पृ.141 से 145)

(v) "सभी अपने को इस (संगमयुगी) विश्व के अंदर (सागर के 60 हज़ार पुत्र रूपी) सर्व आत्माओं में से चुनी हुई श्रेष्ठ आत्मा समझते हो? यह समझते हो कि स्वयं बाप ने हमें अपना बनाया है? बाप ने (सन् 78 पृ.2 के अनुसार) विश्व के अंदर से कितनी थोड़ी (16 हज़ार 108 विशेष वारिसदार) आत्माओं को चुना और उनमें से हम श्रेष्ठ (108) आत्माएँ हैं। यह संकल्प करते ही क्या अनुभव होगा? .....इसको कहा जाता है नवीनता। नया दिन, नई रात, नया परिवार... सब-कुछ नया। (अ.वा.9.3.81 पृ.34)

(vi) "देहली क्या करेगी? जमुना किनारे अभी राजयोग महल बनेंगे.....यू.पी. को धर्मयुद्ध का खेल दिखाना चाहिए। सुनाया ना, अभी तो सिर्फ़ (संगमयुगी) धर्म नेताएँ जो ऊँची आँखें करके सामना करते थे, अभी आँखें नीचे की हैं; लेकिन अभी सिर झुकाना है। अब आप लोगों की स्टेज पर आते हैं; लेकिन अपनी स्टेज पर (मधुबन में) आपको चीफ गेस्ट बना कर बुलावें, तब कहेंगे सिर झुकाया है। (अ.वा.24.12.79 पृ.146)

ओमक्रांतिः। ओमशांतिः।

ॐ शांति

Contact Us

Address

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

Mobile - 9891370007, 9311161007

Email - a11spiritual1@gmail.com

Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIV

@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv

Instagram - @adhyatmikvidyalaya

Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya

01.01.2025